आराधना फळ विभाग

जे मंत्र व्यक्ति नहि पण... गुण केन्द्रित छे
अेवा नमस्कार महामंत्रना जाप आराधनानुं फळ

मन-वचन-कायाना शुद्ध योग वडे करेल नमस्कार मंत्रना.....

एक अक्षरनो ऊच्चार... ७... सागरोपमना पाप खपावे.
एक पदनो ऊच्चार... ५०... सागरोपमना पाप खपावे.
एक पूर्ण मंत्रनो ऊच्चार... ५००... सागरोपमना पाप खपावे.
एक लाख मंत्रनो ऊच्चार... तीर्थंकर नामकर्म बंधावे.
नव लाख मंत्रनो ऊच्चार... नरकगति......... निवारे....

जेना हैये श्री नवकार
तेने शुं करशे संसार

अचिंत्य चिंतामणी, देवाधिदेव श्री अरिहंत प्रभुना दर्शन-पूजानुं फळ

मनमां सुंदर/उत्कृष्ट भावो साथे	उपवासनुं फळ
देरासरे जवानी ईच्छा करतां	१
देरासरे जवा उभा थतां	२
देरासर तरफ पग मांडतां	५
देरासरे अर्ध रस्ते पहोंचतां	१५
देरासरनां दूरथी दर्शन करतां	३०
देरासर पासे आवतां	६ मासनां
देरासरना गभारा पासे आवतां	१ वर्षनां
प्रभुजीने त्रण प्रदक्षिणा आपतां	१०० वर्षनां
प्रभुजीनी (अष्टप्रकारी) पूजा करतां	१००० वर्षनां
प्रभुजीने हाथथी... ..गुंथेली सुगंधी पुष्पनी माळा पहेरावतां.	१लाख वर्षनां

द्रव्य पूजा कर्या पछी भाव पूजा-चैत्यवंदन अवश्य करवुं.

भाव पूजा रुप चैत्यवंदन, स्तवन, गीतगान, नृत्यथी अनंतु फळ यावत्.....तीर्थंकर नाम कर्म बंधाय.

तपनुं फळ दर्शन

पच्चक्खाण करवाथी	वर्षनी नरकनी असाता (वेदना-दुःख) मटी जाय छे.
नवकारशीनुं	सो वर्ष
पोरिसिनुं	एक हजार वर्ष
साढपोरिसिनुं	दश हजार वर्ष
पुरिमड्ढनुं	एक लाख वर्ष
एकासणुं	दश लाख वर्ष
आयंबिलना	एक हजार क्रोड
उपवासना	दश हजार क्रोड वर्ष
छठ्ठना	एक लाख क्रोड वर्ष
अठ्ठमना	दश लाख क्रोड वर्ष

तप करतां करतां साथे अणाहारी पद प्राप्त करवानी भावना भाववी जोईए तो... तपनुं फल आथी पण वधु अनंत गणुं मळी शके.

रात्रिभोजन करवाथी.....

1. *अगणित सूक्ष्म जीवो, त्रसजीवोनी हिंसा थाय छे.*
2. *शरीर बिमार अने आळसु बने छे.*
3. *मननी पवित्रता घटे छे.*
4. *आत्मा तिर्यंचगति, नरकगति, असातावेदनीय आदि पापकर्म बांधे छे.*
5. *मरणमां असमाधि, परलोकमां दुर्गति अने दुःखनी परंपरा चाले.*
6. *रात्रे भोजन करतां कीडी खावामां आवे तो बुद्धि भ्रष्ट थाय, जू आवी जवाथी जलोदर, माखीथी उलटी, करोळियाथी कोढ, लाकडानी फांसथी के नानो वींछी आवी जवाथी ताळवुं वींधाई जाय.*
7. *घुवड, कागडा, बीलाडा, गीध, साबर, भूंड, साप, वींछी अने गीध वगेरेना हलका अवतारो मळे.*
8. *नरकगतिनी कातिल, काळझाळ वेदना भोगववी पडे.*
9. *परमात्मानी आज्ञानुं उल्लंघन करवानो दोष लागे.*

नरके जवानो नेशनल हाईवे
अेटले..... रात्री भोजन.....

जिन दर्शन-पूजन विधि विभाग

ज्ञान वडुं संसारमां, ज्ञान परम सुख हेत,
ज्ञान विना जग जीवडा, न लहे तत्त्व संकेत.

विधिनुं ज्ञान शा माटे जरुरी...

विधिथी निरपेक्ष रहीने गमे तेवी किंमती पूजा करवामां थवो जोईअे तेवो आत्मिक लाभ आपणने प्राप्त थई शकतो नथी... रुपियानी कमाणी 'चार आनामां' वेडफाई न जाय ते माटे शास्त्रीय विधि जाणीने... शक्य होय तेटली अविधि दूर करी... शुद्ध क्रिया करवा माटे विधिनुं ज्ञान जरुरी छे...

माटे ज ज्ञानी भगवंतो फरमावे छे... के...
''पहेलुं ज्ञान ने पछी रे क्रिया, नहीं कोई ज्ञान समान रे...''

१. *दूरथी जिनालयनी धजा जोतानी साथे ज बन्ने हाथ जोडी मस्तक नमावी 'नमो जिणाणं' कहेवुं.*

२. *प्रथम निसीहि बोली जिनालयना मुख्यद्वारे प्रवेश करवो. (आ निसीहिथी संसारना तमाम कार्योनो अने विचारोनो त्याग थाय छे. जिनालय संबंधी कार्योनी छुट छे)*

मननी जीते जीत छे, मननी हारे हार, मन लई जाय मोक्षमां, मनही नरक मोझार.

३. *परमात्मानुं मुख जोतां बे हाथ जोडी कपाळे लगाडी मस्तक नमावी '***नमो जिणाणं***' कहेवा द्वारा '***अंजलिबध्ध प्रणाम***' करवुं.*

४. *अनादि काळनी चारगतिनी भव भ्रमणाने टाळवा, रत्नत्रयीने पामवा... जीवहिंसा न थाय ते रीते जमीन पर नीची नजर राखीने त्रण '***प्रदक्षिणा***' देवी.*

५. *भाईओअे परमात्मानी जमणी बाजुए अने ब्हेनोअे डाबी बाजुए उभा रहीने केडथी अडधु अंग नमावीने '***अर्धावनत प्रणाम***' करीने मधुर कंठे '***स्तुति***' बोलवी.*

६. *आठ पडवाळो मुखकोश बांधी बरास केसर हाथे वाटवानो आग्रह राखवो.*

७. *परमात्मानी '***आज्ञा***' मस्तके चढावुं छुं. तेवा भाव साथे भाईओअे दीपकनी शिखा के बदाम आकारनुं ( ) अने बहेनोअे समर्पण भावना प्रतिक समान सौभाग्य सुचक गोळ ( ) '***तिलक***' करवुं.*[१]

१... *प्रदक्षिणा अने स्तुति कर्या पहेलां पण, तिलक करवानी विधि घणां पुस्तकोमां जाणवा मळेल छे.*

घर में सब कुछ 'सेट' है... मगर व्यक्ति स्वयं 'अपसेट' है !

८. *आठ पडवाळो मुखकोश बांधी... पाणीथी हाथ धोई केसर पुष्प... धुपथी धुपी बीजी निसीहि बोलीने गभारामां '***अंगपूजा***' करवा माटे प्रवेश करवो.*

(बीजी निसीहिथी देरासर संबंधी कार्योनो पण त्याग करी परमात्मानी अंगपूजामां लीन बनवानुं छे.

९. *सौ प्रथम प्रभुजीना अंग उपरथी पुष्पो वि... निर्माल्य उतारवुं.*

१०. *प्रभुजीना अंगे मोरपींछीथी हळवा हाथे प्रमार्जना करवी.*

११. *प्रभुजीना अंग परथी आभूषणो उतारी थाळीमां मुकवां.*

१२. *अलग पुंजणीथी प्रभुजीनुं पबासण, नवण जळनां डब्बा तथा नवणनुं जळ ज्यांथी पसार थतुं होय ते जग्या बराबर पुंजी लेवी.*

१३. *प्रभुजीनी वासक्षेप पूजा करवी.*

१४. *पाणीनो कळश करी मलमलना भीना वस्त्र वडे प्रभुजीना अंगपर रहेलुं केसर दूर करवुं.*

सूचन :- *वाळाकुंचीनो उपयोग करवो नहीं, छतां करवो पडे तो ज्यां जरुर होय त्यांज पोताना दांतमां भराई गयेल अनाजनो दाणो काढीए तेम हळवा हाथे करवो.*

तीर्थमां मोटामां मोटुं तीर्थ कयुं ? ''विशुद्ध मनः'' पोतानुं शुद्ध मन.

१५. *पंचामृतथी प्रभुजीनो '***अभिषेक***' करवो. (अभिषेक समये घंटनाद-शंखनाद-करवो-दुहाओ बोलवा चामर विंझवा...) पछी जळनो* **अभिषेक** *करवो.*

१६. *जळथी प्रभुजीने स्वच्छ करी हळवा स्नेहभर्या हाथे प्रभुजीने त्रण '***अंगलुंछणा***' करवा. (जरुर पडे तो ज तांबाकुंचीनो उपयोग करवो.)*

१७. *बरासथी '***विलेपन***' करवुं.*

१८. *केसर-बरास... आदिथी मिश्रित चंदनथी प्रभुजीना नव अंगे (१३ तिलक) करवा रुप '***चंदनपूजा***' करवी.*

१९. *प्रभुजीने पुष्पो समर्पित करवा रुपे '***पुष्पपूजा***' करवी.*

२०. *प्रभुजीने मुगट-हार वि... आभूषणो चढाववा रुप आभूषण पूजा करवी.*

२१. *गभारानी बहार प्रभुजीनी डाबी बाजुए उभा रहीने '***धुपपूजा***' करवी अने प्रभुजीनी जमणी बाजुए उभा रहीने '***दीपकपूजा***' करवी.*

२२. *चामर नृत्य करवुं... पंखो ढाळवो-अरीसामां प्रभुजीनुं दर्शन करवुं.*

२३. *अक्षत... नैवेद्य... फळपूजा करवी.*

भाग्यने भरोसे बेसी रहेनारनुं भाग्य पण बेसी रहे छे.

२४. भगवाननी त्रण अवस्थाना चिंतवनरुप '**अवस्थात्रिक**' भाववी.

२५. त्रण वार खेसथी भुमिनी '**प्रमार्जना**' करी... त्रीजी निसीहि बोली... '**चैत्यवंदन**' करवुं. (त्रीजी निसीहिथी द्रव्य पूजानो त्याग करी भावपूजा एटले के चैत्यवंदनमां एकाग्र बनवानुं छे.)

२६. चैत्यवंदन करतां भगवान सिवायनी बीजी त्रण दिशा निरीक्षण त्याग त्रिक... आलंबनत्रिक... मुद्रात्रिक अने प्रणिधान त्रिकनुं पालन करवुं.

२७. चैत्यवंदन पूरु कर्या पछी '**पच्चक्खाण**' लेवुं.

२८. विदाय थतां '**स्तुति**' बोलवी. जीवनमां सतावता **दोषोना नाशनी** अने **गुणोनी प्राप्ति** माटे प्रभु पासे '**भावना**' भाववी.

२९. खमासमण दई जमणो हाथ जमीन पर स्थापी पूजा विधि दरम्यान थयेल '**अविधि आशातना**'नुं **मिच्छामि दुक्कडम्** मांगवुं.

३०. अक्षत... नैवेद्य... फळ... पाटला... पूजाना उपकरणो यथास्थाने मुकवा...

३१. छेल्ले प्रभु दर्शन तथा पूजनथी थयेला हर्षने व्यक्त करवा बीजा कोईने अंतराय न थाय तेम हळवेथी '**घंट**' वगाडवो.

माणस घरडो थाय, पण लोभ-तृष्णा (ईच्छा) कदापि घरडा थता नथी.

३२. प्रभुजीने '**पुंठ**' न पडे ते रीते जिनालयनी बहार नीकळवुं.

३३. न्हवण जळ लेवुं.

३४. ओटले बेसी आंखो बंध करी त्रण नवकारनुं स्मरण करी हृदयमां भक्तिभावोने स्थिर करवा.

३५. पू. साधु-साध्वीजी भ. उपाश्रयमां बिराजमान होय तो त्यां जईने गुरुवंदन करी तेमना '**श्रीमुखे**' फरी पच्चक्खाण ग्रहण करवुं.

३६. आजे थयेला सुकृतना आनंद साथे अने प्रभु विरहना दु:ख साथे गृह तरफ प्रयाण करवुं.

नोंध : संयोग अने समयनी अनुकुळता होय तो रोज स्वद्रव्यथी अष्टप्रकारी पूजा अने सुंदर आंगी बनाववानो आग्रह अवश्य राखवो.

घणा बधा पैसा कमाई, लेवानी बहु मोटा माणस बनी जवानी, लोकोमां मान सन्मान मेळवी लेवानी वि. ईच्छा अने अपेक्षाओए ज, आपणा जीवननी प्रसन्नता-मस्ती अने शांति छीनवी लीधी होय अने टेन्शन भरी दीधुं होय एवुं शुं नथी लागतुं आपणने ?

शासनना (जगतना) अमूल्य त्रण रत्नो : दर्शन... ज्ञान... चारित्र...

जिनालयमां ध्यानमां राखवा लायक सूचनो... (४५)

१. प्रभु दर्शन के पूजा करवा देरासर क्यारेय खाली हाथे जवुं नहीं. धुप... अक्षत... पूजाना उपकरणो तथा भंडारमां पुरवा पैसा वि. अवश्य साथे लईने जवुं जोईए.

२. देरासर पूजा दर्शन करवा आवतां जतां समये गरीबोने रोज यथाशक्ति दान आपवुं.

३. देरासरना कंपाउंडमां प्रवेश कर्या पछी, संबंधी के ओळखीताओ साथे परस्परना समाचार पुछवा नहि... धंधा के संसार संबंधी कोईपण वातचीत करवी जोईए नहीं.

४. पानपराग, गुटखा, बीडी-दवा... खावा-पीवानी वस्तु के तेल-छींकणी... सुंघवानी-लगाडवानी कोईपण वस्तु खीस्सामांथी काढीने ज जिनालयमां प्रवेश करवो केम के आ बधी वस्तु जिनालयमां लई जवी उचित पण नथी अने लई गया पछी वापरवामां प्रभुजीना विनयनो भंग थाय छे.

५. एंठुं मों साफ कर्या पछी ज देरासरमां प्रवेश करवो जोईए.

६. तिलक करता समये दर्पणमां वाळ ओळवा के कपडा ठीकठाक करवा जोईए नहीं. प्रभुजीनी नजर पडती होय तेवा स्थाने तिलक करी शकाय नहीं तथा मुगट के हार पहेरी शकाय नहीं.

शासनना (जगतना) अमूल्य त्रण तत्त्व : देव... गुरु... धर्म...

७. दर्शन-पूजा करतां समये पाछळनाओने अने स्तुति-चैत्यवंदन बोलतां समये बीजाओने अंतराय न थाय तेनी खास काळजी राखवी.

गभारामां प्रवेश करतां पहेलां.....

८. अष्टपडवाळो मुखकोश बांध्या विना गभारामां प्रवेश करी शकाय नहीं. गभारामां दुहाओ मोटेथी बोलाय नहीं. मनमां बोलवा जोईए.

९. पूजा करती वखते भाईओए खेस वडे ज आठ पडवाळो मुखकोश बांधवो जोईए, रुमाल वापरवो उचित नथी.

१०. पूजा करवानो हाथ पाणीथी धोई... धुपथी धुपी, पवित्र कर्या बाद गभारानां उंबरे, शरीरे के कपडे न अडाडतां सीधी पूजा करवानो आग्रह राखवो.

११. पूजा करतां समये घडीयाल पहेरवी उचित नथी, हाथनी आंगळीओमां वींटी तथा शरीरे घरेणा अवश्य पहेरवां जोईए.

१२. पंचधातुना प्रभुजीने एक हाथथी न पकडतां बन्ने हाथमां बहुमानपूर्वक थाळीमां लेवा जोईए.

खराब काम करता हाथ अने खराब विचार करतां हैयुं कंपे छे खरुं आपणुं ?

१३. पूजा करतां शरीर माथुं वि. खंजवाळवुं नहीं, छींक, बगासु, ओडकार वाछुट वि. करवा नहीं, तेवी शक्यता लागे तो गभारानी बहार नीकळी जवुं. कार्य पूर्ण थया बाद हाथ वि. अशुद्ध थया होय तो धोईने शुद्ध करी लेवा.

पूजामां... भावोनी वृद्धि कई रीते थई शके...

१४. अष्टप्रकारी पूजा अने नवांगी पूजा करता पहेलां तेना भावार्थनुं लखाण शांतिथी वांचीने विचारवुं.

बधा भगवानना टाईपीस्टनी जेम जल्दी जल्दी पूजा करवा करतां अर्थ समजीने विधि अने भक्ति जळवाई रहे ते रीते शक्य एटला भगवाननी शांतिथी पूजा करवी ते आपणा भावोनी वृद्धि माटे लाभदायी बनी शके छे. प्रभुजीने चंदनपूजा लोकप्रिय राजाने विजय तिलक करीए तेना करतां अधिक धीरजथी... प्रेमथी... उल्लासपूर्वक भावना भावतां भावतां करवी जोईए.

१५. दूधना प्रक्षालनी धारा प्रभुजीना मस्तकशिखाएथी करवानी छे, नवांगी पूजानी जेम १-१ अंग पर करवानी विधि नथी.

''मान पामे ते नहि, पण... मान पचावे ते साचा महात्मा छे.''

१६. प्रभुजीना अंगलुंछणा सुंवाळा... स्वच्छ होवा जोईए अंगलुंछणां पवित्र राखवा, आपणां शरीरने के वस्त्रने अडी न जाय तेनुं खास ध्यान राखवुं, अंगलुंछणा थाळीमां ज राखवा, आपणा खोळामां जमीन पर के गमे त्यां रखाय नहीं. देव देवीओ माटे उपयोग करेला अंगलुंछणा प्रभुजीना अंगे वपराय नहीं.

पूजा कया क्रमथी करशो.....

१७. (1) पहेला मुळनायकजी पछी (2) बीजा भगवान तथा सिद्धचक्रजीनो गट्टो पछी (3) गुरुमूर्ति.

अने छेल्ले देव-देवीओने कपाळे जमणा अंगुठाथी बहुमान स्वरुपे एक ज तिलक करवुं.

सिद्धचक्रजीना गट्टानी पूजा कर्या पछी ते ज केसरथी बीजा भगवानने के बीजा भगवाननी पूजा कर्या पछी मुळनायक भगवाननी पूजा करवामां कोई बाध नथी.

१८. पूजा करतां प्रभुजीने नख न अडे अने नखने केसर न अडे तथां पूजा पूर्ण कर्या बाद केसर नखमां न रही जाय तेनुं खास ध्यान राखवुं, केमके केसर नखमां रही जाय अने भोजन करतां केसर पीगळीने पेटमां जाय तो देवद्रव्य भक्षणनो दोष लागे.

धार्मिक थवुं ते 'साधना' छे, परंतु धार्मिक देखावुं ते तो 'विलास' छे.

१९. भगवानना जमणा अंगुठे सगा-संबंधीओना नामनी वारंवार पूजा करवानी कोई विधि नथी, तेना बदले **सकळ संघवती मात्र एक तिलक करी शकाय.**

२०. नव अंग सिवाय प्रभुजीनी हथेळीमां, लंछनमां के परिकरमां रहेल हाथी-घोडा-वाघनी पूजा करवानी विधि नथी.

२१. प्रभुजीना खोळामां माथुं मुकाय के अडाडाय नहीं. पूजा करवानी आंगळी... हथेळी सिवायनुं कोईपण अंग के पूजानां कपडांनो प्रभुजीने स्पर्श थवो उचित नथी.

२२. पार्श्वनाथ भगवानभी फणा **नवअंगमां** *गणाती नथी. एथी फणानी पूजा करवानी आवश्यकता नथी तेम छतां पूजा करवानी भावना होय तो* **अनामिका** *आंगळीथी करवामां कोई बाध नथी.*

२३. प्रभुजीना आंख, नाक, मुख के शरीर पर केसरनां छांटा पड्यां होय तो तेने अंगलुंछणाथी स्वच्छ करवानो खास उपयोग राखवो.

२४. पंचधातुना प्रभुजीने **सुंदर अंगरचना** *थई गई होय तो ते पछी तेने* **नवांगी पूजा** *करवानो आग्रह राखवो उचित्त नथी.*

२५. प्रभुजीनी पूजामां सारा, सुगंधवाळा, ताजा जमीनपर नहीं पडेलां, अखंड पुष्पो ज चढाववां, पुष्पनी पांदडीओ छुटी कराय नहीं के पुष्पो विंधाय नहीं अने पुष्पो विंधीने

घरमां रहेवुं ते पाप नथी, पण घरने मनमां भरी राखवुं ते पाप छे.

माळा पण बनावाय नहीं. पुष्पोने क्यारेय पाणीथी धोवा जोईए नहीं कारण के धोवाथी पुष्पोमां रहेला सूक्ष्म जीवोनी विराधना थाय छे.

२६. प्रभुजीनुं मुख के अंग ढंकाई न जाय के बीजाने पूजा करवामां तकलीफ न पडे तेवी रीते विवेकथी पुष्प चढाववा जोईए.

देव-देवीओनी भक्ति करतां.....

२७. देव-देवीओ आपणा साधर्मिको छे. माटे तेमने अंगुठाथी बहुमानपूर्वक कपाळे एक तिलक ज करवानुं होय छे. तेमना दरेक अंगे के फणामां पूजा करवानी विधि नथी. तेमने बे हाथ जोडी प्रणाम करवाना छे तेमने खमासमण देवाय नहीं के चोखानो साथियो करवानी जरुर नथी.

भगवान करतां देवदेवीनी वधारे पूजा-भक्ति करवी ते उचित न कहेवाय. परमात्मानी आशातना कहेवाय.

२८. अष्टमंगलनी पाटली मांगलिक रुपे प्रभु सन्मुखे रखाय छे. तेने स्वस्तिकनी जेम आलेखवाना छे. तेने केसरथी पूजा करवानी कोई विधि नथी.

२९ पूजा कर्या पछी गभारानी बहार नीकळतां अने जिनालयमां दरेक जग्याए प्रभुजीने पुंठ न पडे तेनुं खास ध्यान राखवुं.

'द्रष्टिदोष'मां जुवानी डुबे छे अने 'दोषद्रष्टि'मां घडपण डुबे छे.

३०. पूजा कर्या पछी थाळी-वाटकी धोईने तेना स्थाने ज राखवी जोईए गमे त्यां मुकी देवाय नहीं.

३१. पूजाना वस्त्रोथी थाळी-वाटकी साफ करवा नहीं, शरीरनो पसीनो के हाथ लुछवा ते आशातना कहेवाय.

साथियो करवानी विधि... जाणवा मळेल छे...

३१. (1) अक्षत पूजामां चोखा लीधा बाद पहेलां सिद्धशिलानी ढगली... पछी दर्शन-ज्ञान-चारित्रनी ढगली अने छेल्ले साथियानी ढगली करवी. आलेखन करवामां पहेलां साथियो अने छेल्ले सिद्धशिला करवी.

३२. नैवेद्य पूजामां पीपरमेंट-चोकलेट-बजारनी मिठाई के अभक्ष्य वस्तु मुकवी उचित नथी.

३३. अक्षत नैवेद्य के फळपूजामां अेकवार चढावेल अक्षत, साकर, बदाम के नारियेळ वि. वस्तु बीजीवार पूजाना उपयोगमां के खावाना उपयोगमां लेवाय नहीं.

३४. साथियो करवानी क्रिया अने चैत्यवंदन साथे कराय नहीं बे क्रिया भेगी करवाथी डहोळाई जाय अने क्रियानुं हार्द जळवाय नहीं.

तमारा मित्र केवा छे ? कही दो... तमे केवा छो ? ते हुं तमने कही दईश.

चैत्यवंदन करतां समये.....

३५. चैत्यवंदन करतां पहेलां त्रीजी निसीहि द्वारा तमाम द्रव्यपूजानो त्याग करवानो छे. माटे चैत्यवंदन करतां समये कोई आपणो पाटलो लई ले के साथियो भुंसी काढे तो तेमने रोकवा नहीं.

चैत्यवंदन पूर्ण थाय त्यां सुधी पाटलो आपणी सामे के साथे ज रहे ते जरुरी नथी.

३६. चैत्यवंदन करतां समये पच्चक्खाण लेवुं नहीं के गुरुभगवंत स्तुति चैत्यवंदन विधि करता होय त्यारे तेमनी भक्तिमां खलेल पाडी पच्चक्खाण मांगवुं नहीं.

शुं आप जाणो छो..... ?

३७. प्रभुजीना अंगपरथी केसर उतारवुं. अंगलुंछणाथी शुद्धि करवी. देरासरमां काजो लेवो... थाळी-वाटकी साफ करवा... पाटला वि. उपकरणो व्यवस्थित मुकवा... विगेरे कार्यो पण प्रभुजीनी भक्तिरुप ज छे. ते कार्यो जाते करवाथी अशुभ कर्मोनो नाश थाय छे. अने उत्तम गुणोनी प्राप्ति थाय छे. माटे आवां उत्तम प्रभु सेवाना कार्यो करवामां संकोच राखवो नहीं.

जगतमां बे ज महासत्ता, कर्मसत्ता अने धर्मसत्ता.

३८. परमात्मानुं न्हवण जल पवित्र होवाथी लेती वखते तेना टीपां जमीन पर न पडे तेनी खास काळजी राखवी. न्हवणना वाटकामां पांचेय आंगळी न बोळतां एक के बे आंगळीथी न्हवण जल मात्र एकज वखत लेवुं. न्हवण जल नाभिथी उपरना भाग पर लगाडवुं.

बहेनो माटे विशेष सूचना.....

३९. **प्रभु दर्शन अने पूजन करतां समये बहेनोए अवश्य माथुं ढांकवुं ज जोईए.** *वस्त्रो पण आपणी संस्कृतिने छाजे तेवा ज पहेरवा जोईए. मर्यादावाळा वस्त्रोमां प्रभुप्रत्ये पूज्यभाव अने विनयभाव प्रगटे छे.*

अंगोपांग देखाय तेवा पारदर्शी वस्त्रो के बीजाने अशुभभाव उत्पन्न थाय तेवा भडक कलरना के टाईट वस्त्रो पहेरीने देरासर आववुं उचित नथी.

पूजा तथा भावनामां.....

४०. पूजा तथा भावनामां पुरुषोनी हाजरीमां बहेनोए गावुं नहीं के दांडीया लेवा जोईए नहीं.

पूजा तथा भावनामां भाईओ बहेनोए साम सामे मुख राखी बेसवुं जोईए नहीं. ते करतां प्रभुजीनी सन्मुख मुख

दुःखमां हाथ आपे ते माणस 'मोटो', पण हाथ खेंचे ते माणस 'खोटो'.

राखी भाईओए आगळ अने बहेनोए पाछळ बेसवुं वधारे उचित जणाय छे.

४१. पूजानां वस्त्रो शरीर परथी उतार्या पछी गमे त्यां गमे ते वस्त्रोनी साथे मुकवाथी तथा बीजा वस्त्रो साथे धोवाथी अपवित्र बनी जाय छे. माटे अलग राखवा तथा अलग धोवा जोईए.

४२. पूजानां वस्त्रो दररोज अने ते शक्य न होय तो जेम बने तेम वहेलां धोतां रहेवुं जोईए जेथी ते स्वच्छ अने पवित्र रहे.

४३. जुना के फाटेलां धार्मिक पुस्तको... फोटाओ देरासरमां ज्यां त्यां मुकी जवा ते ऊचित नथी.

४४. प्रभुनी पूजा अे प्रभु माटे नथी, पण... अनादि काळथी विसरायेलां आपणां आत्मस्वरुपनी प्रतीति... अनुभुति अने प्राप्ति माटे छे.

४५. प्रभु मात्र दर्शनीय नथी, प्रभु तो पूजनीय पण छे. पूजनीय प्रभुना मात्र दर्शन करी संतोष मानवो ए पण एक जातनी उपेक्षा कहेवाय माटे ज जे भाग्यशाळीओ मात्र दर्शन करी संतोष माने छे तेमणे वहेलामां वहेली तके... प्रभु पूजानी शरुआत करी देवी ज जोईए.

विषयनी मस्ती, कषायनी दोस्ती, ते रखावे संसारनी हस्ती.

दुहा विभाग—१७

श्री सिद्धाचलजी तीर्थना दुहा-९

सिद्धाचल समरुं सदा, सोरठ देश मोझार,
मनुष्यजन्म पामी करी, वंदु वार हजार...१

सोरठ देशमां संचर्यो, न चढ्यो गढ गिरनार,
शेत्रुंजी नदी नाह्यो नहीं, एनो अेळे गयो अवतार...२

शेत्रुंजी नदीए नाहीने, मुख बांधी मुखकोश,
देव युगादि पूजीए, आणी मन संतोष...३

एकेकुं डगलुं भरे, शेत्रुंजा समो जेह,
ऋषभ कहे भव क्रोडना, कर्म खपावे तेह...४

शत्रुंजय समो तीरथ नहीं, ऋषभ समो नहीं देव,
गौतम सरीखा गुरु नहीं, वळी वळी वंदु तेह...५

जगमां तीरथ दो वडा, शत्रुंजय गिरनार,
एक गढ ऋषभ समोसर्या, एक गढ नेमकुमार...६

पग लपसे तो जखम थाय, अने जीभ लपसे तो जोखम थाय.

सिद्धाचल सिद्धि वर्या, मुनिवर कोडी अनंत,
आगे अनंता सिद्धशे, पूजो भवी भगवंत...७

शत्रुंजय गिरिमंडणो, मरुदेवानो नंद,
युगला धर्म निवारको, नमो युगादि जिणंद...८
तन मन धन सुतवल्लभा, स्वर्गादिक सुखभोग,
वळी वळी ए गिरि वंदता, शिवरमणी संयोग...९

श्री सीमंधर स्वामीजीना दुहा - ५

अनंत चोवीशी जिन नमुं, सिध्ध अनंती कोड,
केवळधर मुगते गया, वंदु बे कर जोड...१

बे कोडी केवळ धरा, विहरमान जिन वीश,
सहस कोडी युगल नमुं, साधु नमुं निशदीश...२

जे चारित्रे निर्मळा, जे पंचानन सिंह,
विषय कषायने गंजीया, ते प्रणमुं निशदीश...३

भरत क्षेत्रमां हुं रहुं, आप रहो छो विमुख,
ध्यान लोहचुंबक परे, करुं दृष्टि सन्मुख...४

वृषभ लंछन चरणमां, कंचन वरणी काय,
चोंत्रीश अतिशय शोभतां, वंदु सदा तुम पाय...५

कठोर भूमिमां बीजनुं वावेतर न थाय, तेम कठोर हैयामां धर्मनुं वावेतर न थाय.

मारा परमात्मानी त्रण प्रदक्षिणामां बोलवाना दुहा

(१) काळ अनादि अनंतथी, भव भ्रमणानो नहीं पार,
ते भ्रमणा निवारवा, प्रदक्षिणा दउं त्रण वार,
भमतिमां भमतां थकां, भव भावठ दूर पलाय,
दर्शन ज्ञान चारित्र रूप, प्रदक्षिणा त्रण देवाय.

(२) जन्म मरणादि भय टळे, सीझे जो दर्शन काज,
रत्नत्रयी प्राप्ति भणी, दर्शन करो जिनराज,
ज्ञान वडुं संसारमां, ज्ञान परम सुख हेत,
ज्ञान विना जग जीवडा, न लहे तत्त्व संकेत.

(३) चय ते संचय कर्मनो, रिक्त करे वळी जेह,
चारित्र नाम निर्युक्ते कह्युं, वंदो ते गुण गेह,
दर्शन ज्ञान चारित्र ए, रत्नत्रयी निरधार,
त्रण प्रदक्षिणा ते कारणे, भवदु:ख भंजनहार.

निसीहि... निसीहि... निसीहि अेटले निषेध
संसारना तमाम पाप कार्यो... विचारोनो त्याग.
त्रण निसीहि... क्यां... बोलवी
(१) देरासरमां प्रवेशतां, (२) गभारामां प्रवेशतां,
(३) चैत्यवंदन (भावपूजा)नी शरुआत करतां पहेलां...

तननी मांदगी करतां मननी मांदगी वधु नुकशान कारक छे.

स्तुति विभाग - २७

भाववाही स्तुति

(१) दर्शनं देवदेवस्य, दर्शनं पाप-नाशनम्,
दर्शनं स्वर्ग सोपानं, दर्शनं मोक्ष-साधनम्.

(२) छे प्रतिमा मनोहारिणी दु:खहरी, श्री वीर जिणंदनी,
भक्तोने छे सर्वदा सुखकरी, जाणे खीली चांदनी,
आ प्रतिमाना गुण भाव धरीने, जे माणसो गाय छे,
पामी सघळां सुख ते जगतमां, मुक्ति भणी जाय छे.

(३) अर्हन्तो भगवंत ईन्द्र महिता:, सिद्धाश्च सिद्धिस्थिता:,
आचार्यो जिनशासनोन्नतिकरा:, पूज्या उपाध्यायका:
श्री सिद्धान्तसुपाठका मुनिवरा, रत्नत्रयाराधका:,
पंचैते परमेष्ठिन: प्रतिदिनं, कुर्वन्तु वो मंगलम्.

(४) संसार घोर अपार छे, तेमां डूबेला भव्यने !
हे तारनारा नाथ ! शुं भूली गया निज भक्तने,
मारे शरण छे आपनुं, नवि चाहतो हुं अन्यने,
तो पण प्रभु ! मने तारवामां, ढील करो शा कारणे ?

भूलो भले बीजुं बधुं 'मा-बापने' भूलशो नहीं !

(५) जे द्रष्टि प्रभु दर्शन करे, ते द्रष्टिने पण धन्य छे,
जे जीभ जिनवरने स्तवे, ते जीभने पण धन्य छे,
पीये मुदा वाणी सुधा, ते कर्णयुगने धन्य छे,
तुज नाम मंत्र विशद धरे, ते हृदयने पण धन्य छे,

(६) सुण्या हशे पुज्या हशे, निरख्या हशे पण को क्षणे,
हे जगतबंधु ! चित्तमां, धार्या नहि भक्तिपणे,
जन्म्यो प्रभु ते कारणे, दु:खपात्र आ संसारमां,
हा ! भक्ति ते फळती नथी, छे भाव शून्याचारमां.

(७) हे देव ! तारा दिलमां, वात्सल्यनां झरणा भर्या,
हे नाथ ! तारा नयनमां, करुणातणां अमृत भर्या,
वीतराग तारी मीठी मीठी, वाणीमां जादु भर्या,
तेथी ज तारा चरणमां, बाळक बनी आवी चड्या.

(८) क्यारे प्रभु ! निज द्वार उभा, बाळने निहाळशो ?
नितनित मांगु भीख गुणनी, एक गुण क्यारे आपशो ?
श्रद्धा दीपकनी ज्योत झांखी, ज्वलंत क्यारे बनावशो ?
सुना सुना अम जीवनमां, प्रभु ! आप क्यारे पधारशो ?

(९) क्यारे प्रभु ! तुज स्मरणथी आंखो थकी अश्रु सरे,
क्यारे प्रभु ! तुज नाम वदता वाणी मुज गद्‌गद् बने,
क्यारे प्रभु ! तुज नाम श्रवणे देह रोमांचित बने,
क्यारे प्रभु ! मुज श्वासे श्वासे नाम ताहरुं सांभरे.

'हुं' पणाना (अहंकारना) त्याग जेवी श्रेष्ठ साधना बीजी कोई नथी.

(१०) बहुकाळ आ संसार सागरमां, प्रभु ! हुं संचर्यो,
थई पुण्यराशि एकठी, त्यारे जिनेश्वर तुं मळ्यो,
पण पापकर्म भरेल में, सेवा सरस नव आदरी,
शुभ योगने पाम्या छतां, पण मूर्खता बहु में करी.

(११) शत कोटी कोटी वार वंदन, नाथ मारा हे तने,
हे तरण तारण नाथ तुं, स्वीकार मारा नमनने,
हे नाथ शुं जादु भर्या, अरिहंत अक्षर चारमां.
आफत बधी आशीष बने, तुज नाम लेता वारमां.

(१२) सागर दयाना छो तमे, करुणा तणा भंडार छो,
ने पतितोने तारनारा, विश्वना आधार छो,
तारा भरोसे जीवननैया, आजे में तरती मूकी,
लाख लाख वंदन करुं, जिनराज तुज चरणे झुकी.

(१३) हे प्रभु ! आनंद दाता !, ज्ञान हमको दीजिये,
शीघ्र सारे अवगुणोंको, दूर हमसे कीजिये,
लीजिये हमको शरणमें, हम सदाचारी बने,
ब्रह्मचारी धर्म रक्षक, वीर व्रतधारी बने.

(१४) दादा तारी मुख मुद्राने, अमिय नजरे निहाळी रह्यो,
तारा नयनोमांथी झरतुं, दिव्य तेज हुं झीली रह्यो,
क्षणभर आ संसारनी माया, तारी भक्तिमां भूली गयो.
तुज मूर्तिमां मस्त बनीने, आत्मिक आनंद माणी रह्यो.

पापी पूजाता... धर्मी रिबाता, वहेला मोडा... सहुना हिसाब थाता.

(१५) आजे पाम्यो परम पदनो पंथ तारी कृपाथी
मीट्या आजे भव भ्रमणना थाक तारी कृपाथी,
दु:खो सर्वे दूर थई गया देव तारी कृपाथी,
खुल्या खुल्या सकल सुखना द्वार तारी कृपाथी.

(१६) रागद्वेष पर विजयी वर्या छो अमने विजयी करजो,
भवसागरने तरी गया छो अमने भवपार करजो,
केवळज्ञान लह्युं छे आपे अमने ज्ञानी करजो,
सर्व कर्मथी मुक्त थया छो अम बंधनने हरजो.

(१७) रुप तारुं एवुं अद्‌भूत, पलक विण जोया करुं,
नेत्र तारा निरखी निरखी, पाप मुज धोया करुं,
हृदयना शुभ भाव परखी, भावना भावित करुं,
झंखना एवी मने के, हुं ज तुं ज रुपे बनुं.

(१८) जेना प्रभावे जीवनमां हुं, परम शांति अनुभवुं,
जेना प्रभावे वर समाधि, मरणमां पामी शकुं,
जेना प्रभावे पवन वेगे, मोक्षमां पहोंची शकुं,
एवा श्री शंखेश्वर प्रभुना चरणमां प्रेमे नमुं.

(१९) शक्ति मळे तो मुजने मळजो, जिन शासन सेवा सारुं,
भक्ति मळे तो मुजने मळजो, जिन शासन लागे प्यारुं,
मुक्ति मळे तो मुजने मळजो, राग द्वेष अज्ञान थकी,
भवोभव तुज शासन मळजो एवी श्रद्धा थाय नक्की.

देखातुं रुपाळुं शरीर, रुपाळा भाव के रुपाळुं भावी रची शकतुं नथी.

अरिहंत वंदनावलिनी भाववाही स्तुतिओ

(२०) जे चौद महास्वप्नो थकी, निजमातने हरखावतां,
वळी गर्भमांहि ज्ञानत्रयने, गोपवी अवधारतां,
ने जन्मतां पहेलां ज चोसठ, ईन्द्रो जेने वंदतां,
एवा प्रभु अरिहंतने, पंचांग भावे हुं नमुं.

(२१) कुंजर समा शूरवीर जे छे, सिंह सम निर्भय वळी,
गंभीरतां सागर समी, जेना हृदयने छे वरी,
जेना स्वभावे सौम्यता छे, पूर्णिमाना चंद्रनी,
एवा प्रभु अरिहंतने, पंचांग भावे हुं नमुं.

(२२) जे शरदऋतुना जळ समा, निर्मळ मनोभावो वडे,
उपकार काज विहार करतां, जे विभिन्न स्थळो विषे,
जेनी सहन शक्ति समीपे, पृथ्वी पण झांखी पडे,
एवा प्रभु अरिहंतने, पंचांग भावे हुं नमुं.

(२३) जेना गुणोना सिंधुना बे, बिंदु पण जाणुं नहीं,
पण एक श्रद्धा दिलमहीं के, नाथ सम को छे नहीं,
जेना सहारे क्रोडो तरिया, मुक्ति मुज निश्चय सही,
एवा प्रभु अरिहंतने, पंचांग भावे हुं नमुं.

पापनो तिरस्कार करो, पापीनो नहीं.

रत्नाकर पच्चीसीनी भाववाही स्तुतिओ

२४ *हुं क्रोध अग्निथी बळ्यो, वळी लोभ सर्प डस्यो मने,*
गळ्यो मानरुपी अजगरे, हुं, केम करी ध्यावुं तने,
मन मारुं माया जाळमां, मोहन महा मुंझाय छे,
चडी चार चोरो हाथमां, चेतन घणो चगदाय छे.

२५ *शुं बाळको ! मा बाप पासे, बाळक्रीडा नव करे,*
ने मुखमांथी जेम आवे, तेम शुं नव उच्चरे,
तेमज तमारी पास तारक ! आज भोळा भावथी,
जेवुं बन्युं तेवुं कहुं, तेमां कशुं खोटुं नथी.

२६ *नवकार मंत्र विनाश कीधो, अन्य मंत्रो जाणीने,*
कुशास्त्रनां वाक्यो वडे, हणी आगमोनी वाणीने,
कुदेवनी संगत थकी, कर्मो नकामां आचर्यां,
मतिभ्रम थकी रत्नो गुमावी, काच कटकां में ग्रह्यां.

२७ *त्हाराथी न समर्थ अन्य दीननो, उद्धारनारो प्रभु !*
म्हाराथी नहि अन्य पात्र जगमां, जोता जडे हे विभु !
मुक्ति मंगलस्थान ! तोय मुजने, ईच्छा न लक्ष्मी तणी,
आपो सम्यग्रत्न श्याम जीवने, तो तृप्ति थाये घणी.

बीजाना वैभव-विलास जोईने तमारा झुंपडानी शांति खोई नाखशो नहीं.

प्रभु पासे हृदयनी..... एक व्यथा

卐 *दया सिन्धु दया सिन्धु, दया करजे दया करजे,*
मने आ जंजीरोमांथी, हवे जल्दी छूटो करजे,
नथी आ ताप सहेवातो, भभूकी कर्मनी ज्वाळा,
वरसावी प्रेमनी धारा, हृदयनी आग बुझवजे...१

卐 *प्रभु ! जेवो गणो तेवो, तथापि बाळ तारो छुं,*
तने मारा जेवा लाखो, परंतु एक मारे तुं.

卐 *नथी शक्ति नीरखवानी, नथी शक्ति परखवानी,*
नथी तुज ध्याननी लगनी, तथापि बाळ तारो छुं...२

卐 *नथी तप जप में कीधां, नथी कोई दान पण दीधां,*
अधम रस्ता सदा लीधा, तथापि बाळ तारो छुं...३

卐 *अरिहंत देव हो प्यारां, गुना सहु माफ कर मारां,*
भूल्यो उपकार हुं तारां, तथापि बाळ तारो छुं...४

卐 *दया कर दुःख भव कापी, अक्षय ने शांतिपद आपी,*
प्रभु हुं छुं पुरो पापी, तथापि बाळ तारो छुं...५

卐 *दया कर हुं मुंझाउ छुं, सदा हैये रिबाउं छुं,*
प्रभु हुं ध्यान ध्याउं छुं, तथापि बाळ तारो छुं...६

संतोषीने कोण दुःखी करी शके ? कह्युं छे ने... संतोषी नर सदा सुखी !

पूजानां दुहा विभाग

प्रभु एक, पूजा अनेक...पूजात्रिक

अंगपूजा : *जळपूजा... चंदनपूजा... पुष्पपूजा...*

परमात्माना अंगने स्पर्शीने जे पूजा थाय ते अंगपूजा कहेवाय.
△ *जीवनमां आवतां विघ्नोनो नाश करनारी अने महाफळने आपनारी आ पूजाने* **विघ्नोपशामिनी पूजा** *कहेवाय छे.*

अग्रपूजा : *धुप-दीपक-अक्षत-नैवेद्य-फळ पूजा...*

परमात्मानी सन्मुख उभा रहीने जे पूजा थाय ते अग्रपूजा कहेवाय.
△ *मोक्ष मार्गनी साधनामां सहायक एवी सामग्रीनो अभ्युदय प्राप्त करावती आ पूजाने* **अभ्युदयकारिणी पूजा** *कहेवाय छे.*

भावपूजा : *स्तुति-चैत्यवंदन-स्तवन-गीत-गान-नृत्य...*

जेमां कोई द्रव्यनी जरुर नथी तेवी आत्माने भावविभोर बनाववानी पूजाने भावपूजा कहेवाय.
△ *मोक्षपदनी प्राप्ति एटले के संसारथी निवृत्ति अपावती आ पूजाने* **निवृत्तिकारिणी पूजा** *कहेवाय छे.*

धुप... दीपक... अग्रपूजा कर्या बाद अंगपूजा करवी ऊचित नथी. तेम छेल्ले चैत्यवंदननी क्रिया एटले के भावपूजा कर्या पछी अंग के अग्रपूजा करवी ऊचित नथी... अंगपूजा-अग्रपूजा कर्या पछी छेल्ले भावपूजा थाय ते शास्त्रोक्त क्रम छे ते साचववो.

आठ कर्मोनो क्षय करनार एवी... परमात्मानी अष्टप्रकारी पूजाना दुहा

१ जल पूजा

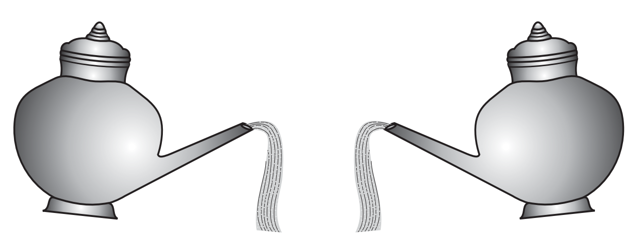

पंचामृत : शुद्ध दूध, दहीं, घी, साकर अने जळनुं मिश्रण
(अत्तर... वि. बीजा पण शुद्ध सुगंधी द्रव्यो तेमां भेळवी शकाय)

जल पूजानुं रहस्य

जल वडे... प्रक्षाल प्रभुजीनो थाय अने कर्मो आपणा... आत्मा परथी दूर थाय.

महत्वना थवुं सारुं छे, पण सारा थवुं वधु महत्त्वनुं छे.

नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ॥१॥

(आ सूत्र फक्त 'पुरुषोए' ज दरेक पूजानी पहेला बोलवुं.)

कळश बे हाथमां लईने बोलवानो दुहो

卐 *जल पूजा जुगते करो, मेल अनादि विनाश,*
जल पूजा फळ मुज होजो, मांगो एम प्रभु पास !

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्म-जरा-मृत्यु-निवारणाय श्रीमते जिनेन्द्राय जलं यजा महे स्वाहा. (२७ डंका वगाडवा)

दूधनो (पंचामृतनो) प्रक्षाल करती वखते बोलवानो दुहो

मेरुशिखर नवरावे हो सुरपति, मेरुशिखर नवरावे,
जन्मकाळ जिनवरजीको जाणी, पंचरुप करी आवे. हो...सु.१
रत्नप्रमुख अडजातिना कळशा, औषधि चूरण मिलावे,
क्षीरसमुद्र तीर्थोदक आणी, स्नात्र करी गुण गावे. हो...सु.२
एणी परे जिन प्रतिमाको नवण करी, बोधिबीज मानुं वावे,
अनुक्रमे गुण रत्नाकर फरसी, जिन उत्तम पद पावे. हो...सु.३

जल(पाणी)नो प्रक्षाल करती वखते बोलवानो दुहो

卐 *ज्ञान कळश भरी आतमा, समतारस भरपूर,*
श्री जिनने नवरावतां, कर्म थाये चकचूर !

मोत क्यारे'य कोईनी पण नानी के मोटी लांच स्वीकारतुं नथी.

② चंदन पूजा

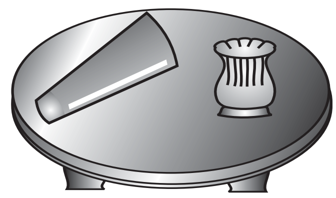

चंदन पूजानुं रहस्य

आ पूजा द्वारा............... आपणो आत्मा चंदन जेवो शांत अने शीतळ........ बने.

नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ॥१॥

卐 *शीतळ गुण जेहमां रह्यो, शीतळ प्रभु मुख रंग,*
आत्म शीतळ करवा भणी, पूजो अरिहा अंग !

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्म-जरा-मृत्यु-निवारणाय श्रीमते जिनेन्द्राय चंदनं यजा महे स्वाहा. (२७ डंका वगाडवा)

(सुखडथी विलेपन-पूजा करवी अने पछी केसरथी नवे अंगे पूजा करवी. नख केसरमां न बोळाय अने नख प्रभुने अडे नहि ते ध्यान राखवुं.)

संसारमां माणसोनी छत छे, पण... माणसाईनी भारे अछत छे.

③ पुष्प पूजा

पुष्प पूजानुं रहस्य

आ पूजा द्वारा....... आपणुं जीवन पुष्पनी जेम....... सुगंधित बने, अने सद्‌गुणोथी... सुवासित बने.

नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ॥१॥

卐 *सुरभि अखंड कुसुमग्रहि, पूजो गत संताप,*
सुम जंतु भव्य ज परे, करीये समकित छाप !

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्म-जरा-मृत्यु-निवारणाय श्रीमते जिनेन्द्राय पुष्पाणि यजामहे स्वाहा. (२७ डंका वगाडवा.)

卐 *पांच कोडीने फूलडे, पाम्या देश अढार,*
राजा कुमारपाळनो, वर्त्यो जय जयकार !

(सुंदर सुगंधवाळा अने अखंड पुष्पो चढाववा, नीचे पडेला तथा वासी पुष्पो चढाववा नहि.)

सुधरवानी ईच्छावाळा जीवने माटे क्यारेय मोडुं थयुं होतुं नथी.

④ धूप पूजा

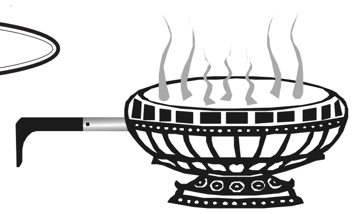

धूप पूजानुं रहस्य

आ पूजा द्वारा... धूपनी घटा जेम उंचे जाय तेम आपणो आत्मा... उच्च गतिनी प्राप्ति करे.

नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ॥१॥

卐 *ध्यानघटा प्रगटावीये, वामनयन जिन धूप,*
मिच्छत्त दुर्गंध दूर टळे, प्रगटे आत्म-स्वरुप !

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्म-जरा-मृत्यु-निवारणाय श्रीमते जिनेन्द्राय धूपं यजामहे स्वाहा. (२७ डंका वगाडवा.)

अमे धूपनी पूजा करीए रे, ओ मन मान्या मोहनजी,
प्रभु ! अमे धूपघटा अनुसरीये रे, ओ मन मान्या मोहनजी,
प्रभु ! नहीं कोई तमारी तोले रे, ओ मन मान्या मोहनजी,
प्रभु ! अंते छे शरण तमारुं रे, ओ मन मान्या मोहनजी.

(प्रभुजीनी डाबी बाजुए गभारानी बहार उभा रहीने शुद्ध अने सुगंधी धूप वडे धूप पूजा करवी.)

⑤ दीपक पूजा

दीपक पूजानुं रहस्य

आ पूजा द्वारा... मारा आत्माना अज्ञानरुपी अंधकारनो नाश थाओ अने ज्ञानरुपी दीपकनो प्रकाश थाओ.

नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ॥१॥

卐 *द्रव्य दीपक सुविवेकथी, करतां दुःख होय फोक,*
भाव प्रदीप प्रगट हुए, भासित लोकालोक !

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्म-जरा-मृत्यु-निवारणाय श्रीमते जिनेन्द्राय दीपं यजामहे स्वाहा. (२७ डंका वगाडवा)

(गभारानी बहार प्रभुजीनी जमणी बाजुए उभा रही दीपक पूजा करवी.)

आजनो युवान बापने छोडे, पण... दुर्गतिमां लई जनारा पापने न छोडे.

⑥ अक्षत पूजा

अक्षत पूजानुं रहस्य

चारगतिनी भव भ्रमणा टाळी, अजन्मा थवानी पूजा... एटले अखंड... अक्षत् पूजा

साथियानी जग्याए......... सुंदर गहुंली पण आलेखी शकाय, थोडीक गहुंलीओ पाना नं.१८० उपर आपेली छे.

धर्ममां संसारना कर्म न करो, पण संसारना कर्ममां अवश्य धर्म करो.

(थाळीमां चोखा लईने बोलवानो दुहो)

नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ॥१॥

卐 *शुद्ध अखंड अक्षत ग्रहि, नंदावर्त विशाल,*
पूरी प्रभु सन्मुख रहो, टाळी सकल जंजाल !

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्म-जरा-मृत्यु-निवारणाय श्रीमते जिनेन्द्राय अक्षतं यजामहे स्वाहा. (२७ डंका वगाडवा.)

साथियो करती वखते बोलवाना दुहा

अक्षत पूजा करतां थकां, सफळ करुं अवतार,
फळ मांगु प्रभु आगळे, तार तार मुज तार....१
सांसारिक फल मांगीने, रझड्यो बहु संसार,
अष्ट कर्म निवारवा, मांगुं मोक्षफळ सार....२
चिहुंगति भ्रमण संसारमां, जन्म मरण जंजाळ,
पंचमगति विण जीवने, सुख नहि त्रिहुं काळ.....३

त्रण ढगली अने सिद्धशिला करती वखते बोलवाना दुहा

दर्शन-ज्ञान-चारित्रना, आराधनथी सार,
सिद्धशिलानी उपरे, हो मुज वास श्रीकार.....४

दान देवाथी धन खूटतुं नथी, पण पुण्य खूटवाथी खूटे छे.

⑦ नैवेद्य पूजा

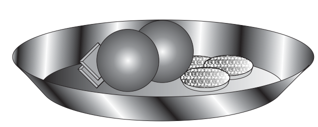

नैवेद्य पूजानुं रहस्य

आ पूजा द्वारा... अनंतकाळनी मारी आहारनी संज्ञाओनो... नाश थाओ अने अणाहारी पदनी मने... प्राप्ति थाओ.

नमोऽर्हत्सिध्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ॥ १ ॥

卐 *अणाहारी पद में कर्या, विग्गह गईय अनंत;*
दूर करी ते दीजीए, अणाहारी शिव संत !

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्म-जरा-मृत्यु-निवारणाय श्रीमते जिनेन्द्राय नैवेद्यं यजामहे स्वाहा. (२७ डंका वगाडवा.)

卐 *न करी नैवेद्य पूजा, न धरी गुरुनी शीख,*
लेशे परभवे असाता, घर घर मांगशे भीख !

(साथिया उपर साकर, पतासा अने घरनी बनावेली शुध्ध मिठाई चढाववी. बजारनी मिठाई, पीपर, चोकलेट के अभक्ष्य वस्तु मुकाय नहि.)

हे मानव ! तारा करेला कर्मो तारे ज भोगववानां छे.

(८) फळ पूजा

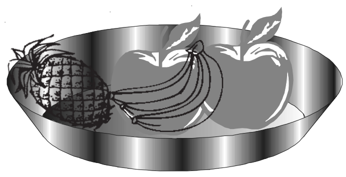

फळ पूजानुं रहस्य

आ पूजा द्वारा मुजने... शाश्वत... श्रेष्ठ... एवा मोक्ष फळनी... प्राप्ति थाओ.

नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ॥१॥

卐 *ईन्द्रादिक पूजा भणी, फल लावे धरी राग,*
पुरुषोत्तम पूजा करी, मांगे शिवफळ त्याग !

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्म-जरा-मृत्यु-निवारणाय श्रीमते जिनेन्द्राय फलं यजामहे स्वाहा. (२७ डंका वगाडवा.)

(श्रीफळ, बदाम, सोपारी, अने पाकां उत्तम फळो सिद्धशिला उपर मूकवा.)

खराब काम करतां हाथ अने खराब विचार करतां हैयुं कंपे छे खरुं आपणुं ?

चामर पूजानो दुहो

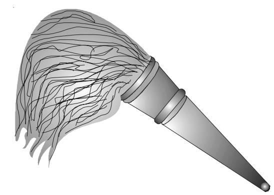

बे बाजु चामर ढाळे,
एक आगळ वज्र उलाळे,
जई मेरु धरी उत्संगे,
ईन्द्र चोसठ मळीया रंगे,
प्रभु पासनुं मुखडुं जोवा,
भवो भवनां पातिक खोवा.

दर्पण पूजानो दुहो

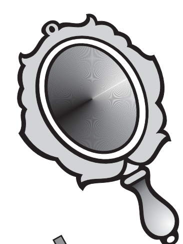

प्रभु दर्शन करवा भणी,
दर्पण पूजा विशाल,
आत्म दर्पणथी जुए,
दर्शन होय तत्काल.

पंखा पूजानो दुहो

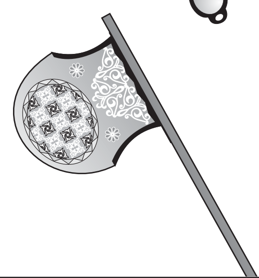

अग्नि कोणे एक यौवना रे,
रयणमय पंखो हाथ,
चलत शिबिका गावती रे,
सर्व सहेली साथ,
नमो नित्य नाथजी रे,

''मान पामे ते नहीं पण... मान पचावे ते साचा महात्मा छे.''

मारा प्रभुजीना नवांगी पूजा दुहा

१) ... अंगुठे. जल भरी संपुट पत्रमां, युगलिक नर पूजंत.
ऋषभ चरण अंगुठडे, दायक भवजल अंत.
२) .. ढींचणे. जानुबळे काउस्सग्ग रह्या, विचर्या देश विदेश,
खडा खडा केवळ लह्युं, पूजो जानुं नरेश.
३) .... कांडे. लोकांतिक वचने करी, वरस्यां वरसी दान,
कर कांडे प्रभु पूजना, पूजो भवि बहुमान.
४) .... खभे. मान गयुं दोय अंशथी, देखी वीर्य अनंत,
भुजा बळे भवजल तर्या, पूजो खंध महंत.
५) . शिखाए. सिद्धशिला गुण उजळी, लोकांते भगवंत,
वसीया तेणे कारण भवि, शिरशिखा पूजंत.
६) . कपाळे. तीर्थंकर पद पुण्यथी, त्रिभुवन जन सेवंत,
त्रिभुवन तिलक समा प्रभु, भाल तिलक जयवंत.
७) ..... कंठे. सोळ प्रहर प्रभु देशना, कंठे विवर वर्तुल,
मधुरध्वनि सुरनर सुणे, तिणे गळे तिलक अमूल.
८) .... हृदये. हृदय कमल उपशम बळे, बाळ्या राग ने रोष,
हिम दहे वनखंडने, हृदय तिलक संतोष.
९) .... नाभि. रत्नत्रयी गुण ऊजळी, सकल सुगुण विश्राम,
नाभि कमळनी पूजना, करतां अविचल धाम.
उपसंहार .... उपदेशक नवतत्त्वनां, तेणे नव अंग जिणंद,
पूजो बहुविध रागशुं, कहे शुभवीर मुणींद.

पूजा करतां समये भाववानी भावना

(1) अंगुठे पूजा करतां... भाववुं के... हे प्रभु !
युगलिकोए आपश्रीना चरणना अंगुठे अभिषेक करी विनय दाखवी आत्म कल्याण कर्युं. ते रीते संसार सागर तारनारा आपना चरणना अंगुठानी पूजा करवाथी मारामां पण विनय, नम्रता अने पवित्रतानो प्रवाह वहो.

(2) जानु(ढींचण) पर पूजा करतां... भाववुं के... हे प्रभु !
आ जानुना बळे उभा रहीने अप्रमत्तपणे साधना करी आपे केवळज्ञान मेळव्युं । आ जानुना बळे देशविदेश विचरी घणां भव्य आत्माओनुं कल्याण कर्युं. आपना जानुनी पूजा करतां मारो प्रमाद दूर थाओ. अने मने अप्रमत्तपणे आराधना करी आत्म कल्याण करवानी शक्ति मळो.

(3) कांडा पर पूजा करतां... भाववुं के... हे प्रभु !
दीक्षा लेता पहेला आपे आ हाथथी स्वेच्छाए लक्ष्मी-अलंकार-वस्त्र आदिनुं १ वर्ष सुधी दान आप्युं. केवळज्ञान बाद आ हाथेथी अनेक मुमुक्षुने रजोहरणनुं दान आप्युं. आपना हाथनी पूजा करतां मारी कृपणता... लोभवृत्तिनो नाश थाओ, अने यथाशक्ति दान देवाना मुजने भाव थाओ.

''मानवीनी ईच्छानुं खप्पर कदापि भरातुं ज नथी.''

(4) खभा पर पूजा करतां... भाववुं के...,
अनंत ज्ञान अने अनंत शक्तिना स्वामी हे प्रभु ! भुजाबळे आप स्वयं संसार सागर तर्या छतां आपनामां मान... अहंकारनो जराय अंश पण देखातो नथी. आपे आ खभेथी अभिमानने रवाना कर्युं तेम आ खभानी पूजाथी मारा पण अहंकारनो नाश थाओ अने नम्रताना गुणोनो मारामां वास थाओ.

(5) मस्तके शिखा पर पूजा करतां... भाववुं के... हे प्रभु !
आत्मसाधना तथा परहितमां सदाय लयलीन एवा आपे लोकना सौथी उपरना छेडे सिध्धशिला पर कायम माटे वास कर्यो, आपनी कायाना सौथी उपरना छेडे रहेली मस्तकनी शिखाना पूजनथी मने एवुं बळ मलो के हुं पण हर पळे आत्मसाधना तथा परहितना चिंतनमां लीन रही जल्दीथी लोकना अंते वास मेळवी आपना जेवो बनी शकुं.

(6) ललाटे पूजा करती वखते... भाववुं के... हे प्रभु !
तीर्थंकर नामकर्मनां पुण्यना प्रभावे त्रणे भुवनमां आप पूजनीय छो. आप त्रण लोकनी लक्ष्मीना तिलक समान छो. आपना ललाटनी पूजाना प्रभावे मने एवुं बळ मळो के जेथी हुं ललाटना लेख अर्थात् कर्म अनुसार मळेला सुखमां राग के दु:खमां द्वेष न करुं, अविरत आत्मसाधना करतो आपनी जेम पुण्यानुबंधी पुण्यनो स्वामी बनुं.

बीजाने दु:खी करी पोते सुखी थशे तेम मानवुं ते घोर अज्ञान छे.

(7) कंठे तिलक करतां... भाववुं के... हे प्रभु !
आपे आ कंठमांथी जगत्उद्धारक वाणी प्रकाशीने जगत पर अनुपम करुणा अने उपकार कर्यो छे, आपना कंठनी पूजाथी हुं ए वाणीनी करुणाने झीलनारो बनुं अने मारामां एवी शक्ति प्रगटो के... जेथी मारी वाणीथी... मारुं अने सौनुं हित थाय.

(8) हृदये पूजा करतां... भाववुं... के... हे प्रभु !
राग... द्वेष... विगेरे दोषोने बाळी मुकी आपे आ हृदयमां उपशमभाव छलकाव्यो छे. निस्पृहता-कोमळता अने करुणा भरेला आपना हृदयनी पूजाना प्रभावे मारा हैये पण सदाय नि:स्पृहता-प्रेम-करुणा अने मैत्री आदि भावनानो धोध वहो. मारुं हृदय पण सदाय उपशमभावथी भरपुर रहो.

(9) नाभि पर पूजा करतां... भाववुं के... हे प्रभु !
आपे श्वासोश्वासने नाभिमां स्थिर करी... मनने आत्मानां शुद्ध स्वरुपमां जोडी... उत्कृष्टसमाधि सिद्ध करी, अनंत दर्शन-ज्ञान-चारित्रनां-गुणोने प्रगट कर्या छे. निर्मळ अेवी आपनी नाभिना पूजनथी मने पण अनंत दर्शन-ज्ञान-चारित्रना... आदि गुणोने प्रगट करवानुं सामर्थ्य प्राप्त थाओ. नाभिना आठ रुचक प्रदेशनी जेम मारा सर्व आत्म प्रदेशो पण शुद्ध थाओ.

उपसंहार : *आपणां आत्मानां कल्याण माटे, नवतत्वनां उपदेशक एवा प्रभुजीनां नव अंगोनी पूजा विधिथी... रागथी... भावथी... करीए, एवुं पूज्य उपा.* **वीरविजयजी महाराजा** *कहे छे.*

मुद्रात्रिक

१.	**योगमुद्रा**	*ईरियावहियं, चैत्यवंदन, नमुत्थुणं, स्तवन, अरिहंत चेईआणं...*

१. बे हाथ जोडी बन्ने हाथनी आंगळीओ एकबीजाना आंतरामां गोठवी, २. बन्ने हाथनी कोणीने पेट उपर लगाडवी. ३. मस्तक थोडुं नमावी राखवानी आ मुद्राने **योगमुद्रा** *कहेवाय.*

२.	**मुक्ताशुक्ति मुद्रा**	*जावंति चेईआईं, जावंत के वि साहू अने आभवमखंडा सुधीना अडधा जयवीयराय*

१. बे हाथ जोडी दशेय आंगळीओनां टेरवा एकबीजाने सामसामे अडे, २. बन्ने हथेळीओमां अंदरथी पोलाण रहे अने बहारथी मोतीना छीप जेवो आकार बनाववो ३. बे हाथ उंचा करीने ललाटे अडाडवानी आ मुद्राने **मुक्ताशुक्ति मुद्रा** *कहेवाय.*

३.	**जिनमुद्रा**	*नवकार अथवा लोगस्स वि... काउस्सग्गमां*

कार्योत्सर्ग मुद्रा ते ज जिनमुद्रा. १. सीधा उभा रही बे पगनी पानी वच्चे आगळथी चार आंगळ अने २. पाछळथी तेना करतां कंईक ओछुं अंतर राखवुं. ३. बन्ने हाथना पंजा ढींचण तरफ रहे तेम लटकता राखवा. ४. दृष्टिने जिनबिंब अथवा नासिकाना अग्रभाग उपर स्थिर करवानी आ मुद्राने **जिनमुद्रा** *कहेवाय.*

हे जीव ! जीववा माटे कमाववानुं, के कमावा माटे जीववानुं.

1. योगमुद्रा
चित्र

2. मुक्ताशुक्ति मुद्रा
चित्र

3. जिनमुद्रा
चित्र

उचीत मुद्रा हृदयमां शुभ भावो लाववामां सहायक बने छे.

चैत्यवंदन विधि विभाग

(नीचे मुजब प्रथम ईरियावहि करवी)
(नीचेनुं सूत्र बोली एक खमासमण आपवुं)

卐 ईच्छामि खमासमण सूत्र 卐 *(योग मुद्रामां)*

ईच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए, निसीहिआए, मत्थएण वंदामि.

भावार्थ : *आ सूत्र द्वारा देवाधिदेव परमात्माने तथा पंचमहाव्रतधारी साधु भगवंतोने वंदना थाय छे.*

(पछी नीचेना सूत्रो उभा रहीने बोलवा)

卐 ईरियावहियं सूत्र 卐 *(योग मुद्रामां)*

ईच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! ईरियावहियं पडिक्कमामि ?
ईच्छं, ईच्छामि पडिक्कमिउं ॥१॥
इरियावहियाए, विराहणाए ॥२॥
गमणागमणे ॥३॥
पाणक्कमणे बीअक्कमणे हरियक्कमणे, ओसा उत्तिंग पणग दग, मट्टी मक्कडा संताणा संकमणे ॥४॥
जे मे जीवा विराहिया, ॥५॥

दु:ख वध्युं नथी, पण सहनशक्ति घटी छे तेथी दु:ख वधी गयुं लागे छे.

एगिंदिया, बेईंदिया, तेईंदिया, चउरिंदिया,
पंचिंदिया ॥६॥
अभिहया, वत्तिया, लेसिया, संघाईया,
संघट्टिया, परियाविया किलामिया, उद्दविया, ठाणाओठाणं संकामिया, जीवियाओ ववरोविया,
तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥७॥

भावार्थ : *आ सूत्रथी हालता-चालता कोईपण जीवोने जाणता के अजाणता विराधना थई होय के पाप लाग्या होय ते दूर थाय छे.*

卐 तस्स उत्तरी सूत्र 卐 *(योग मुद्रामां)*

तस्स उत्तरीकरणेणं, पायच्छित्तकरणेणं, विसोहिकरणेणं, विसल्लीकरणेणं, पावाणं कम्माणं निग्घायणट्ठाए, ठामिकाउस्सग्गं.

भावार्थ : *आ सूत्र द्वारा ईरियावहियं सूत्रथी बाकी रहेला पापोनी विशेष शुद्धि थाय छे.*

卐 अन्नत्थ सूत्र 卐 (योग मुद्रामां)

अन्नत्थ ऊससिएणं, निससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाईएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलिए, पित्तमुच्छाए ॥१॥

फोगट चिंता करवाथी रुप, बळ अने ज्ञाननो नाश थाय छे.

सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं,
सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं ॥२॥
एवमाईएहिं आगारेहिं, अभग्गो, अविराहिओ,
हुज्ज मे काउस्सग्गो ॥३॥
जाव अरिहंताणं, भगवंताणं, नमुक्कारेणं
न पारेमि ॥४॥
ताव कायं ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं अप्पाणं
वोसिरामि ॥५॥

भावार्थ : *आ सूत्रमां काउस्सग्गना सोळ आगारनुं वर्णन तथा केम उभा रहेवुं ते बतावेल छे.*

*(पछी '**जिनमुद्रा**'मां एक लोगस्सनो चंदेसु निम्मलयरा सुधीनो अने न आवडे तो चार नवकारनो काउस्सग्ग करवो, पछी काउस्सग्ग पार्या बाद बे हाथ जोडी प्रगट लोगस्स कहेवो)*

卐 लोगस्स सूत्र 卐 (योग मुद्रामां)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे,
अरिहंते कित्तइस्सं चउविसंपि केवली ॥१॥
उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च, पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥२॥

मनमां सर्व प्रत्ये शुभभावना भाववाथी शांतिनी अनुभूति अवश्य थशे.

सुविहिं च पुप्फदंतं, सिअल सिज्जंस वासुपुज्जं च, विमल मणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि. ॥३॥
कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमि जिणं च वंदामि रिट्ठनेमि, पासं तह वद्धमाणं च. ॥४॥
एवंमए अभिथुआ, विहुय रयमला पहीण जरमरणा, चउविसंपि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥५॥
कित्तिय-वंदिय महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा, आरुग्गबोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिन्तु ॥६॥
चंदेसु निम्मलयरा, आईच्चेसु अहियं पयासयरा,
सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥७॥

भावार्थ : *आ सूत्रमां चोवीस तीर्थंकरोनी नामपूर्वक स्तुति करवामां आवी छे.*

(पछी त्रण वार खमासमण दई, डाबो पग (ढींचण) जमीन उपर स्थापीने हाथ जोडीने)

ईच्छाकारेण संदिसह भगवन्! चैत्यवंदन करुं ? ईच्छं कही 'सकलकुशल' कही चैत्यवंदन करवुं. (योग मुद्रामां)

जीभमां राखे झेर... तेने आखा जगतथी थाय वेर...

सकल कुशल वल्लि-पुष्करावर्त मेघो,
दुरित तिमिर भानुः कल्पवृक्षोपमानः
भवजलनिधि पोतः सर्व संपत्ति हेतुः,
स भवतु सततं वः
श्रेयसे शांतिनाथः श्रेयसे पार्श्वनाथः

श्री सामान्य जिन चैत्यवंदन

(आ पुस्तकमां आपेल बीजा चैत्यवंदन पण बोली शकाय)

तुज मुरतिने निरखवा, मुज नयणां तलसे,
तुम गुण गणने बोलवा, रसना मुज हरखे...१
काया अति आनंद मुज, तुम युग पद फरसे,
तो सेवक तार्या विना, कहो किम हवे सरसे...२
एम जाणीने साहिबा ए, नेक नजर मोहे जोय,
'ज्ञानविमल' प्रभु नजरथी, ते शुं ? जे नवि होय...३

卐 जंकिंचि सूत्र 卐 (योग मुद्रामां)

जंकिंचि नामतित्थं, सग्गे पायालि माणुसे लोए,
जाईं जिणबिंबाईं, ताईं सव्वाईं वंदामि. ॥ १ ॥

भावार्थ : *आ सूत्र द्वारा त्रणे लोकमां विद्यमान नामरुपी तीर्थो अने जिन प्रतिमाओने नमस्कार करवामां आवेल छे.*

धर्मनी बधी आराधनाने निष्फळ बनाववानुं काम हैयामां रहेला मोहराजानुं छे.

卐 नमुत्थुणं सूत्र 卐 (योग मुद्रामां)

नमुत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं. ॥ १ ॥
आईगराणं तित्थयराणं, सयंसंबुद्धाणं, ॥ २ ॥
पुरिसुत्तमाणं, पुरिससीहाणं, पुरिसवरपुंडरिआणं,
पुरिसवर गंधहत्थीणं. ॥ ३ ॥
लोगुत्तमाणं, लोगनाहाणं, लोगहिआणं, लोगपईवाणं,
लोगपज्जोअगराणं. ॥ ४ ॥
अभयदयाणं, चक्खुदयाणं, मग्गदयाणं, शरणदयाणं,
बोहिदयाणं. ॥ ५ ॥
धम्मदयाणं, धम्मदेसयाणं, धम्मनायगाणं, धम्मसारहीणं,
धम्म वर चाउरंत-चक्कवट्टीणं. ॥ ६ ॥
अप्पडिहयवर-नाण-दंसणधराणं, वियट्ट-छउमाणं ॥ ७ ॥
जिणाणं जावयाणं, तिन्नाणं तारयाणं, बुद्धाणं बोहयाणं,
मुत्ताणं मोअगाणं ॥ ८ ॥
सव्वन्नूणं, सव्वदरिसीणं, सिव-मयल-मरुअ-मणंत मक्खय-मव्वाबाह-मपुणराविति-सिद्धिगई-नामधेयं, ठाणं संपत्ताणं,
(मस्तक नमावतां) नमो जिणाणं, जिअभयाणं. ॥ ९ ॥
जे अ अईया सिद्धा, जे अ भविस्संतिणागए काले,
संपई अ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि. ॥ १० ॥

आपणी नानकडी मदद, को' कना आखा जीवनने समृद्ध बनावी शके छे.

भावार्थ : *आ सूत्रमां अरिहंत परमात्माना गुणोनुं वर्णन छे. अने शक्र-ईन्द्र महाराजा प्रभुनी स्तुति करती वखते आ सूत्र बोले छे.*

(नीचेनुं सूत्र ललाट उपर जोडेला हाथे मुक्ताशुक्ति मुद्रामां बोलवुं)

卐 जावंति चेईआइं सूत्र 卐 (मुक्ताशुक्ति मुद्रामां)

जावंति चेईआईं, उड्ढे अ अहे अ तिरिअलोए अ,
सव्वाईं ताईं वंदे, ईह संतो तत्थ संताईं ॥१ ॥

भावार्थ : *आ सूत्र द्वारा त्रणे लोकमां रहेली जिन प्रतिमाजीओने नमस्कार करवामां आवे छे.*

(नीचेनुं सूत्र बोली एक खमासमण देवुं)
ईच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए
निसीहिआए मत्थएण वंदामि.

卐 जावंत केवि साहू सूत्र 卐 (मुक्ताशुक्ति मुद्रामां)

जावंत केवि साहू, भरहेरवयमहाविदेहे अ,
सव्वेसिं तेसिं पणओ, तिविहेण तिदंडविरयाणं ॥१ ॥

भावार्थ : *आ सूत्र द्वारा भरत, ऐरवत अने महाविदेह त्रणेय क्षेत्रमां विचरतां सर्वे साधु साध्वीजी भगवंतोने नमस्कार करवामां आवे छे.*

योगी के पास जाकर योगी न बन शको तो, 'उपयोगी' तो अवश्य बनो.

(नीचेनुं सूत्र फक्त पुरुषोए बोलवुं) (योग मुद्रामां)
नमोऽर्हत्-सिद्धाचार्योपाध्याय-सर्व-साधुभ्यः ॥ १ ॥

भावार्थ : *आ सूत्रमां पंच परमेष्ठी भगवंतोने नमस्कार करवामां आव्यो छे.*

(आ पछी नीचेनुं स्तवन अथवा आ पुस्तकमांथी सुंदर अने भाववाही स्तवनोना संग्रहमांथी कोईपण एक स्तवन गावुं अथवा उवसग्गहरं सूत्र पण बोली शकाय.)

श्री सामान्य जिन स्तवन (योग मुद्रामां)

आज मारा प्रभुजी ! सामुं जुओने, सेवक कहीने बोलावो रे,
एटले हुं मनगमतुं पाम्यो, रुठडां बाळ मनावो.
..... मारा सांई रे.... आज...१
पतितपावन शरणागतवत्सल, ए जश जगमां चावो रे,
मन रे मनाव्या विण नहीं मूकुं, एही ज मारो दावो... मारा
कबजे आव्या हवे नहि मूकुं, जिहां लगे तुम सम थावो रे,
जो तुम ध्यान विना शिव लहीए, तो ते दाव बतावो... मारा
महागोप ने महानिर्यामक, ईणि परे बिरुद धरावो रे,
तो तुम आश्रितने उद्धरतां, बहुं रे बहुं शुं कहावो... मारा

भाव, श्रद्धा अने समर्पण ए तो मोक्ष मंदिरना पगथीया छे.

'ज्ञानविमल' *गुरु निधिनो महिमा, मंगल ओहि वधावो रे,*
अचल-अभेद पणे अवलंबी, अहोनिश एहि दिल ध्यावुं..मारा

卐 उवसग्ग-हरं स्तोत्र (योगमुद्रामां) 卐

उवसग्ग-हरं पासं, पासं वंदामि कम्म-घण-मुक्कं,
विसहर-विसनिन्नासं, मंगल-कल्लाण-आवासं...१
विसहरफुलिंग-मंतं, कंठे धारेई जो सया मणुओ,
तस्स गह-रोग-मारी-दुट्ठ-जरा जंति उवसामं...२
चिट्ठउ दूरे मंतो, तुज्झ पणामो वि बहु-फलो होई,
नर-तिरिएसु वि जीवा, पावंति न दुक्ख-दोगच्चं...३
तुह सम्मत्ते लद्धे, चिंतामणि-कप्प-पायव-ब्भहिए,
पावंति अविग्घेणं, जीवा अयरामरं ठाणं...४
ईअ संथुओ महायस !, भत्तिब्भरनिब्भरेण हियएण,
ता देव !, दिज्ज बोहिं, भवे भवे पास ! जिणचंद !...५

भावार्थ : *श्री पार्श्वनाथ प्रभुनां गुणोनी स्तुतिरुप आ स्तोत्र श्री भद्रबाहुस्वामीनुं रचेलुं छे. ते सर्व विघ्नोनो नाश करनारुं छे.*

(बहेनोए हाथ उंचा करवा नहीं)
जोडेला हाथ ललाटे लगाडीने 'मुक्ताशुक्ति' मुद्रामां नीचेनुं सूत्र बोलवुं.

बोल्या पहेला सो वार विचारे ते बुद्धिमान अने, बोल्या पछी पस्ताय ते मूर्ख.

卐 जय वीयराय सूत्र 卐 (मुक्ताशुक्ति मुद्रामां)

जय वीयराय ! जगगुरु ! होउ ममं तुह पभावओ भयवं !
भवनिव्वेओ मग्गा-णुसारिआ ईट्ठ फलसिद्धि...१
लोगविरुद्धच्चाओ, गुरुजणपूआ, परत्थकरणं च,
सुहगुरुजोगो तव्वयण-सेवणा आभवमखंडा...२

(बाकीनुं सूत्र बे हाथ नीचे करीने 'योगमुद्रा'मां बोलवुं.)

वारिज्जई जईवि नियाण-बंधणं वीयराय ! तुह समये,
तह वि मम हुज्ज सेवा, भवे भवे तुम्ह चलणाणं...३
दुक्खक्खओ कम्मक्खओ, समाहिमरणं च बोहिलाभो अ,
संपज्जउ मह एअं, तुह नाह ! पणामकरणेणं...४
सर्व-मंगल-मांगल्यं, सर्व कल्याणकारणम्,
प्रधानं सर्व-धर्माणां, जैनं जयति शासनम्...५

भावार्थ : *आ सूत्रमां प्रभु पासे उत्तम गुणोनी मांगणी, दुःखनो क्षय, कर्मनो क्षय, समाधि मरण अने समकित माटे प्रार्थना करवामां आवी छे.*

(पछी उभा थईने)

卐 अरिहंत चेईआणं सूत्र 卐 (योग मुद्रामां)

अरिहंतचेईआणं, करेमि काउस्सग्गं १. वंदणवत्तिआए, पुअणवत्तिआए, सक्कारवत्तिआए, सम्माणवत्तिआए,

भारतनी आर्य संस्कृति, 'लेवा' करता 'देवामां' (आपवामां) वधु माने छे.

बोहिलाभवत्तिआए, निरुवसग्गवत्तिआए ! २.
सद्धाए, मेहाए, धिईअे, धारणाए, अणुप्पेहाए, वड्ढमाणीए, ठामि काउस्सग्गं. ३.

भावार्थ : *आ सूत्रमां ज्यां चैत्यवंदन करतां होईअे ते देरासरनी तमाम प्रतिमाओने वंदन करवामां आवे छे.*

卐 अन्नत्थ सूत्र 卐 (योग मुद्रामां)

अन्नत्थ ऊससिएणं, निससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाईएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए पित्तमुच्छाए ॥ १ ॥
सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेल-संचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं. ॥ २ ॥
एवमाईअेहिं आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो. ॥ ३ ॥
जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि, ताव कायं ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं, अप्पाणं वोसिरामि ॥ ४ ॥

(कहीने एक नवकारनो काउस्सग्ग करी, पारी बे हाथ जोडीने)

नमोऽर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधुभ्यः ॥ १ ॥

(कही थोय कहेवी)

मनने ज्यां साची अने सात्विक शांति मळे ते ज साचो उपाश्रय छे.

प्रह उठी वंदु, ऋषभदेव गुणवंत,
प्रभु बेठा सोहे, समवसरण भगवंत,
त्रण छत्र बिराजे, चामर ढाळे ईंद्र,
जिनना गुण गावे, सुरनर नारीनां वृंद

(पछी खमासमण आपी पच्चक्खाण लेवुं)

अने... छेल्ले... भावपूजानी पूर्णाहुति करतां... करतां... नीचेनी भाववाही **'स्तुति'** *बोली सुंदर* **'भावना'** *भाववी.*

आव्यो शरणे तमारा जिनवर ! करजो, आश पूरी अमारी,
नाव्यो भवपार म्हारो तुम विण जगमां, सार ले कोण मारी,
गायो जिनराज ! आजे हरख अधिकथी, परम आनंदकारी,
पायो तुम दर्शनासें भवभय भ्रमणा, नाथ ! सर्वे अमारी.
भवोभव तुम चरणोनी सेवा, हुं तो मांगु छुं देवाधिदेवा,
सामुं जुओने सेवक जाणी, एवी **'उदयरत्ननी'** *वाणी.*
जिने भक्ति र्जिने भक्ति, र्जिने भक्ति र्दिने दिने,
सदा मेऽस्तु, सदा मेऽस्तु, सदा मेऽस्तु भवेभवे.
उपसर्गाः क्षयं यान्ति, छिद्यन्ते विघ्नवल्लयः
मनः प्रसन्नतामेति, पूज्यमाने जिनेश्वरे.
सर्व मंगल मांगल्यम्, सर्व कल्याण कारणम्,
प्रधानं सर्व धर्माणां, जैनं जयति शासनम्.

(पछी खमासमण आपी जमणो हाथ जमीन पर स्थापी अविधि आशातनानुं मिच्छा मि दुक्कडं मांगवुं.)

मनगमती वस्तु हाजर, छतां भोगववानी ईच्छाने रोकवी ते 'महातप' छे.

चैत्यवंदन विभाग-४८

१. श्री सिद्धाचलजीनुं चैत्यवंदन

श्री शत्रुंजय सिद्धक्षेत्र, दीठे दुर्गति वारे,
भावधरीने जे चढे, तेने भवपार उतारे...१
अनंत सिद्धनो एह ठाम, सकल तीर्थनो राय,
पूर्व नव्वाणुं ऋषभदेव, ज्यां ठविया प्रभु पाय...२
सुरजकुंड सोहामणो, कवडजक्ष अभिराम,
नाभिराया कुलमंडणो, जिनवर करुं प्रणाम...३

२. श्री सिद्धाचलजीनुं चैत्यवंदन

सोना रुपाना फुलडे, सिद्धाचल वधावो,
ध्यान धरो दादातणुं, आनंद मनमां लावो...१
पुजाए पावन थया, अम मन निर्मळ देह,
रचना रचुं शुभ भावथी, करुं कर्मनो छेह...२
अभव्यने दादा वेगळा, भव्यने है डे हजुर,
तन मन ध्यान अेक लगनथी, कीधा कर्म चकचूर...३
कांकरे कांकरे सिद्ध थया ए, सिद्ध अनंतनुं ठाम,
शाश्वत गिरिवर पूजतां, जीव पामे विश्राम...४

'भूल' माफ थई शके, पण 'भूल' नो बचाव तो कदापि नहि !

दादा दादा हुं करुं, दादा वसीया दूर,
द्रव्यथी दादा वेगळा, भावथी है डे हजुर...५
दुषम काले पूजतां, ईंद्र धरी बहु प्यार,
ते प्रतिमाने वंदना, श्वासमांही सो वार...६
रायण पगले पूजतां ए, रत्न प्रतिमा ईंद्र,
ज्योतिमां ज्योति मीले, पूजे भवि सुखकंद...७
ऋद्धिसिद्धि घर संपजे ए, पहोंचे मननी आश,
त्रिकरण शुद्धे पूजतां, '**ज्ञानविमल**' प्रकाश...८

३. श्री सिद्धाचलजीनुं चैत्यवंदन

विमल-केवल-ज्ञान कमला, कलित-त्रिभुवन-हितकरं,
सुरराज-संस्तुत-चरणपंकज, नमो आदिजिनेश्वरं...१
विमलगिरिवर श्रृंगमंडण, प्रवर गुणगण भूधरं,
सुर-असुर-किन्नर कोडी सेवित, नमो आदिजिनेश्वरं...२
करती नाटक किन्नरी गण, गाय जिनगुण मनहरं,
निर्जरावली नमो अहोनिश, नमो आदिजिनेश्वरं...३
पुंडरिक-गणपति सिद्धि साधि, कोडीगण मुनि मनहरं,
श्री विमलगिरिवर श्रृंग सिद्धा, नमो आदिजिनेश्वरं...४

माणस 'उंमर लायक' बनी जाय छे पण 'गुणथी लायक' बहु ओछा बने छे.

निज साध्य साधक सुर मुनिवर, कोडीअनंत ए गिरिवरं,
मुक्तिरमणी वर्या रंगे, नमो आदिजिनेश्वरं...५
पाताल नर सुरलोकमांहि, विमलगिरिवर तो परं,
नहीं अधिक तीरथ तीर्थपति कहे, नमो आदिजिनेश्वरं...६
ईम विमलगिरिवर शिखरमंडण, दु:ख विहंडण ध्याईए,
निज शुद्ध सत्ता साधनार्थं, परमज्योति निपाईए...७
जित मोह कोह विछोह निद्रा, परमपद स्थित जयकरं,
गिरिराज सेवा करण तत्पर, 'पद्मविजय' सुहितकरं...८

४. पुंडरीकस्वामीनुं चैत्यवंदन

आदिश्वर जिनरायनो, गणधर गुणवंत,
प्रगट नाम पुंडरिक जास, महीमांहे महंत...१
पंच कोडी साथे मुणींद, अणसण तिहां कीध,
शुक्लध्यान ध्याता अमूल, केवल वर लीध...२
चैत्री पूनमने दिने ए, पाम्या पद महानंद,
ते दिनथी पुंडरिकगिरि, नाम 'दान' सुखकंद...३

५. श्री रायण पगलानुं चैत्यवंदन

एह गिरि उपर आदि देव, प्रभुप्रतिमा वंदो,
रायण हेठे पादुका, पूजीने आणंदो...१

जीभना 'टेस्ट' माटे जींदगीने 'वेस्ट' करनाराओमां आपणो तो नंबर नथी ने ?

एह गिरिनो महिमा अनंत, कुण करे वखाण,
चैत्री पूनमने दिने, तेह अधिको जाण...२
एह तीरथ सेवो सदा, आणी भक्ति उदार,
श्री शत्रुंजय सुखदायको, '**दानविजय**' जयकार...३

६. श्री सामान्य जिन चैत्यवंदन

जयजय श्री जिनराज आज, मळीयो मुज स्वामी,
अविनाशी अकलंक रुप, जग अंतरजामी...१
रुपारुपी धर्म देव, आतम आरामी,
चिदानंद चेतन अचिंत्य, शिवलीला पामी...२
सिद्ध बुद्ध तुज वंदताअे, सकल सिद्ध वर बुद्ध,
राम प्रभु ध्याने करी, प्रगटे आतम शुद्ध...३
काल बहु स्थावर गयो, भमियो भवमांही,
विक्लेन्द्रियमांही वस्यो, स्थिरता नहीं क्यांहि...४
तिर्यंच पंचेन्द्रियमांही देव, कर्मे हुं आव्यो,
करी कुकर्म नरके गयो, तुम दरिशन नवि पायो...५
एम अनंतकाळे करी ए, पाम्यो नर अवतार,
हवे जगतारक तुं मल्यो, भवजल पार उतार...६

बीजाना माईनस पोईन्ट जोवामां, केटलो बधो आनंद आवे छे आपणने !

७. श्री सामान्य जिननुं चैत्यवंदन

परमेश्वर परमात्मा, पावन परमिट्ठ,
जय जगगुरु देवाधिदेव, नयणे में दिट्ठ...१
अचल अकल अविकार सार, करुणारस सिंधु,
जगति जन आधार एक, निष्कारण बंधु...२
गुण अनंत प्रभु ! ताहरा ए, किमहि कह्या नवि जाय,
'रामप्रभु' जिन ध्यानथी, चिदानंद सुख थाय...३

८. चोवीस जिनना वर्णनुं चैत्यवंदन

पद्मप्रभ ने वासुपूज्य, दोय राता कहीए,
चंद्रप्रभ ने सुविधिनाथ, दोय उज्जवळ लहीए...१
मल्लिनाथ ने पार्श्वनाथ, दोय नीला निरख्या,
मुनिसुव्रत ने नेमनाथ, दोय अंजन सरिखा...२
सोळे जिन कंचन समा ए, एवा जिन चोवीस,
धीरविमल पंडित तणो, '**ज्ञानविमल**' कहे शिष्य...३

९. श्री चोवीस जिननुं चैत्यवंदन

ऋषभ, अजित, संभव, नमो, अभिनंदन जिनराज,
सुमति, पद्म, सुपास जिन, चंद्रप्रभ महाराज...१

जेनी तृष्णा मटती नथी, ते व्यक्ति अत्यंत दरिद्र (गरीब) छे.

सुविधि, शीतल, श्रेयांसजिन, वासुपूज्य सुखवास,
विमल, अनंत, श्रीधर्मजिन, शांतिनाथ पूरे आश...२
कुंथु, अर ने मल्लिजिन, मुनिसुव्रत जगनाथ,
नमि, नेमि, पारस, वीर, साचो शिवपुर साथ...३
द्रव्य भावथी सेवीए, आणी मन उल्लास,
आतम निर्मल कीजीए, जिम पामीजे शिववास...४
एम चोवीस जिन समरतां ए, पहोंचे मननी आश,
'अमीकुमर' एणी परे भणे, ते पामे लीलविलास...५

१०. श्री पंच परमेष्ठीनुं चैत्यवंदन

बारगुण अरिहंत देव, पणमिजे भावे,
सिद्ध आठ गुण समरतां, दुःख दोहग जावे...१
आचारज गुण छत्रीस, पच्चवीस उवज्झाय,
सत्ताविश गुण साधुना, जपतां शिव सुख थाय...२
अष्टोत्तर शत गुण मलीए, एम समरो नवकार,
धीरविमल पंडित तणो, 'नय' प्रणमे नित्य सार...३

११. श्री पंच तीर्थनुं चैत्यवंदन

आज देव अरिहंत नमुं, समरु तारुं नाम,
ज्यां ज्यां प्रतिमा जिनतणी, त्यां त्यां करुं प्रणाम. १

शत्रु करतां मित्रने क्षमा आपवानुं काम वधु कपरु छे.

शत्रुंजय श्री आदिदेव, नेम नमुं गिरनार,
तारंगे श्री अजितनाथ, आबु रिखव जुहार...२
अष्टापदगिरि उपरे, श्री जिन चोविशे जोय,
मणिमय मूरत मानशुं, भरते भरावी सोय...३
समेत्तशिखर तीरथ वडुं ए, ज्यां वीशे जिनपाय,
वैभारगिरिवर उपरे, वीर जिनेश्वर राय...४
मांडवगढनो राजीओ, नामे देव सुपास,
'**ऋषभ**' कहे जिन समरतां, पहोंचे मननी आश...५

१२. श्री आदीश्वर भगवाननुं चैत्यवंदन

आदिदेव अलवेसरु, विनीतानो राय,
नाभिराया कुलमंडणो, मरुदेवा माय...१
पांचसे धनुष्यनी देहडी, प्रभुजी परम दयाल,
चोराशी लाख पूर्वनुं, जस आयु विशाल...२
वृषभ लंछन जिन वृषधरु ए, उत्तम गुणमणिखाण,
तस पद 'पद्म' सेवन थकी, लहीए अविचल ठाण...३

१३. आदीश्वर भगवाननुं चैत्यवंदन

कल्पवृक्षनी छांयडी-नानडीयो रमतो,
सोवन हिंडोले हिंचतो-माताने मनगमतो...१

'चिंताग्रस्त' मानवी कोई ज उत्तम कार्य करी शकतो नथी.

सहु देवी बाळक थई, ऋषभजीने तेडे,
वहाला लागो छो कही, प्रभु हैडाशुं भीडे...२
जिनपति यौवन पामीया, भावेशुं भगवान,
ईन्द्रे घाल्यो मांडवो, विवाहना मंडाण...३
चोरी बांधी चिहुं दिशि, सुरगौरी गीत गावे,
सुनंदा - सुमंगला, प्रभुजीने परणावे...४
सकल संग छंडी करी, केवळज्ञानने पामे,
अष्टकर्मनो क्षय करी, पहोंच्या शिवपुर धामे...५
भरते बिंब भरावीयाए, शत्रुंजय गिरिराय,
श्री विजय प्रभुसुरि तणा, '**उदयरत्न**' गुणगाय...६

१४. श्री अजितनाथ भगवाननुं चैत्यवंदन

अजितनाथ प्रभु अवतर्या, विनीतानो स्वामी,
जितशत्रु विजया तणा, नंदन शिवगामी...१
बहोंतेर लाख पूरव तणुं, पाळ्युं जिणे आय,
गज लंछन लंछन नहीं, प्रणमे सुरराय...२
साडा चारसें धनुष्यनी ए, जिनवर उत्तम देह,
पाद 'पद्म' तस प्रणमीये, जिम लहीए शिव गेह...३

मननी दरेक वातने स्वीकारवी, एज मानवीनी पहेली हार छे.

१५ श्री संभवनाथ भगवाननुं चैत्यवंदन

सावत्थी नयरी धणी, श्री संभवनाथ,
जितारी नृप नंदनो, चलवे शिवसाथ...१
सेना नंदन चंदने, पूजो नव अंगे,
चारसें धनुषनुं देह मान, प्रणमो मनरंगे...२
साठ लाख पूरवतणुं अे, जिनवर उत्तम आय,
तुरग लंछन पद 'पद्मने', नमतां शिव सुख थाय....३

१६ श्री अभिनंदन स्वामीनुं चैत्यवंदन

नंदन संवर रायना, चोथा अभिनंदन,
कपि लंछन वंदन करो, भवदुःख निकंदन...१
सिद्धारथा जस मावडी, सिद्धारथ जिन ताय,
साडा त्रणशें धनुषमान, सुंदर जस काय...२
विनीता वासी वंदिये ए,आयु लख पचास,
पूरव तस पद 'पद्मने', नमतां शिवपुर वास...३

१७ श्री सुमतिनाथ भगवाननुं चैत्यवंदन

सुमतिनाथ सुहंकरु, कोसल्ला जस नयरी,
मेघराय मंगला तणो, नंदन जितवयरी...१

प्रेम अने प्रमाणिकता पैसा वडे कदी खरीदी शकाता नथी.

क्रौंच लंछन जिन राजियो, त्रणशें धनुषनी देह,
चालीश लाख पूरव तणुं, आयु अति गुणगेह...२
सुमति गुणे करी जे भर्या ए, तर्या संसार अगाध,
तस पद 'पद्म' सेवा थकी, लहो सुख अव्याबाध...३

१८ श्री पद्मप्रभ भगवाननुं चैत्यवंदन

कोसंबीपुरी राजियो, धर नरपति ताय,
पद्मप्रभ प्रभुतामयी, सुसीमा जस माय,...१
त्रीश लाख पूरवतणुं, जिन आयु पाळी,
धनुष अढीसें देहडी, सवि कर्मने टाळी...२
पद्मलंछन परमेश्वरु ए, जिनपद पद्मनी सेव,
'**पद्मविजय**' कहे कीजीये, भविजन सहु नितमेव...३

१९ श्री सुपार्श्वनाथ भगवाननुं चैत्यवंदन

श्री सुपार्श्व जिणंद पास, टाळ्यो भव फेरो,
पृथ्वी माता उरे जयो, ते नाथ हमेरो...१
प्रतिष्ठित सुत सुंदरु, वाराणसी राय,
वीश लाख पूरव तणुं, प्रभुजीनुं आय...२
धनुष बसें जिन देहडी ए, स्वस्तिक लंछन सार,
पद 'पद्मे' जस राजतो, तार तार भव तार...३

कोईनो पण धिक्कार के तिरस्कार करशो नहीं, कारण जेवुं करशो तेवुं पामशो.

२० श्री चंद्रप्रभ भगवाननुं चैत्यवंदन

लक्ष्मणा माता जनमीयो, महसेन जस ताय,
उडुपति लंछन दीपतो, चंद्रपुरीनो राय...१
दश लाख पूरव आउखुं, दोढसो धनुषनी देह,
सुरनरपति सेवा करे, धरता अति ससनेह...२
चंद्रप्रभ जिन आठमा ए, उत्तम पद दातार,
'**पद्मविजय**' कहे प्रणमीए, मुज प्रभु पार उतार...३

२१ श्री सुविधिनाथ भगवाननुं चैत्यवंदन

सुविधिनाथ नवमा नमुं, सुग्रीव जस तात,
मगर लंछन चरणे नमुं, रामा रुडी मात...१
आयु बे लाख पूरवतणुं, शत धनुषनी काय,
काकंदी नयरी धणी, प्रणमुं प्रभु पाय...२
उत्तम विधि जेहथी लह्यो ए, तेणे सुविधि जिन नाम,
नमतां तस पद '**पद्मने**', लहीये शाश्वत धाम...३

आपणा जीवनमां क्रिया अने आराधना ध्वारा धर्मनी कक्षा
कदाच वधी हशे, परंतु... बीजी व्यक्तिना गुणोने अने पोताना
दोषोने जोवानी दृष्टिनो विकास थयो छे खरो ?
साचा गुणानुरागी क्यारे बनशुं आपणे ?

प्रेम-दया अने करुणा वगर, साचा मानवी थवुं मुश्केल छे.

२२ श्री शीतलनाथ भगवाननुं चैत्यवंदन

नंदा दढरथ नंदनो, शीतल शीतलनाथ,
राजा भद्दिलपुर तणो, चलवे शिवपुर साथ...१
लाख पूरवनुं आउखुं, नेवुं धनुष प्रमाण,
काया माया टालीने, लह्या पंचम नाण...२
श्रीवत्स लंछन सुंदरु ए, पद '**पद्मे**' रहे जास,
ते जिननी सेवा थकी, लहीये लील विलास...३

२३ श्री श्रेयांसनाथ भगवाननुं चैत्यवंदन

अच्युत कल्पथकी चव्या, श्री श्रेयांस जिणंद,
जेठ अंधारी दिवस छठ्ठे, करत बहु आनंद...१
फागण वदी बारसे जनम, दीक्षा तस तेरस,
केवली महा अमावसी, देशना चंदन रस...२
वदी श्रावण त्रीजे लह्या ए, शिवसुख अखय अनंत,
सकल समीहित पूरणो, '**नय**' कहे भगवंत...३

२४ श्री वासुपूज्य स्वामीनुं चैत्यवंदन

वासव-वंदित वासुपूज्य, चंपापुरी ठाम,
वासुपूज्य कुल चंद्रमा, मात जया नाम...१

श्रद्धा वगर कदी पण, भगवाननी अनुभुति थवी शक्य नथी.

महिष लंछन जिन बारमा, सित्तेर धनुष प्रमाण,
काया आयु वरस वली, बहोंतेर लाख वखाण...२
संघ चतुर्विध थापीने ए, जिन उत्तम महाराय
तस मुख **'पद्म'** *वचन सुणी, परमानंदी थाय...३*

२५ श्री विमलनाथ भगवाननुं चैत्यवंदन

अठ्ठम कल्प थकी चव्या, माधव सुदी बारस,
सुदी महा त्रीजे जन्म, तस चोथे व्रत रस...१
सुदी पोष छठ्ठे लह्या, वर निर्मल केवळ,
वदी सातम अषाढनी, पाम्या पद अविचल...२
विमल जिनेश्वर वंदीए, **'ज्ञानविमल'** *करी चित्त,*
तेरमा जिन नित वंदीए, पुण्य परिमल वित्त...३

२६ श्री अनंतनाथ भगवाननुं चैत्यवंदन

अनंत अनंत गुण आगरु, अयोध्या वासी
सिंहसेन नृप नंदनो, थयो पाप निकासी...१
सुजसा माता जनमीयो, त्रीश लाख उदार,
वरस आउखुं पालीयुं, जिनवर जयकार...२
लंछन सिंचाणा तणुं ए, काया धनुष पचास,
जिन पद **'पद्म'** *नम्या थकी, लहीये सहज विलास...३*

साचा मित्रनी परीक्षा विपत्तिना समये ज थाय छे.

२७ श्री धर्मनाथ भगवाननुं चैत्यवंदन

वैशाख सुदी सातमे, चविया श्री धर्मनाथ,
विजय थकी महा मासनी, सुदी त्रीजे सुखजात...१
तेरस माहे ऊजळी, लिये संजम भार,
पोषी पूनमे केवली, बहु गुणना भंडार...२
जेठी पांचम ऊजळी ए, शिवपद पाम्या जेह,
'नय' *कहे ए जिन प्रणमतां, वाधे धर्म स्नेह...३*

२८ श्री शांतिनाथ भगवाननुं चैत्यवंदन

शांति जिनेश्वर सोळमा, अचिरासुत वंदो,
विश्वसेन कुळ नभोमणी, भविजन सुख कंदो...१
मृग लंछन जिन आउखुं, लाख वरस प्रमाण,
हत्थिणाउर नयरी धणी, प्रभुजी गुण मणि खाण...२
चालीश धनुषनी देहडी ए, समचोरस संठाण,
वदन **'पद्म'** *ज्युं चंदलो, दीठे परम कल्याण...३*

२९ श्री कुंथुनाथ भगवाननुं चैत्यवंदन

कुंथुनाथ कामित दीये, गजपुरनो राय,
सिरी माता उरे अवतर्यो, शूर नरपति ताय...१

साचुं ज्ञान होय, त्यां हिंसा न होय, वेर न होय, राग द्वेष पण न होय.

काया पांत्रीस धनुषनी, लंछन जस छाग,
केवलज्ञानादिक गुणो, प्रणमो धरी राग...२
सहस पंचाणुं वरसनुं ए, पाली उत्तम आय,
'पद्मविजय' *कहे प्रणमीये, भावे श्री जिनराय...३*

३० श्री अरनाथ भगवाननुं चैत्यवंदन

ठाण सर्वार्थ थकी चव्या, नागपुरे अरनाथ,
रेवती जन्म महोत्सव, करता निर्जरनाथ...१
जयकर योनि गजवरु, राशि मीन गणदेव,
त्रण वरसमां थिर थई, टाळे मोहनी टेव...२
पाम्या अंबतरू तले ए, क्षायिकभावे नाण,
सहस मुनिवर साथशुं, **'वीर'** *कहे निर्वाण...३*

३१ श्री मल्लिनाथ भगवाननुं चैत्यवंदन

मल्लिनाथ ओगणीशमा, जस मिथिला नयरी,
प्रभावती जस मावडी, टाले कर्म वयरी...१
तात श्री कुंभ नरेसरु, धनुष्य पचवीशनी काय,
लंछन कळश मंगलकरु, निर्मम निरमाय...२
वरस पंचावन सहसनुं ए, जिनवर उत्तम आय,
'पद्मविजय' *कहे तेहने, नमतां शिवसुख थाय...३*

साधर्मिकनी भक्ति करवाथी आपणुं 'समकित' निर्मळ बने छे.

३२ श्री मुनिसुव्रत स्वामीनुं चैत्यवंदन

मुनिसुव्रत अपराजितथी, राजगृही रहेठाण,
वानर योनि राजवी, सुंदर गण गीर्वाण...१
श्रावण नक्षत्रे जनमीया, सुरवर जय जयकार,
मकर राशि छद्मस्थमां, मौन मास अगीयार...२
चंपक हेठे चांपीया ए, जे घनघाती चार,
'वीर' *वडो जगमां प्रभु, शिवपद एक हजार...३*

३३ श्री नमिनाथ भगवाननुं चैत्यवंदन

मिथिला नयरी राजीयो, वप्रासुत साचो,
विजयराय सुत छोडीने, अवर मत माचो...१
नीलकमल लंछन भलुं, पन्नर धनुषनी देह,
नमि जिनवरनुं सोहतुं, गुण गण मणिगेह...२
दश हजार वरसतणुं ए, पाळ्युं परगट आय,
'पद्मविजय' *कहे पुण्यथी, नमीये ते जिनराय...३*

३४ श्री नेमिनाथ भगवाननुं चैत्यवंदन

नेमिनाथ बावीसमा, शिवादेवी माय,
समुद्रविजय पृथ्वीपति, जे प्रभुना ताय...१

'लोभ' सर्व 'पापनुं' मुळ छे, तो 'विनय' सर्व 'गुणोनुं' मुळ छे.

दश धनुषनी देहडी, आयु वरस हजार,
शंखलंछनधर स्वामीजी, तजी राजुल नार...२
शौरीपुरी नयरी भली ए, ब्रह्मचारी भगवान,
जिन उत्तम पद **'पद्मने'**, नमतां अविचल ठाण...३

३५ श्री पार्श्वनाथ भगवाननुं चैत्यवंदन

आश पूरे प्रभु पासजी, तोडे भव पास,
वामा माता जनमीया, अहिं लंछन जास...१
अश्वसेन सुत सुखकरु, नव हाथनी काय,
काशी देश वाराणसी, पुण्ये प्रभु आय...२
एकसो वरसनुं आउखुं ए, पाळी पार्श्वकुमार,
'पद्म' कहे मुक्ते गया, नमतां सुख निरधार...३

३६ श्री पार्श्वनाथ भगवाननुं चैत्यवंदन

जय चिंतामणी पार्श्वनाथ, जय त्रिभुवन स्वामी,
अष्ट कर्म रिपु जीतीने, पंचमी गति पामी...१
प्रभु नामे आनंद कंद, सुख संपत्ति लहीए,
प्रभु नामे भव भवतणां, पातक सब दहीए...२
ॐ ह्रीँ वर्ण जोडी करी, जपीए पार्श्वनाम,
विष अमृत थई परिणमे, लहीए अविचल ठाम...३

फरज समजीने कार्य करवाथी 'हकनो' विचार लगभग नहि आवे.

३७ श्री महावीर स्वामीनुं चैत्यवंदन

सिध्धारथ सुत वंदिये, त्रिशलानो जायो,
क्षत्रियकुंडमां अवतर्यो, सुर नरपति गायो...१
मृगपति लंछन पाउले, सात हाथनी काया,
बहोंतेर वरसनुं आउखुं, वीर जिनेश्वर राया...२
खिमाविजय जिनरायना ए, उत्तम गुण अवदात,
सात बोलथी वर्णव्यो, **'पद्मविजय'** विख्यात...३

३८ श्री सीमंधर स्वामीनुं चैत्यवंदन

श्री सीमंधर जगधणी, आ भरते आवो,
करुणावंत करुणा करी, अमने वंदावो...१
सकल भक्त तुमे धणी, जो होवे अम नाथ,
भवोभव हुं छुं ताहरो, नहि मेलुं हवे साथ...२
सयल संग छंडी करी, चारित्र लईशुं,
पाय तुमारा सेवीने, शिवरमणी वरीशुं...३
ए अलजो मुजने घणो, पूरो सीमंधर देव,
ईहां थकी हुं विनवुं, अवधारो मुज सेव...४
कर जोडीने विनवुं, सामो रही ईशान,
भाव जिनेश्वर **'भाण'**ने, देजो समकित दान...५

लज्जा अने विनय ए आदर्श गृहिणीना उत्तम आभूषण छे.

३९ श्री सीमंधर स्वामीनुं चैत्यवंदन

श्री सीमंधर वीतराग, त्रिभुवन तुमे उपगारी,
श्री श्रेयांस पिता कुळे, बहु शोभा तुमारी...१
धन्य धन्य माता सत्यकी, जेणे जायो जयकारी,
वृषभ लंछने बिराजमान, वंदे नर नारी...२
धनुष पांचसे देहडी ए, सोहीए सोवन वान,
'कीर्तिविजय' उवज्झायनो, विनय धरे तुम ध्यान...३

४० श्री पर्युषण पर्वनुं चैत्यवंदन

वडा कल्प पूरव दिने, घरे कल्पने लावो,
रात्रि जागरण प्रमुखे करी, शासन सोहावो...१
हय गय रथ शणगारीने, कुंवर लावो गुरु पासे,
वडाकल्प दिन सांभळो, वीर चरित उल्लासे...२
छठ द्वादश तप किजीए, धरीए शुभ परिणाम,
स्वामि वत्सल प्रभावना, पूजा अभिराम...३
जिन उत्तम गौतम प्रत्ये, कहेजो एकवीशवार,
गुरु मुख **'पद्मथी'** सुणीए, तो पामे भव पार...४

**संसार, परिवार, वहेवार माटे आखी जींदगी 'घसावा' तैयार आपणे,
प्रभु पूजा माटे फक्त एक वाटकी केसर 'घसवा' तैयार खरा ?**

तप...! 'त्याग' कर्या सिवाय कदापि थई शकतो नथी.

४१ बीजनुं चैत्यवंदन

दुविध बंधन ने टालीए, जे वली रागने द्वेष,
आर्त रौद्र दोय अशुभ ध्यान, नवि करो लवलेश...१
बीज दिनने वली बोधि बीज, चित्त ठाणे वावो,
जेम दुःख दुर्गति नवि लहो, जगमां जश आवो...२
भावो रुडी भावना ए, वाधो शुभ गुणठाण,
'ज्ञानविमल' तप तेजथी, होय कोटी कल्याण...३

४२ पंचमीनुं चैत्यवंदन

श्यामल वान सोहामणा, श्री नेमि जिनेश्वर,
समवसरण बेठा कहे, उपदेश सोहंकर...१
पंचमी तप आराधतां, लहे पंचम नाण,
पांच वर्ष पंच मासनो, ए छे तप परिणाम...२
जिम वरदत्त गुण मंजरीए, आराध्यो तप एह,
'ज्ञानविमल' गुरु एम कहे, धन्य धन्य जगमां तेह...३

४३ आठमनुं चैत्यवंदन

आठ त्रिगुण जिनवर तणी, नित्य कीजे सेवा,
वहाली मुज मन अति घणी, जिम गज मनरेवा...१

'दुःखमां पूर्वना' 'पापकर्मोनो' नाश देखाय तो दुःखमां रडवुं न आवे.

प्रातिहारज आठशुं, ठकुराई छाजे,
आठ मंगल आगले, जेहने वली राजे...२
भांजे भय आठ मोटकां ए, आठ कर्म करे दूर,
आठम दिन आराधतां, '**ज्ञानविमल**' भरपुर...३

४४ एकादशीनुं चैत्यवंदन

अंग अग्यार आराधीए, एकादशी दिवसे,
एकादश प्रतिमा वहो, समकित गुण विकसे...१
एकादशी दिवसे थया, दीक्षा ने नाण,
जन्म लह्या केई जिनवरा, आगम परिणाम...२
'**ज्ञानविमल**' गुण वाधतां ए, सकल कला भंडार,
अग्यारशे आराधतां, लहीए भवजल पार...३

४५ नवपदजीनुं चैत्यवंदन

पहेले पद अरिहंतना, गुण गाउं नित्ये,
बीजे सिद्ध तणा घणा, समरो अेकचित्ते...१
आचारज त्रीजे पदे, प्रणमो बिहुं कर जोडी,
नमिये श्री उवज्झायने, चोथे मद मोडी...२
पंचम पद सर्वसाधुनुं, नमतां न आणो लाज,
ए परमेष्ठि पंचने, ध्याने अविचळ राज...३

पाप/दोष वि... खराब लागे, तो ज धर्म सारो लागे.

दंसण शंकादिक रहित, पद छठ्ठे धारो,
सर्व नाणपद सातमे, क्षण एक न विसारो...४
चारित्र चोख्खुं चित्तथी, पद अष्टम जपिये,
सकळ भेद बिच दान फळ, तप नवमे तपिये...५
ए सिद्धचक्र आराधतां, पूरे वंछित कोड,
'**सुमतिविजय**' कविरायनो, '**राम**' कहे कर जोड...६

४६ श्री सिध्धचक्रजीनुं चैत्यवंदन

श्री सिद्धचक्र आराधीये, आसो चैतर मास;
नवदिन नव आंबिल करी, कीजे ओली खास. ...१
केशर चंदन घसी घणां, कस्तुरी बरास;
जुगते जिनवर पूजिये, जिम मयणा श्रीपाल. ...२
पूजा अष्ट प्रकारनी, देववंदन त्रण काल;
मंत्र जपो त्रण कालने, गणणुं तेर हजार. ...३
कष्ट टल्युं उंबर तणुं, जपतां नवपद ध्यान;
श्री श्रीपाल नरिंद थया, वाध्यो बमणो वान. ...४
सातसें कोढी सुख लह्या, पाम्या निज आवास;
पुण्ये मुक्तिवधू वर्या, पाम्या लील विलास. ...५

'गुणानुराग' ए गुणोने खेंची लावतुं लोहचुंबक छे.

४७ श्री वीश स्थानकनुं चैत्यवंदन

पहेले पद **अरिहंत**[१] नमुं, बीजे सर्व **सिद्ध**[२],
त्रीजे **प्रवचन**[३] मन धरो, **आचारज**[४] प्रसिद्ध...१
नमो **थेराणं**[५] पांचमे, **पाठक**[६] गुण छठ्ठे,
नमो लोए **सव्वसाहुणं**[७], जे छे गुण गरिठ्ठे...२
नमो **नाणस्स**[८] आठमे, **दर्शन**[९] मन भावो,
विनय[१०] करो गुणवंतनो, **चारित्र**[११] पद ध्यावो...३
नमो **बंभवयधारिणं**[१२], तेरमे **किरियाणं**[१३],
नमो **तवस्स**[१४] चौदमे, **गोयम**[१५] नमो **जिणाणं**[१६]...४
चारित्र[१७]**ज्ञान**[१८]**सुअस्स**[१९]ने ए, नमो**तित्थस्स**[२०] जाणी,
जिन ऊत्तम पद पद्मने, नमतां होय सुखखाणी...५

४८ श्री दीवाळीनुं चैत्यवंदन

श्री सिद्धारथनृप कुल तिलो, त्रिशला जस मात,
हरि लंछन तनु सात हाथ, महिमा विख्यात...१
त्रीस वरस गृहवास छंडी, लीये संयम भार,
बार वरस छद्मस्थ मान, लही केवल सार...२
त्रीस वरस एम सवि मली ए, बहोंत्तेर आयु प्रमाण,
दीवाली दिन शिव गया, कहे 'नय' तेह गुणखाण...३

'परपरिवाद' (निंदा) ए दोषोने खेंची लावतु लोहचुंबक छे.

स्तवन विभाग-७८

श्री शत्रुंजय तीर्थना स्तवनो १०

१ सिद्धाचलना वासी... (१)

सिद्धाचलना वासी, विमलाचलना वासी,... **जिनजी प्यारा**
आदिनाथने वंदन अमारा,
प्रभुजीनुं मुखडुं मलके, नयनोमांथी वरसे, अमीरस धारा,
आदिनाथने वंदन अमारा,...१
प्रभुजीनुं मुखडुं छे मलक मिलाकर, दीलमें भक्तिकी ज्योत जगाकर,
भजीले प्रभुने भावे, दुर्गति कदी न आवे... **जिनजी प्यारा...२**
भमीने लाख चोरासी हुं आव्यो, पुन्ये दरिसन तुमारा हुं पायो,
धन्य दिवस मारो, भवनां फेरा टाळो... **जिनजी प्यारा...३**
प्रभुजी अमे तो मायाना विलासी, तमे छो मुक्तिपुरीना वासी,
कर्मबंधन कापो, मोक्ष सुख आपो... **जिनजी प्यारा...४**
अरजी उरमां धरजो अमारी, अमने आशा छे प्रभुजी तमारी,
कहे'हर्ष'हवे,साचास्वामीतमे,पूजनकरीएअमे,**जिनजीप्यारा...५**

हे जीव ! तुं प्रमादमांथी जागी जा, पापथी भागी जा अने आराधनामां लागी जा.

२ यात्रा नव्वाणुं करीए विमलगिरि... (२)

यात्रा नव्वाणुं करीए विमलगिरि, यात्रा नव्वाणुं करीए...
पूर्व नव्वाणुं वार शत्रुंजय गिरि, ऋषभजिणंद समोसरीए... वि.१
कोडीसहस भव पातक तुटे, शत्रुंजय साहमुं डग भरीए... वि.२
सात छठ्ठ दोय अठ्ठम तपस्या, करी चढीए गिरिवरिए... वि.३
पुंडरिक पद जपीए मन हरखे, अध्यवसाय शुभ धरीए... वि.४
पापी अभव्य नजरे न देखे, हिंसक पण उध्धरीए... वि.५
भूमि संथारो ने नारी तणो संग, दूर थकी परिहरिए... वि.६
सचित्त परिहारी ने एकल आहारी, गुरु साथे पद चरीए... वि.७
पडिक्कमणां दोय विधिशुं करिए, पाप पडल विखरीए ?... वि.८
कलिकाले ए तीरथ म्होटुं, प्रवहण जेम भर दरीए... वि.९
उत्तम ए गिरिवर सेवंता, **'पद्म'** कहे भव तरीए... वि.१०

३ ते दिन क्यारे आवशे.... (३)

ते दिन क्यारे आवशे, श्री सिद्धाचल जाशुं,
ऋषभजिणंद जुहारीने, सूरजकुंडमां न्हाशुं... ते.१

'क्रियाथी' पुण्यबंध थाय, ज्यारे 'भावथी' कर्मनी निर्जरा थाय.

समवसरणमां बेसीने, जिनवरनी वाणी,
सांभळशुं साचे मने, परमारथ जाणी... ते.२
समकित व्रत सुधां करी, सद्‌गुरुने वंदी,
पाप सर्व आलोईने, निज आतम निंदी... ते.३
पडिक्कमणां दोय टंकना, करशुं मन कोडे,
विषय कषाय विसारीने, तप करशुं होडे... ते.४
व्हाला ने वैरी वच्चे, नवि करशुं वहेरो,
परनां अवगुण देखीने, नवि करशुं चहेरो... ते.५
धर्मस्थानक धन वापरी, षट्‌कायने हेते,
पंचमहाव्रत लेईने, पाळशुं मन प्रीते... ते.६
कायानी माया मेलीने, परिषहने सहीशुं,
सुख-दुःख सर्वे विसारीने, समभावे रहीशुं... ते.७
अरिहंतदेवने ओळखी, गुण तेहना गाशुं,
'उदयरत्न' एम उच्चरे, त्यारे निर्मळ थाशुं... ते.८

४ शोभा शी कहुं रे शेत्रुंजा तणी... (४)

शोभा शी कहुं रे शेत्रुंजा तणी,
जीहां बीराजे प्रथम तीर्थंकर देव जो,

नसीब वगर कोईने 'कशुं' ज मळतुं नथी अने मळे तो लांबु टकतुं नथी.

रुडी रे रायण तणे ऋषभ समोसर्या,
चोसठ सुरपति सारे प्रभुनी सेव जो.. ......शोभा..१
निरखो रे नाभिराया केरा पुत्रने,
माता मरुदेवी केरो नंद जो,
रुडी रे विनीता नगरीनो धणी,
मुखडुं ते सोहिये शरद पूनमनो चंद जो ......शोभा..२
नित्य उठीने नारी कंथने विनवे,
पियुडा मुजने पालीताणा देखाडजो,
ए गिरिए पूर्व नव्वाणुं समोसर्या,
माटे मुजने आदीश्वर भेटाडजो .....शोभा..३
मारे मन जावानी घणी होंश छे,
क्यारे जावुं ने क्यारे करुं दर्शन जो,
ते माटे मन मारुं तलसे घणुं,
नयणे निहाळुं तो ठरे मारा लोचन जो .....शोभा..४
एवी ते अरज अबळानी सांभळो,
हुकम करो तो आवुं तमारी पास जो,
महेर करीने दादा दरिशन दिजीये,
श्री **'शुभवीरनी'** पहोंचे मननी आश जो ....शोभा..५

पाप न छोडी शको तो कांई नहीं पण, पापनो पक्षपात तो जरुर छोडो.

५ सिध्धाचलगिरि विमलाचलगिरि भेट्या रे...(५)

सिद्धाचलगिरि विमलाचलगिरि भेट्या रे, धन्य भाग हमारां...
ए गिरिवरनो महिमा मोटो, कहेतां न आवे पारा,
रायण रुख समोसर्या स्वामी, पूर्व नवाणुं वारा रे. **धन्य.१**
मूळनायक श्री आदि जिनेश्वर, चौमुख प्रतिमा चारा,
अष्ट द्रव्यशुं पूजो भावे, समकित मूळ आधारा रे. **धन्य.२**
भाव भक्ति शुं प्रभु गुण गावे, अपना जन्म सुधारा,
यात्रा करी भविजन शुभ भावे, नरक तिर्यंच गति वारा रे. **धन्य.३**
दूर देशांतरथी हुं आव्यो, श्रवणे सुणी गुण तोरा,
पतित उद्धारण बिरुद तमारुं, ए तीरथ जग सारा रे. **धन्य.४**
संवत अढार त्यांसी मास अषाढो, वदी आठम भोमवारा,
प्रभुजी के चरण प्रताप से संघमें, **'क्षमारतन'** प्रभु प्यारा रे. **धन्य.५**

६ आंखडीये रे में आज शत्रुंजय दीठो रे... (६)

आंखडीये रे में आज शत्रुंजय दीठो रे,
सवा लाख टकानो दहाडो रे, लागे मने मीठो रे,
सफल थयो रे मारा मननो उमाहो, व्हाला मारा भवनो संशय भांग्यो रे,
नरक तिर्यंच गति दूर निवारी, चरणे प्रभुजीने लाग्यो रे.
शत्रुंजय.....१

पोतानाथी नानी व्यक्तिने पण 'मान' आपवुं ए ज खरी मोटाई छे.

मानवभवनो लाहो लीजे, व्हाला मारा देहडी पावन कीजे रे,
सोना रुपाना फुलडे वधावी, प्रेमे प्रदक्षिणा दीजे रे.
शत्रुंजय.....२
दूधडे पखाळीने केसर घोळी, व्हाला मारा श्री आदीश्वर पूज्या रे,
श्री सिद्धाचल नयणे जोतां, पाप मेवासी धुज्या रे.
शत्रुंजय.....३
श्रीमुख सुधर्मा सुरपति आगे, व्हाला मारा वीरजिणंद एम बोले रे,
त्रण भुवनमां तीरथ मोटुं, नहि कोई शत्रुंजय तोले रे.
शत्रुंजय.....४
ईन्द्र सरिखा ए तीरथनी, व्हाला मारा चाकरी चित्तमां चाहे रे,
कायानी तो कासल काढी, सूरजकुंडमां नाहे रे.
शत्रुंजय.....५
कांकरे कांकरे श्री सिद्धक्षेत्रे, व्हाला मारा साधु अनंता सिध्या रे,
ते माटे ए तीरथ मोटुं, उद्धार अनंता कीधा रे.
शत्रुंजय.....६
नाभिरायासुत नयणे जोतां, व्हाला मारा मेह अमीरस वुठ्या रे,
*'**उदयरत्न**' कहे आज मारे पोते, श्री आदिश्वर तुठ्या रे.*
शत्रुंजय.....७

प्रेम हळवो छे, तेथी तेनो भार लागतो नथी.

७ ऐसी दशा हो, भगवन जब..... (७)

ऐसी दशा हो भगवन, जब प्राण तन से नीकले. ...१
गिरिराजकी हो छाया, मनमें न होवे माया,
तप से हो शुद्ध काया, जब प्राण तन से नीकले. ...२
उरमें न मान होवे, दिल एकतान होवे,
तुम चरण ध्यान होवे, जब प्राण तन से नीकले. ...३
संसार दु:खहरणां, जैनधर्मका हो शरणां,
हो कर्म भर्म खरनां, जब प्राण तन से नीकले. ...४
अनशनको सिद्धवट हो, प्रभु आदिदेव घट हो,
गुरुराज भी नीकट हो, जब प्राण तन से नीकले. ...५
यह दान मुजको दीजे, ईतनी दया तो कीजे,
*अरजी '**तिलककी**' लीजे, जब प्राण तन से नीकले. ...६*

८ विमलाचल नितु वंदीए.....(८)

विमलाचल नितु वंदीए, कीजे एहनी सेवा,
मानुं हाथ ए धर्मनो, शिवतरु फळ लेवा. ...वि.१

कोईने सलाह देवी ज पडे तो, बने एटली 'शोर्ट'मां ज देजो.

उज्ज्वल जिनगृह मंडळी, तिहां दीपे उत्तंगा,
मानुं हिमगिरि विभ्रमे, आई अंबर गंगा. ...वि.२
कोई अनेरुं जग नहीं, ए तीरथ तोले,
एम श्रीमुख हरी आगळे, श्री सीमंधर बोले. ...वि.३
जे सघळां तीरथ कह्यां, यात्राफळ कहीए,
तेहथी ए गिरि भेटतां, शतगणुं फळ लहीए. ...वि.४
जन्म सफळ होय तेहनो, जे ए गिरि वंदे,
*'**सुजशविजय**' संपद लहे, ते नर चिर नंदे. ...वि.५*

९ शेत्रुंजा गढना वासी... (९)

शेत्रुंजा गढना वासी रे, मुजरो मानजो रे,
सेवकनी सुणी वातो रे, दिलमां धारजो रे,
प्रभु में दीठो तुम देदार, आज मने उपन्यो हरख अपार,
साहिबानी सेवा रे, भवदु:ख भांजशे रे. सा...१
एक अरज अमारी रे, दिलमां धारजो रे,
चोराशी लाख फेरा रे, दूर निवारजो रे,
प्रभु मने दुर्गति पडतो राख, दरिशन वहेलुं वहेलुं रे दाख. सा...२

आजनो माणस घडियाळनी किंमत जाणे छे, पण समयनी किंमत नथी जाणतो.

दोलत सवाई रे, सोरठ देशनी रे,
बलिहारी हुं जाउं रे, प्रभु तारा वेशनी रे,
प्रभु तारुं रुडुं दीठुं रुप, मोह्या सुरनर वृंद ने भूप. सा...३
तीरथ को नहीं रे, शत्रुंजय सारिखुं रे,
प्रवचन पेखीने, कीधुं में पारखुं रे
ऋषभने जोई जोई हरखे जेह, त्रिभुवन लीला पामे तेह. सा...४
भवोभव मांगु रे, प्रभु तारी सेवना रे,
भावठ न भांजे रे, जगमां जे विना रे,
प्रभु मारा पूरो मनना कोड, ईम कहे 'उदयरत्न' कर जोड . सा...५

१० सिद्धाचलनो वासी... (१०)

सिद्धाचलनो वासी प्यारो, लागे मोरा राजींदा.....
विमलाचलनो वासी प्यारो, लागे मोरा राजींदा.....
ईण रे डुंगरीयामां जीणी जीणी कोरणी,
उपर शिखर बिराजे... मोरा राजींदा... सिद्धा.१
काने कुंडल माथे मुगट बिराजे,
बाहे बाजुबंध छाजे... मोरा राजींदा... सिद्धा.२

दोषी व्यक्ति प्रत्ये जेटलो द्वेष छे तेटलो द्वेष दोष प्रत्ये आपणने खरो !

चौमुख बिंब अनुपम छाजे,
अद्‌भूत दीठे दु:ख भांजे... मोरा राजींदा... सिद्धा.३
चुवा चुवा चंदन और अगरजा,
केसर तिलक विराजे... मोरा राजींदा... सिद्धा.४
ईण गिरि साधु अनंता सिध्या,
कहेतां न आवे पार... मोरा राजींदा... सिद्धा.५
'**ज्ञानविमल**' प्रभु एणी पेरे बोले,
आ भव पार उतारो... मोरा राजींदा... सिद्धा.६

११ एक दिन पुंडरीक गणधरुं रे लाल.....
(श्री पुंडरीक स्वामी)

एक दिन पुंडरीक गणधरुं रे लाल,
पूछे श्री आदिजिणंद सुखकारी रे,
कहीये ते भवजल उतरी रे लाल,
पामीश परमानंद भववारी रे. एक.१
कहे जिन ईण गिरि पामशो रे लाल,
ज्ञान अने निर्वाण जयकारी रे,
तीरथ महिमा वाधशे रे लाल,
अधिक अधिक मंडाण निरधारी रे. एक.२

हळवाशथी कहो तो कोईनी साथे कडवाश नहीं थाय.

ईम निसुणीने ईहां आवीया रे लाल,
घाति करम कर्या दूर तमवारी रे,
पंच क्रोड मुनि परिवर्या रे लाल,
हुआ सिद्धि हजुर भवपारी रे. एक.३
चैत्रीपूनम दिन किजीए रे लाल,
पूजा विविध प्रकार दिलधारी रे,
फळ प्रदक्षिणा काउस्सग्गा रे लाल,
लोगस्स थुई नमुक्कार नरनारी रे. एक.४
दस वीस त्रीस चालीस भला रे लाल,
पचास पुष्पनी माळ अति सारी रे,
नरभव लाहो लीजीए रे लाल,
जेम होय 'ज्ञान' विशाल मनोहारी रे. एक.५

१२ नीलुडी रायण तरु तळे सुणसुंदरी.....
(रायण पगलां)

नीलुडी रायण तरु तळे..... सुणसुंदरी,
पीलुडा प्रभुनां पाय रे..... गुणमंजरी,
उज्जवळ ध्याने ध्याईए. सुण... एही ज मुक्ति उपाय रे. गुण.
शीतळ छांयडे बेसीए. सुण... रातडो करी मन रंग रे. गुण.
पूजीए सोवन फूलडे. सुण... जेम होय पावन अंग रे. गुण.

मणभरनी चर्चा करता... कण भरनुं आचरण श्रेष्ठ छे.

खीर झरे जेह उपरे. सुण... नेह धरीने एह रे. गुण.
त्रीजे भवे ते शिव लहे. सुण... थाये निर्मळ देह रे. गुण.
प्रीते धरी प्रदक्षिणा. सुण... दीये एहने जे सार रे. गुण.
अभंग प्रीति होय तेहने. सुण... भवोभव तुम आधार रे. गुण.
कुसुम पत्र फळ मंजरी. सुण... शाखा थड अने मूळ रे. गुण.
देवतणा वासाय छे. सुण... तीरथने अनुकूळ रे. गुण.
तीरथ ध्यान धरो मुदा. सुण... सेवो एहनी छांय रे. गुण.
'**ज्ञानविमल**' गुण भाखीयो. सुण... शत्रुंजयमहात्म्य मांहे रे. गुण.

श्री ऋषभदेव भगवानना स्तवनो ८

१३ माता मरुदेवीना नंद..... (१)

माता मरुदेवीना नंद, देखी ताहरी मूरति मारुं
मन लोभाणुंजी, के मारुं दिल लोभाणुंजी... माता.१
करुणानागर, करुणासागर, काया कंचनवान,
धोरी लंछन पाउले कांई, धनुष्य पांचसे मान... माता.२
त्रिगडे बेसी धर्म कहंता, सुणे पर्षदा बार,
जोजन गामिनी वाणी मीठी, वरसंती जळधार... माता.३

खराब काम करवा जतांय सारा माणसनी सलाह लेजो... बची जशो.

उर्वशी रुडी अपच्छरा ने, रामा छे मन रंग,
पाये नेपुर रणझणे कांई, करती नाटारंभ... माता.४
तुं हीं ब्रह्मा, तुं हीं विधाता, तुं हीं जग तारणहार,
तुज सरीखो नहीं देव जगतमां, अरवडीआ आधार... माता.५
तुं हीं भ्राता, तुं हीं त्राता, तुं हीं जगतनो देव,
सुरनर किन्नर वासुदेवा, करता तुज पद सेव... माता.६
श्री सिद्धाचल तीरथ केरो, राजा ऋषभ जिणंद,
कीर्ति करे 'माणेकमुनि' ताहरी, टाळो भवभय फंद... माता.७

१४ दादा आदिश्वरजी दूरथी आव्यो... (२)

दादा आदिश्वरजी (२) दूरथी आव्यो, दादा दरिशन द्यो,
कोई आवे हाथी घोडे, कोई आवे चढे पलाणे,
कोई आवे पगपाळे, दादाने दरबार,
हां हां दादाने दरबार... दादा. आदि...१
शेठ आवे हाथी घोडे, राजा आवे चढे पलाणे
हुं आवुं पगपाळे, दादाने दरबार,
हां हां दादाने दरबार... दादा. आदि...२

दु:खमां समाधि राखवानी चावी : बीजा बधा तो 'निमित्त' मात्र ज छे. भुतकाळमां में बांधेला 'कर्मो' ज मारा दु:खनुं मुख्य कारण छे.

पाप करवुं ए पाप छे... पण पापनी प्रशंसा करवी ए तो महापाप छे.

कोई मूके सोना रुपा, कोई मूके महोर,
कोई मूके चपटी चोखा, दादाने दरबार,
हां हां दादाने दरबार... **दादा. आदि...३**
शेठ मूके सोना रुपा, राजा मूके महोर,
हुं मूकुं चपटी चोखा, दादाने दरबार,
हां हां दादाने दरबार... **दादा. आदि...४**
कोई मांगे कंचन काया, कोई मांगे आंख,
कोई मांगे चरणोनी सेवा, दादाने दरबार,
हां हां दादाने दरबार... **दादा. आदि...५**
कोढीयो मांगे कंचन काया, आंधळो मांगे आंख,
हुं मांगु चरणोनी सेवा, दादाने दरबार,
हां हां दादाने दरबार... **दादा. आदि...६**
हीरविजय गुरु हीरलो ने, 'वीरविजय' गुण गाय,
शेत्रुंजयना दर्शन करतां, आनंद अपार,
हां हां आनंद अपार... **दादा. आदि...७**

चेक करजो, आपणा मनने ! वधु प्रिय कोण ? वधु किंमत कोनी ? वधु आकर्षण कोनुं ? दुराचारी... व्यभिचारी, हीरो-हीरोईननुं के शुद्ध आचारी साधु-साध्वी, श्रावक-श्राविकाओनुं.

लाकडानी होळीने पाणी ठारे, काळजानी होळीने जिनवाणी ठारे.

१५ प्रथम जिनेश्वर प्रणमीए... (३)

प्रथम जिनेश्वर प्रणमीए, जास सुगंधी रे काय,
कल्पवृक्ष परे तास ईंद्राणी नयन जे, भृंग परे लपटाय... प्र.१
रोग उरग तुज नवि नडे, अमृत जेह आस्वाद,
तेहथी प्रतिहत तेह मानुं कोई नवि करे, जगमां तुमशुं रे वाद... प्र.२
वगर धोई तुज निरमळी, काया कंचनवान,
नहीं प्रस्वेद लगार तारे तुं तेहने, जे धरे ताहरुं ध्यान... प्र.३
राग गयो तुज मन थकी, तेहमां चित्र न कोय,
रुधिर आमिषथी राग गयो तुज जन्मथी, दूध सहोदर होय... प्र.४
श्वासोश्वास कमळ समो, तुज लोकोत्तर वाद,
देखे न आहार निहार चर्मचक्षु धणी, एहवा तुज अवदात... प्र.५
चार अतिशय मूळथी, ओगणीश देवना कीध,
कर्म खप्याथी अग्यार चोत्रीश एम अतिशया, समवायांगे प्रसिद्ध... प्र.६
जिन उत्तम गुण गावतां, गुण आवे निज अंग,
'पद्मविजय' *कहे एह समय प्रभु पाळजो, जेम थाउं अक्षय अभंग... प्र.७*

(शरीरने) 'तनने' बगडतुं अटकाववानी दवा बजारमां मळी शके, परंतु 'मनने' बगडतुं अटकाववानी दवानी शोध जगतमां थई छे खरी ?

शरीरना घा रुझाय छे, शब्दोना घा रुझाता नथी, माटे अप्रिय वचन कदीय न बोलो.

१६ तुम दरिशन भले पायो... (४)

तुम दरिशन भले पायो, प्रथम जिन ! तुम दरिशन भले पायो,
नाभि नरेसर नंदन निरुपम, माता मरुदेवी जायो... प्र.१
आज अमीरस जलधर वुठो, मानुं गंगाजले नाह्यो,
सुरतरु सुरमणि प्रमुख अनुपम, ते सवि आज में पायो... प्र.२
युगला धर्म निवारण तारण, जग जस मंडप छायो,
प्रभु तुज शासन वासन समकित, अंतर वैरी हटायो... प्र.३
कुदेव कुगुरु कुधर्म निवासे, मिथ्यामतमें फसायो,
में प्रभु आजसें निश्चय कीनो, सवि मिथ्यात्व गमायो... प्र.४
बेर बेर करुं बिनती ईतनी, तुम सेवारस पायो,
'ज्ञानविमल' *प्रभु साहिब नजरे, समकित पूरण सवायो... प्र.५*

१७ जगजीवन जग वालहो... (५)

जगजीवन जग वालहो, मरुदेवीनो नंद लाल रे,
मुख दीठे सुख ऊपजे, दरिशन अतिहि आनंद लाल रे. जग.१
आंखडी अंबुज पांखडी, अष्टमी शशी सम भाल लाल रे,
वदन ते शारद चंदलो, वाणी अतिहि रसाळ लाल रे. जग.२
लक्षण अंगे विराजतां, अडहिय सहस उदार लाल रे,
रेखा कर चरणादिके, अभ्यंतर नहीं पार लाल रे. जग.३

धर्मप्रवृत्ति ते 'साधन' छे, ज्यारे... पवित्र, निर्मळ, शुद्ध मनोवृत्ति ए आपणुं 'साध्य' छे

ईन्द्र चंद्र रवि गिरि तणां, गुण लही घडीयुं अंग लाल रे,
भाग्य किहां थकी आवीयुं, अचरिज एह उत्तंग लाल रे. जग.४
गुण सघळां अंगी कर्या, दूर कर्या सवि दोष लाल रे,
वाचक 'जशविजये' थुण्यो, देजो सुखनो पोष लाल रे. जग.५

१८ बालुडो निःस्नेही थई गयो रे... (६)

बालुडो निःस्नेही थई गयो रे, छोड्युं विनीतानुं राज, (१)
संयम रमणी आराधवा, लेवा मुक्तिनुं राज, (२)
मेरे दिल वसी गयो वालमो...१
माताने मेल्यां अेकला रे, जाय दिन नवि रात,
रत्नसिंहासन बेसवा, चाले अडवाणे पाय. मेरे.२
वहालानुं नाम नवि विसरे रे, झरे आंसुडानी धार,
आंखलडीये छाया वळी, गया वर्ष हजार. मेरे.३
केवल रत्न आपी करी रे, पूरी मातानी आश,
समवसरण लीला जोईने, साध्या आतम काज. मेरे.४
भक्तवत्सल भगवंतने रे, नमे निर्मल काय,
आदि जिणंद आराधतां, महिमा शिव सुख थाय. मेरे.५

पापनो स्वीकार न करवो ए दुनियानुं सौथी मोटुं पाप छे.

१९ ऋषभ जिनेश्वर प्रीतम माहरो... (७)

ऋषभ जिनेश्वर प्रीतम माहरो रे, और न चाहुं रे कंत,
रीझ्यो साहिब संग न परिहरे रे, भांगे सादि अनंत... ऋ.१
प्रीत सगाई रे, जगमां सहु करे रे, प्रीत सगाई न कोय,
प्रीत सगाई रे, निरुपाधिक कही रे, सोपाधिक धन खोय... ऋ.२
कोई कंत कारण काष्ट भक्षण करे रे, मीलशुं कंतने धाय;
ए मेळो, नवि कंदीए संभवे रे, मेळो ठाम न ठाय... ऋ.३
कोई पतिरंजन अति घणुं तप करे रे, पतिरंजन तन ताप,
ए पतिरंजन में नवि चित्त धर्युं रे, रंजन धातु मिलाप... ऋ.४
कोई कहे लीला रे, अलख अलख तणी रे, लख पूरे मन आश,
दोष रहितने लीला नवि घटे रे, लीला दोष विलास... ऋ.५
चित्त प्रसन्ने रे, पूजन फल कह्युं रे, पूजा अखंडित एह,
कपट रहित थई आतम अरपणा रे, **'आनंदघन'** *पद रेह... ऋ.६*

सुखमजेथी भोगवो तो 'पुण्य' घटी जाय, अने दुःखमजेथी भोगवो तो 'पाप' घटी जाय. घटाडवा जेवुं शुं ?(पुण्य के पाप)आवुं साव सरळ सीधुं अने सादु गणित केम आपणने समजातुं नहीं होय ?

आंखमां 'अमी' तो दुनिया गमी, जीभमां 'अमी' तो दुनिया नमी.

२० दादा तारा विना, मारा नयन भीनां... (८)

दादा तारा विना, मारा नयन भीनां, कोण लूछे,
....मुज अंतरने कोण पूछे.
मन मारुं रहे छे मूंजातुं, मुज दिलमां कंई कंई थातुं,
मन मारुं भमे, दिलने कंई ना गमे, शुन्य रहे छे. **..मुज.१**
तलसी रह्यो पण कोई नहीं साथी, सौ छे स्वार्थना संगाथी,
अंधकार महीं, अटवाया करुं, नवी सूझे. **..मुज.२**
आधि व्याधि उपाधि अनेरी, मोहमायानी छाया छे घेरी,
सुख शांति विना, रस जीवनमां, नवी रहे. **..मुज.३**
जल विना जेम मीन रहे तलसी, तेम तुम दर्शननो हुं प्यासी,
कृपा दृष्टि करो, अमी वृष्टि करो, आशा ए छे. **..मुज.४**
ज्ञानदीपकनो तूं छे मिनारो, मुज मुक्ति नैयानो किनारो,
दास तारो गणी, एनो नाविक बनी, तारी लेजे. **..मुज.५**
सुण सिद्धाचल वासी व्हाला, मुज अंतरना कालावाला,
आत्मकमल विकासी, **'लब्धि'** *दिलमां प्रकाशी, मुक्ति देजे.* **..मुज.६**

अनंता अरिहंत परमात्मानी देशनानो टुंकमां एकज सार, हे जीव ! तुं तारा दोष दूर कर अने बीजाना दुःख दूर कर !

मनने रोज पूछो के तुं प्रभु महावीरने माने छे के प्रभु महावीरनुं माने छे ?

२१ प्रीतलडी बंधाणी रे... (श्री अजितनाथ भगवान)

प्रीतलडी बंधाणी रे अजित जिणंदशुं,
प्रभु पाखे क्षण एक मने न सुहाय जो,
ध्याननी ताळी रे लागी नेहशुं,
जलदघटा जिम शिवसूत वाहन दायजो. ....प्री.१
नेहघेलुं मन मारुं रे प्रभु अलजे रहे,
तन मन धन ए कारणथी प्रभु मुज जो,
मारे तो आधार रे साहिब राउलो,
अंतरगतनी प्रभु आगळ कहुं गुंज्झ जो. ....प्री.२
साहेब ते साचो रे जगमां जाणीए,
सेवकनां जे सहेजे सुधारे काज जो,
एहवे रे आचरणे केम करीने रहुं,
बिरुद तमारुं तरणतारण जहाज जो. ....प्री.३
तारकता तुज मांहे रे श्रवणे सांभळी
ते भणी हुं आव्यो छुं दीन दयाळ जो,
तुज करुणानी लहेरे रे मुज कारज सरे,
शुं घणुं कहीए जाण आगळ कृपाळ जो. ....प्री.४

केरीनी बाधा लेनारा... 'केरीना' रसनो त्याग करनारा आपणे बीजानी 'निंदाना' रसनो त्याग करी शकीए छीए खरा ?

'खाधुं' एटलुं आपणुं नहि, पण... 'पचे' एटलुं आपणुं गणाय.

करुणाद्रष्टि कीधी रे सेवक उपरे,
भव भय भावठ भांगी भक्ति प्रसंग जो,
मनवांछित फळीया रे तुज आलंबने,
कर जोडीने, 'मोहन' कहे मनरंग जो. ....प्री.५

२२ हां रे हुं तो मोह्यो रे लाल... (श्री संभवनाथ भ.)

हां रे ! हुं तो मोह्यो रे लाल, जिन मुखडाने मटके,
जिन मुखडाने मटके, वारी जाउं प्रभु मुखडाने मटके. हां रे...१
नयन रसीलांने वयण-सुखाळां, चित्तडुं लीधुं हरी चटके,
प्रभुजीनी साथे भक्ति करंता, कर्म तणी कस तटके. हां रे...२
मुज मन लोभी भ्रमर तणी परे, प्रभु पद कमळे अटके,
रत्नचिंतामणी मूकी राचे, कहो कुण काचने कटके. हां रे...३
ए जिन ध्याने क्रोधादिक जे, आसपासथी अटके,
केवलनाणी बहुसुखदाणी, कुमति कुगतिने पटके. हां रे...४
ए जिनने जे दिलमां न आणे, ते तो भूला भटके,
प्रभुजीनी साथे ओळख करंता, वांछित सुखडां सटके. हां रे...५
मूर्ति श्री संभव जिनेश्वर केरी, जोतां हैयडुं हरखे,
'नित्यलाभ' *कहे प्रभु कीर्ति मोटी, गुण गाउं हुं लटके. हां रे...६*

प्रेम ! ए प्रथम आपवानी अने पछी लेवानी वस्तु छे.

२३ अभिनंदन स्वामी हमारा... (श्री अभिनंदन स्वामी)

अभिनंदन स्वामी हमारा, प्रभु भव दुःख भंजनहारा,
ये दुनिया दुःख की धारा, प्रभु ईनसे करो निस्तारा.. **अभि.१**
हुं कुमति कुटिल भरमायो, दुरित करी दुःख पायो,
अब सरळ लीयो है थारो, मुजे भवजल पार उतारो.. **अभि.२**
प्रभु शीख हैये नवि धारी, दुर्गतिमां दुःख लीयो भारी,
ईन कर्मों की गति न्यारी, करे बेर बेर खुवारी.. **अभि.३**
तुमे करुणावंत कहावो, जगतारक बिरुद धरावो,
मेरी अरजीनो अेक दावो, ईण दुःखसे क्युं न छुडावो... **अभि.४**
में विरथा जनम गुमायो, नहीं तन धन स्नेह निवार्यो,
*अब पारस परसंग पामी, नहीं '**वीरविजय**' कुं खामी...* **अभि.५**

२४ सुमतिनाथ गुणशुं मीलीजी... (श्री सुमतिनाथ भ.)

सुमतिनाथ गुणशुं मीलीजी वाधे मुज मन प्रीति,
तेलबिंदु जिम विस्तरेजी, जलमांही भली रीति. ....
सौभागी जिनशुं, लाग्यो अविहड रंग. **सौ...१**
सज्जनशुं जे प्रीतडीजी, छानी ते न रखाय,
परिमल कस्तुरी तणोजी, महीं मांही महकाय. **सौ...२**

धर्मना चार अंग (१) दान (२) शील (३) तप (४) भाव.

अंगुलिए नवि मेरु ठंकाये, छाबडीए रवि तेज,
अंजलिमां जिम गंग न माये, मुज मन तिम प्रभु हेज. **सौ...१**
हुओ छीपे नहीं अधर अरुण जिम, खातां पान सुरंग,
पीवत भर भर प्रभुगुण प्याला, तिम मुज प्रेम अभंग. **सौ...२**
ढांकी ईक्षुपराळशुंजी, न रहे लही विस्तार,
*वाचक '**जस**' कहे प्रभु तणोजी, तिम मुज प्रेम प्रकार.* **सौ...२**

२५ पद्मप्रभ प्राणसे प्यारा.... (श्री पद्मप्रभ भगवान)

पद्मप्रभ प्राणसे प्यारा, छोडावो कर्म की धारा,
करम फंद तोडवा धोरी, प्रभुजीसे अर्ज हे मोरी. **...पद्म.१**
लघुवय एक थें जीया, मुक्तिमें वास तुम कीया,
न जानी पीड तें मोरी, प्रभु अब खींच ले दोरी. **...पद्म.२**
विषय सुख मानी लों मनमें, गयो सब काल गफलतमें,
नरक दुःख वेदना भारी, निकलवा ना रही बारी. **...पद्म.३**
परवश दीनता कीनी, पापकी पोट शिर लीनी,
न जानी भक्ति तुम केरी, रह्यो निशदिन दुःख घेरी. **...पद्म.४**
ईस विध विनति तोरी, करुं में दोय कर जोडी,
*आतम आनंद मुज दीजो, '**वीर**' नुं काज सब कीजो.* **...पद्म.५**

'धनने' आपणे साचववुं पडे छे, ज्यारे 'धर्म' आपणने साचवे छे.

२६ श्री सुपार्श्वजिन वंदिये....... (श्री सुपार्श्वनाथ भगवान)

श्री सुपार्श्वजिन वंदिये, सुख संपत्तिनो हेतु ललना,
शांत सुधारस जलनिधि, भवसागरमांहे सेतु ललना. ...श्री..
सात महाभय टाळतो, सप्तम जिनवरदेव ललना,
सावधान मनसा करी, धारो जिनपद सेव ललना. ...श्री..
शिव शंकर जगदीश्वरु, चिदानंद भगवान ललना,
जिन अरिहा तीर्थंकरु, ज्योति स्वरुप असमान ललना. ...श्री..
अलख निरंजन वच्छलु, सकल जंतु विश्राम ललना,
अभयदानदाता सदा, पूरण आतमराम ललना. ...श्री..
वीतराग मद कल्पना, रति अरति भय शोक ललना,
निद्रा तंद्रा दुर्दशा, रहित अबाधित योग ललना. ...श्री..
परमपुरुष परमातमा, परमेश्वर परधान ललना,
परम पदारथ परमेष्ठी, परमदेव परमान ललना. ...श्री..
विधि विरंचि विश्वंभरु, ऋषीकेश जगनाथ ललना,
अघहर अघमोचन धणी, मुक्ति परमपद साथ ललना. ...श्री..
एम अनेक अभिधा धरे रे, अनुभव गम्य विचार ललना,
*जेह जाणे तेहने करे, '**आनंदघन**' अवतार ललना. ...श्री..*

देहसुख अे भोगसाधना छे ज्यारे आत्मसुख अे योगसाधना छे.

२७ चंद्रप्रभनी चाकरी... (श्री चंद्रप्रभ भगवान)

चंद्रप्रभनी चाकरी नित्य करीए, हारे नित्य करीए रे, नित्य करीए,
*करीए तो भवजल तरीए... हां रे चढते परिणाम...***चंद्र.१**
लक्ष्मणा माता जनमीया जिनराया, जिन उडुपति लंछन पाया,
*एतो चंद्रपुरीना राया... हां रे नित्य लीजे नाम...***चंद्र.२**
महसेनपिता जेहना प्रभु बळीया, मनेजिनजी एकांते मळीया,
*मारा मनना मनोरथ फळीया... हां रे दीठे दुःख जाय...***चंद्र.३**
दोढसो धनुषनी देहडी जिन दीपे, तेजे दीनकर झीपे,
*सुर कोडी उभा समीपे... हां रे नित्य करता सेव...***चंद्र.४**
दश लाख पूर्वनुं आउखुं जिन पाळी, जिन आतमने अजवाळी,
*दुष्ट कर्मना मर्मने टाळी... हां रे लह्युं केवळज्ञान...***चंद्र.५**
समेतशिखर गिरि आविया प्रभु रंगे, मुनि कोडी सहस प्रसंगे,
*पाळी अणसण उलट अंगे... हां रे पाम्या परमानंद...***चंद्र.६**
श्री जिन उत्तम रुपने जे ध्यावे, ते कीर्ति कमला पावे,
*'**मोहनविजय**' गुण गावे... हां रे आपो अविचल राज...***चंद्र.७**

दानमां 'द्रव्यना' नहीं, पण दीलना 'माप' जोवाय छे.

२८ मैं कीनो नहीं......
(श्री सुविधिनाथ भगवान)

मैं कीनो नहीं, तुम बीन और शुं राग... (२)
दिन दिन वान चढत गुण तेरो, ज्युं कंचन पर भाग,
औरन में है कषाय की कालिमा, सो क्युं सेवा लाग. **..मैं. १**
राजहंस तुं मान सरोवर, और अशुचि रुचि काग,
विषय भुजंगम गरुड ते कहीये, और विषय विष नाग. **..मैं. २**
और देव जल छिल्लर सरीखे, तुं तो समुद्र अथाग,
तुं सुरतरु जग वांछित पूरण, और तो सूके साग. **..मैं. ३**
तुं पुरुषोत्तम, तुं हीं निरंजन, तुं शंकर वडभाग,
तुं ब्रह्मा, तुं बुद्ध महाबल, तुं ही ज देव वितराग. **..मैं. ४**
सुविधिनाथ तुम गुण फुलन को, मेरो दिल है बाग,
'जस' *कहे भ्रमर रसिक होय तामें, लीजे भक्ति पराग.* **..मैं. ५**

२९ श्री शीतल जिन वंदीए...
(श्री शीतलनाथ भगवान)

श्री शीतलजिन वंदीए, **अरिहंताजी**, *शीतलदर्शन जास,* **भगवंताजी.**
विषय कषाय शमाववा... **अरि...** *अभिनव जाणे बरास...* **भग.**

दान देनारो गुमावतो नथी, खरेखर तो, आपीने ते अगणित मेळवे छे.

बागना चंदन परिकरे...... **अरि...** *कंटक रुप सुवास* **भग.**
तिम कंटक मन माहरुं...... **अरि...** *तुम ध्याने होवे शुभवास.* **भग.**
नंदन नंदा मातनो........ **अरि..** *करे आनंदित लोक.* **भग.**
*श्री दढरथ नृप कुलदिनमणि...***अरि...** *जित मद मान ने शोक...* **भग.**
*श्रीवत्स लंछन मिसि रहे.....***अरि...** *पगकमळे सुखकार...* **भग.**
मंगलिकमां ते थयो...... **अरि...** *गुण प्रभु आधार...* **भग.**
*केवळ कमळा आपीए....***अरि...** *ते वाधे जगनाथ...* **भग.**
'न्यायसागर' *नी विनंति......***अरि...** *सुणो तिहुं जगना स्वाम...***भग.**

३० श्री श्रेयांसजिन अंतरजामी...
(श्री श्रेयांसनाथ भगवान)

श्री श्रेयांसजिन अंतरजामी, आतमरामी नामी रे,
अध्यात्म मत पूरण पामी, सहज मुक्ति गति गामी रे. **..श्री.**
सयल संसारी ईन्द्रियरामी, मुनि गुण आतमरामी रे,
मुख्यपणे जे आतमरामी, ते केवळ नि:कामी रे. **..श्री.**
निज स्वरुप जे किरिया साधे, तेह अध्यातम लहीये रे,
जे किरिया करी चउगति साधे, ते न अध्यातम कहीये रे. **..श्री.**
नाम अध्यातम ठवण अध्यातम, द्रव्य अध्यातम छंडो रे,
भाव अध्यातम निज गुण साधे, तो तेहशुं रढ मंडो रे. **..श्री.**

'नथी' नी फरियादोमां ज जे 'छे', तेना सुखने माणी नथी शकतो आजनो मानवी

शब्द अध्यातम अर्थ सुणीने, निर्विकल्प आदरजो रे,
शब्द अध्यातम भजना जाणी, हान ग्रहण मति धरजो रे. **..श्री.**
अध्यातम जे वस्तु विचारी, बीजा जाण लबासी रे,
वस्तु गते वस्तु प्रकाशे, 'आनंदघन' मतवासी रे. **..श्री.**

३१ स्वामी ! तुमे कांई कामण कीधुं...
(श्री वासुपूज्यस्वामी)

स्वामी ! तुमे कांई कामण कीधुं, चितडुं अमारुं चोरी लीधुं,
अमे पण तुमशुं कामण करशुं, भक्ते ग्रही मनघरमां धरशुं,
साहिबा वासुपूज्य जिणंदा, मोहना वासुपूज्य जिणंदा. **..सा.**
मन घरमां धरीआ घर शोभा, देखत नित्य रहेशो थिर थोभा,
मन वैकुंठ अकुंठित भक्ते, योगी भाखे अनुभव जुगते. **..सा.**
क्लेशे वासित मन संसार, क्लेश रहित मन ते भव पार,
जो विशुद्ध मनघर तुमे आया, तो अमे नवनिधि ऋद्धि पाया. **..सा.**
सात राज अलगा जई बेठा, पण भक्ते अम मनमांहि पेठा,
अलगाने वलग्या जे रहेवुं, ते भाणा खडखड दु:ख सहेवुं. **..सा.**
ध्यातां ध्येय ध्यान गुण एके, भेद छेद करशुं हवे टेके,
क्षीर नीर परे तुमशुं मळशुं, वाचक **'यश'** *कहे हेजे हळशुं.* **..सा.**

संबंधो उपयोगीताना नहीं... आत्मीयताना होवा जोईए.

३२ सेवो भविया...
(श्री विमलनाथ भगवान)

सेवो भविया विमल जिनेश्वर, दुल्लहा सज्जन संगाजी,
*एहवा प्रभुनुं दर्शन लहेवुं, ते आळसमांही गंगाजी...***सेवो.१**
अवसर पामी आळस करशे, ते मुरखमां पहेलोजी,
*भूख्याने जिम घेबर देतां, हाथ न मांडे घेलोजी...***सेवो.२**
भव अनंतमां दरिशन दीठुं, प्रभु एहवा देखाडेजी,
*विकट पंथ जे पोळ पोळीयो, कर्म विवर उघाडेजी...***सेवो.३**
तत्व प्रीतिकर पाणी पाये, विमला लोके आंजीजी,
*लोयण गुरु परमान्न दीये तव, भ्रम नांखे सवि भांजीजी...***सेवो.४**
भ्रम भांग्यो तव प्रभुशुं प्रेमे, वात करुं मन खोलीजी,
*सरल तणे जे हियडे आवे, तेह जणावे बोलीजी...***सेवो.५**
श्री नयविजय विबुध पयसेवक, वाचक **'जस'** *कहे साचुंजी,*
*कोडी कपट जो कोई दिखावे, तोये प्रभु विण नवि राचुंजी...***सेवो.६**

'हुं' बहु धर्म करु छुं... 'हुं' बहु धार्मिक छुं,
'हुं' बहु होशीयार छुं... 'हुं' कांईक छुं...
आवी मान्यता के भ्रमणामांथी क्यारे बहार आवशुं आपणे ?

हे जीव ! तुं शुं काम करे बीजा पर रोष, बधो ज छे तारा करेला करमनो दोष.

३३ प्रभुजी ! मुज अवगुण...
(श्री विमलनाथ भगवान)

प्रभुजी ! मुज अवगुण मत देखो... (२)
राग दशाथी तुं रहे न्यारो, हुं मन रागे वाळुं,
द्वेष रहित तुं समता भीनो, द्वेष मारग हुं चालुं. **हो.प्र.१**
मोह लेश फरस्यो नहीं तुजने, मोह लगन मुज प्यारी,
तुं अकलंकित कलंकित हुं तो, ए पण रहेणी न्यारी.. **हो.प्र.२**
तुं ही निरागी भावपद साथे, हुं आशा संग विलुद्धो,
तुं निश्चल हुं चल तुं सीधो, हुं आचरणे उंधो. **हो.प्र.३**
तुज स्वभावथी अवळा मारा, चरित्र सकल जगे जाण्यां,
एहवा अवगुण मुज अतिभारी, न घटे तुज मुख आण्यां. **हो.प्र.४**
प्रेम नवल जो होई सवाई, विमलनाथ मुख आगे,
'**कांति**' कहे भवरान उतरतां, तो वेळा नवि लागे. **हो.प्र.५**

३४ धार तलवारनी...
(श्री अनंतनाथ भगवान)

धारतलवारनी सोहिली दोहिली, चौदमां जिनतणी चरणसेवा,
धार पर नाचता देख बाजीगरा, सेवना धार पर रहे न देवा...१
एक कहे सेवीए विविध किरिया करी, फळ अनेकांत लोचन न देखे,
फळ अनेकांत किरिया करी बापडा, रडवडे चार गतिमांहि लेखे...२

अहींया जे छोडीने ज जवानुं छे तेना माटे आटली बधी महेनत शुं कामनी.

गच्छना भेद बहु न्याय निहाळतां, तत्त्वनी वात करतां न लाजे,
उदर भरणादि निज काज करतां थकां, मोह नडिया कलिकाल राजे...३
वचन निरपेक्ष व्यवहार जूठो कह्यो, वचनसापेक्ष व्यवहार साचो,
वचन निरपेक्ष व्यवहार संसार फळ, सांभळी आदरी कांई राचो...४
देवगुरु धर्मनी शुद्धि कहो कीम रहे ? किम रहे शुद्ध श्रद्धा न जाणो ?
शुद्ध श्रध्धान विण सर्व किरिया कही, छार पण लींपणुं तेह जाणो...५
पाप नहीं कोई ऊत्सूत्र भाषण जिस्युं, धर्म नहीं कोई जगसूत्र सरिखो,
सूत्र अनुसार जे भविक किरिया करे, तेहनुं शुद्ध चारित्र परिखो...६
एह उपदेशनो सार संक्षेपथी, जे नरा चित्तमां नित्य ध्यावे,
ते नरा दिव्य बहु काळ सुख अनुभवी, नियत '**आनंदघन**' राज पावे...७

३५ धर्मजिनेश्वर गाउं रंग शुं.. (श्री धर्मनाथ भ.)

धर्म जिनेसर गाउं रंगशुं, भंग म पडशो हो प्रीत जिनेश्वर,
बीजो मन मंदिर आणुं नहीं, ए अम कुलवट रीत जिनेश्वर... ध.
धरम धरम करतो जग सहु फिरे, धर्म न जाणे हो मर्म, जिनेश्वर,
धर्म जिणेसर चरण ग्रह्या पछी, कोई न बांधे हो कर्म जिनेश्वर... ध.
प्रवचन अंजन जो सद्गुरु करे, देखे परम निधान, जिनेश्वर,
हृदय नयण निहाणे जगधणी, महिमा मेरु समान जिनेश्वर... ध.

हाडका वगरनी बेफाम 'जीभ' घणाना हाडकां भांगी शके छे.

दोडत दोडत दोडत दोडीयो, जेती मननी रे दोड, जिनेश्वर
प्रेम प्रतीत विचारो ढुंकडी, गुरुगम लेजो रे जोड जिनेश्वर...ध.
एक पखी किम प्रीति परवडे, उभय मिल्यां होय संधि, जिनेश्वर
हुं रागी हुं मोहे फंदीयो, तुं नीरागी निरबंध जिनेश्वर...ध.
परमनिधान प्रगट मुख आगळे, जगत ऊलंघी हो जाय, जिनेश्वर
ज्योति विना जुओ जगदीशनी, अंधो अंध पलाय जिनेश्वर...ध.
निर्मल गुणमणि रोहण भूधरा, मुनिजन मानहंस, जिनेश्वर
धन्य ते नगरी धन्य वेळा, घडी मात पिता कुळ वंश जिनेश्वर...ध.
मन मधुकरवर करजोडी कहे, पदकज निकट निवास, जिनेश्वर
घननामी '**आनंदघन**' सांभळो, ए सेवक अरदास जिनेश्वर...ध.

३६ शांति जिनेश्वर साचो साहिब... (श्री शांतिनाथ भ.)

शांतिजिनेश्वरसाचोसाहिब, शांतिकरणईन-कलिमेंहोजिनजी,
तुं मेरा मनमें तुं मेरा दिलमें, ध्यान धरुं पल पलमें साहेबजी... तुं.
भवमां भमतां में दरिशन पायो, आशा पूरो अेक पलमें हो जिनजी... तुं.
निर्मळ ज्योत वदन पर सोहे, निकस्यो ज्युं चंद बादलमें हो जिनजी... तुं.
मेरो मन तुम साथे लीनो, मीन वसे ज्युं जलमें हो जिनजी... तुं.
'**जिनरंग**' कहे प्रभु शांति जिनेश्वर, दीठोजी देव सकलमें हो जिनजी...तुं.

शब्दोना माध्यमे हैयुं होठ पर बेसे एनुं नाम प्रार्थना.

३७ सुणो शांति जिणंद सौभागी...
(श्री शांतिनाथ भगवान)

सुणो शांति जिणंद सौभागी, हुं तो थयो छुं तुम गुणरागी,
तुमे निरागी भगवंत, जोतां किम मळशे तंत. **सुणो.१**
हुं तो क्रोध कषायनो भरियो, तुं तो उपशम रसनो दरियो,
हुं तो अज्ञाने आवरियो, तुं तो केवल कमला वरियो. **सुणो.२**
हुं तो विषया रसनो आशी, तें तो विषय कीधा निराशी,
हुं तो कर्मने भारे भरीयो, तें तो प्रभुजी भार उतार्यो, **सुणो.३**
हुं तो मोहतणे वश पडीयो, तें तो सघळा मोहने हणीयो,
हुं तो भवसमुद्रमां खूंच्यो, तुं तो शिवमंदिरमां पहोंच्यो. **सुणो.४**
मारे जन्म-मरणनो जोरो, तें तो तोड्यो तेहनो दोरो,
मारो पासो न मेले राग, तमे प्रभुजी थया वितराग. **सुणो.५**
मने मायाए मूक्यो पाशी, तुं तो निरबंधन अविनाशी,
हुं तो समकितथी अधूरो, तुं तो सकल पदारथे पूरो. **सुणो.६**
मारे तो तुं ही प्रभु एक, तारे मुज सरिखा अनेक,
हुं तो मनथी न मुकुं मान, तुं तो मान रहित भगवान. **सुणो.७**
मारुं कीधुं कशुं नवि थाय, तुं तो रंकने करे छे राय,
एक करो मुज महेरबानी, मारो मुजरो लेजो मानी. **सुणो.८**

तमारां सुखमां तमे कोईने साचवशो तो तमारा दुःखमां कोई तमने साचवशे.

एकवार जो नजरे नीरखो, तो करो मुजने तुम सरीखो,
जो सेवक तुम सरीखो थाशे, तो गुण तमारा गाशे. **सुणो.९**
भवोभव तुम चरणोनी सेवा, हुं तो मांगुं छुं देवाधिदेवा,
सामुं जुओने सेवक जाणी, एवी **'उदयरत्ननी'** *वाणी.* **सुणो.१०**

३८ मारो मुजरो ल्योने राज...
(श्री शांतिनाथ भगवान)

मारो मुजरो ल्योने राज ! साहिब ! शांति सलुणा !
अचिराजीना नंदन तोरे, दरिसण हेते आव्यो,
समकित रीझ करोने स्वामी, भक्ति भेटणुं लाव्यो. **मा.१**
दु:खभंजन छे बिरुद तमारुं, अमने आश तुमारी,
तुमे निरागी थईने छूटो, शी गति होशे अमारी ? **मा.२**
कहेशे लोक न ताणी कहेवुं, एवडुं स्वामी आगे,
पण बाळक जो बोली न जाणे, तो किम व्हालो लागे. **मा.३**
म्हारे तो तुं समरथ साहिब, तो किम ओछुं मानुं ?
चिंतामणी जेणे गांठे बांध्युं, तेहने काम किश्यानुं. **मा.४**
अध्यातम रवि उग्यो मुज घट, मोह तिमिर हर्युं जुगते,
विमलविजय वाचकनो सेवक, **'राम'** *कहे शुभ भगते.* **मा.५**

पांखो वगर उडती होय अने पग वगर दोडती होय, एनुं नाम अफवा.

३९ मनडुं किम ही न बाजे...
(श्री कुंथुनाथ भगवान)

मनडुं किम ही न बाजे, हो कुंथुं जिन ! मनडुं किम ही न बाजे,
जिम जिम जतन करीने राखुं, तिम तिम अळगुं भाजे. **हो कुंथुं. १.**
रजनी वासर वसती उज्जड, गयण पायाले जाय,
साप खाय ने मुखडुं थोथुं, एह उखाणो न्याय. **हो कुंथु. २.**
मुक्तितणा अभिलाषी तपिया, ज्ञान ने ध्यान अभ्यासे,
वयरीडुं कांई एहवुं चिन्ते, नांखे अवळे पासे. **हो कुंथुं. ३.**
आगम आगमधरने हाथे, नावे किण विध आंकु,
तिहां कणे जो हठ करी अटकुं, तो व्याल तणी परे वांकु. **हो कुंथु. ४.**
जो ठग कहुं तो ठगतो न देखुं, शाहुकार पण नाही,
सर्वमांहे ने सहुथी अलगुं, ए अचरज मनमांही. **हो कुंथुं. ५.**
जे जे कहुं ते कान न धारे, आप मते रहे कालो,
सुरनर पंडित जन समजावे, समजे न मारो सालो. **हो कुंथु. ६.**
में जाण्युं ए लिंग नपुंसक, सकल मरदने ठेले,
बीजी वाते समरथ छे नर, एहने कोई न झेले. **हो कुंथु. ७.**
मन साध्युं तेणे सघळुं साध्युं, एह वात नहीं खोटी,
एम कहे साध्युं ते नवि मानुं, एही ज वात छे मोटी. **हो कुंथु. ८.**

'क्रोध' एटले ज्वाळा वगरनो शरीर प्रजाळतो अग्नि.

मनडुं दुराराध्य तें वश आण्युं, ते आगमथी मति आणुं,
'आनंदघन' *प्रभु ! माहरुं आणो, तो साचुं करी जाणुं.* **हो कुंथु. ९**

४० अरनाथको सदा मेरी वंदना.....
(श्री अरनाथ भगवान)

वंदना वंदना वंदना रे, अरनाथको सदा मेरी वंदना.
वंदना ते पाप निकंदना रे, मेरे नाथको सदा मेरी वंदना.
जग उपकारी धन ज्यों वरसे, वाणी शीतल चंदना रे. **अर.१**
रुपे रंभा राणी श्री देवी, भूप सुदर्शन नंदना रे. **अर.२.**
भाव भगति शुं अहर्निश सेवे, दुरित हरे भव कंदना रे. **अर.३**
छ खंड साधी भीति द्विधा कीधी, दुर्जन शत्रु निकंदना रे. **अर.४**
'न्यायसागर' *प्रभु सेवा मेवा, मांगे परमानंदना रे.* **अर.५.**

४१ प्रभु मल्लिजिणंद..... (श्री मल्लिनाथ भगवान)

प्रभु मल्लिजिणंद शांति आपजो,
कापो मारा भवोदधिना ताप रे,
दयाळु देवा... मल्लिजिणंद शांति आपजो.
अचल अमल ने अकल तुं, कषाय मोह नथी लवलेश रे. **दया.१**
वितराग देवने वंदु सदा, बाळ ब्रह्मचारी विख्यात रे. **दया.२**

कोई भौतिक 'सुख' एवुं नथी के जेनी पाछळ 'दु:ख' उभेलुं न होय.

सर्प डस्यो छे मने क्रोधनो, रगे-रग व्याप्युं छे जेनुं विष रे. **दया.३**
मान पत्थर स्तंभ सारीखो, मने कीधो तेणे जळवान रे. **दया.४**
माया डाकण वळगी मने, आप विना कोण छोडावनार रे. **दया.५**
लोभ समुद्रमां हुं भम्यो, हुं भम्यो छुं भवदु:ख वार रे. **दया.६**
आप शरण हवे आवीयो, रक्षण करो मुज जगनाथ रे. **दया.७**
अरजी आ बाळनी स्वीकारजो, **'ज्ञानविमल'** *लेजो बाळ हाथ रे.* **दया.८**

४२ मुनिसुव्रत मन मोह्युं मारुं.....
(श्री मुनिसुव्रत स्वामी)

मुनिसुव्रत मन मोह्युं मारुं, शरण ग्रह्युं छे तमारुं,
प्रात: समय ज्यारे हुं जागुं, स्मरण करुं छुं तमारुं,
हो जिनजी तुज मूरति मन हरणी, भवसायर जल तरणी. **हो.१**
आप भरोसे आ जगमां छुं, तारो तो घणुं सारुं,
जन्म जरा मरणो करी थाक्यो, आशरो लीधो छे में तारो. **हो.२**
चुं चुं चुं चुं चिडीया बोले, भजन करे छे तमारुं,
मूर्ख मनुष्य प्रमादे पड्यो रहे, नाम जपे नहीं तारुं. **हो.३**
भोर थतां बहु शोर सुणुं हुं, कोई हसे कोई रुवे न्यारुं,
सुखीओ सुवे दु:खीओ रुवे, अकल गतिए विचारुं. **हो.४**

कुटुंब परिवारमां कलह थवाना कारणरुप, वाणीनी कठोरताने शुं दूर न करी शकाय ?

खेल खलकनां बधा नाटकनो, कुटुंब कबिलो हुं धारुं,
ज्यां सुधी स्वार्थ त्यां सुधी सर्वे, अंत समये सहु न्यारुं. **हो.५**
माया जाळ तणी जोई जी, जगत लागे छे खारुं,
'उदयरत्न' *एम जाणी प्रभु तारुं, शरण ग्रह्युं छे में साचुं.* **हो.६**

४३ श्री नमिनाथने चरणे रमतां.....
(श्री नमिनाथ भगवान)

श्री नमिनाथने चरणे रमतां, मनगमतां सुख लहीए रे,
भवजंगलमां भमतां भमतां, कर्म निकाचित दहीए रे. **..श्री.१**
समकित शिवपुरमांही पहोंचाडे, समकित धरम आधार रे,
श्री जिनवरनी पूजा करीए, ए समकितनुं सार रे. **..श्री.२**
जे समकितथी होय उपरांठा, तेना सुख जाय नाठां रे,
जे कहे जिनपूजा नवि कीजे, तेहनुं नाम नहीं लीजे रे. **..श्री.३**
वप्राराणीनो सूत पूजो, जिम संसारे न ध्रुजो रे,
भवजलतारक कष्ट निवारक, नहि कोई अेहवो दूजो रे. **..श्री.४**
श्री 'कीर्तिविजय' उवज्झायनो सेवक, विनय कहे प्रभु सेवो रे,
त्रण तत्त्व मनमांहि अवधारो, वंदो अरिहंत देवो रे. **..श्री.५**

कुसंप... घर, समाज अने देशने वेरविखेर करी नांखे छे.

४४ निरख्यो नेमि जिणंदने.....
(श्री नेमिनाथ भगवान)

निरख्यो नेमि जिणंदने... **अरिहंताजी**, *राजीमती कर्यो त्याग...* **भगवंताजी**
ब्रह्मचारी संयम ग्रह्यो... **अरि.** *अनुक्रमे थया वीतराग...* **भग.**
चामर चक्र सिंहासन... **अरि.** *पादपीठ संयुक्त...* **भग.**
छत्र चाले आकाशमां... **अरि.** *देवदुंदुभि वर उत्त...* **भग.**
सहस जोयण ध्वज सोहतो.. **अरि.** *प्रभु आगळ चालंत...* **भग.**
कनक कमल नव उपरे... **अरि.** *विचरे पाय ठवंत...* **भग.**
चार मुखे दीये देशना... **अरि.** *त्रण गढ झाकझमाल...* **भग.**
केश रोम श्मश्रु नखा... **अरि.** *वाधे नहि कोई काल...* **भग.**
कांटा पण ऊंधा होये... **अरि.** *पंच विषय अनुकूल...* **भग.**
षटऋतु समकाले फळे... **अरि.** *वायु नहीं प्रतिकूल...* **भग.**
पाणी सुगंध सुर कुसुमनी... **अरि.** *वृष्टि होय सुरसाल...* **भग.**
पंखी दीये सुप्रदक्षिणा... **अरि.** *वृक्ष नमे असराल...* **भग.**
जिन उत्तम पद पद्मनी... **अरि.** *सेव करे सुरकोडी...* **भग.**
चार निकायना जघन्यथी... **अरि.** *चैत्यवृक्ष तेम जोडी...* **भग.**

क्लेशसहित मन ते संसार, क्लेशरहित मन ते भवपार (मोक्ष)

श्री पार्श्वनाथ भगवानना स्तवनो १३

४५ तुं प्रभु मारो, हुं प्रभु तारो...... (१)

तुं प्रभु मारो हुं प्रभु तारो, क्षण एक मुजने नाही विसारो,
महेर करी मुज विनंति स्वीकारो, स्वामी सेवक जाणी निहाळो. **...१**
लाख चोराशी भटकी प्रभुजी, आव्यो हुं तारे शरणे हो जिनजी,
दुर्गति कापो, शिवसुख आपो, भक्त सेवकने निजपद स्थापो. **...२**
अक्षय खजानो प्रभु तारो भर्यो छे, आपो कृपाळु में हाथ धर्यो छे,
वामानंदन जगवंदन प्यारो, देव अनेरा मांहे तुं छे न्यारो. **...३**
पल पल समरुं नाथ शंखेश्वर, समरथ तारण तुं ही जिनेश्वर,
प्राण थकी तुं अधिको व्हालो, दया करी मुजने नयणे निहाळो. **...४**
भक्त वत्सल तारुं बिरुद जाणी, केडो न छोडुं एम लेजो जाणी,
चरणोनी सेवा नित नित चाहुं, घडी घडी मनमांहे हुं उमाहुं. **...५**
'ज्ञानविमल' *तुज भक्ति प्रभावे, भवोभवना संताप शमावे,*
अमीय भरेली तारी मूरति निहाळी, पाप अंतरना देजो पखाळी. **...६**

प्रभुनो दास... क्यारे'य ना होय उदास !

४६ राता जेवा फूलडाने... (२)

राता जेवा फूलडाने, शामळ जेवो रंग,
आज तारी आंगीनो कांई, रुडो बन्यो छे रंग,
प्यारा पार्श्वजी हो लाल, दीनदयाळ मुजने नयणे निहाळ. **...प्यारा.१.**
जोगीवाडे जागतो ने, मातो धिंगडमल,
श्यामळो सोहामणो कांई, जीत्या आठे मल्ल. **...प्यारा.२**
तुं छे मारो साहिबो ने, हुं छुं तारो दास,
आशा पूरो दासनी कांई, सांभळी अरदास. **...प्यारा.३**
देव सघळां दीठां तेमां, एक तुं अव्वल,
लाखेणुं छे लटकुं ताहरुं, देखी रीझे दिल प्यारा. **...प्यारा.४**
कोई नमे पीरने ने, कोई नमे राम,
'उदयरत्न' *कहे प्रभुजी, मारे तुमशुं काम.* **...प्यारा.५**

४७ समय समय सो वार संभारुं... (३)

समय समय सो वार संभारुं, तुजशुं लगनी जोर रे,
मोहन मुजरो मानी लेजे, ज्युं जलधर प्रीति मोर रे. **स.१**
माहरे तन धन जीवन तुंही, एहमां जूठ न जाणो रे,
अंतरजामी जगजन नेता, तुं कीहां नथी छानो रे. **स.२**
जेणे तुजने हीयडे नथी राख्यो, तास जनम कुण लेखे रे,
काचे राचे ते नर मुरख, रतनने दूर उवेखे रे. **स.३**
सुरतरु छाया मूकी गहरी, बाउल तणे कुण बेसे रे,
ताहरी ओलग लागे मीठी, केम छोडाय सविशेषे रे. **स.४**

कंठनुं भूषण पांच तोलानो कंठो के चेन नहि, पण कोमळ अने सत्य वचनो छे.

वामानंदन पार्श्व प्रभुजी, अरजी उरमां आणो रे,
रुप विबुधनो 'मोहन' पभणे, जिन सेवक करी जाणो रे. **स.५**

४८ आवो आवो पार्श्वजी..... (४)

आवो ! आवो पार्श्वजी मुज मळीया रे,
मारा मनना मनोरथ फळीया, **....आवो.**
तारी मूरति मोहनगारी रे, सहु संघने लागे छे प्यारी रे,
तमने मोही रह्या सुर नर नारी. **....आवो.१**
अलबेली मूरत प्रभु तारी रे, तारा मुखडा उपर जाउं वारी रे,
नाग नागणीनी जोड उगारी. **....आवो.२**
धन्य धन्य देवाधिदेवा रे, सुरलोक करे छे सेवा रे,
अमने आपोने शिवपुर मेवा. **....आवो.३**
तमे शिवरमणीना रसिया रे, जई मोक्षपुरीमां वसीया रे,
मारा हृदय कमळमां वसीया. **....आवो.४**
जे कोई पार्श्वतणा गुण गाशे रे, भवोभवना पातिक जाशे रे,
तेना समकित निर्मळ थाशे. **....आवो.५**
प्रबु त्रेवीशमां जिनराया रे, माता वामादेवीना जाया रे,
अमने दरिशन द्योने दयाळा. **....आवो.६**
हुं तो लळी लळी लागुं छुं पाय रे, मारा उरमां ते हरख न माय रे,
*अेम '**माणेकविजय**' गुण गाय.* **....आवो.७**

बाळकने केम घडवो ते तो 'मा'ना हैया अने हाथनी वात छे.

४९ प्यारो प्यारो रे ! हो व्हाला मारा..... (५)

प्यारो प्यारो रे ! हो व्हाला मारा, पार्श्व जिणंद मने प्यारो,
तारो तारो रे, हो व्हाला मारा, भवनां दुःखडा वारो.
काशी देश वाराणसी नगरी, अश्वसेन कुल सोहीये रे,
*पार्श्वजिणंदा वामानंदा मारा व्हाला, देखत जन मन मोहिये....***प्या.१**
छप्पन दिक्कुमरी मळी आवे, प्रभुजीने हुलरावे रे,
*थेई थेई नाच करे मारा व्हाला, हरखे जिन गुण गावे....***प्या.२**
कमठ हठ गाळ्यो प्रभु पार्श्वे, बळतो उगार्यो फणी नाग रे,
*दीयो सार नवकार नागकुं, धरणेन्द्र पद पायो....***प्या.३**
दीक्षा लई प्रभु केवल पायो, समवसरणमें सुहायो रे,
*दीये मधुरी देशना प्रभु, चौमुख धर्म सुणायो....***प्या.४**
कर्म खपावी शिवपुर जावे, अजरामर पद पावे रे,
*'**ज्ञान**' अमृतरस फरसे मारा व्हाला, ज्योतिसे ज्योति मिलावे....***प्या.५**

५० नवखंडाजी हो पार्श्व..... (६)

नवखंडाजी हो पार्श्व, मनडुं लोभावी बेठा आप उदास,
तारे तो अनेक छे ने, मारे तो तुं एक,
काम क्रोधी देव जोई, काढी नांखी टेक. **...नव.१**

अरे सुधारक जगत के, मत कर चिंता यार, दिल ही तेरा जगत है, पहेले ईसे सुधार.

कोई देवी देवताना, झाली उभा हाथ,
मोढे मांडी मोरली ने, नाचे राधा नाच. **...नव.२**
जटा जूट शिर धारे, वळी चोळे राख,
गळे तो गिरिजाने राखे, जोगीपणुं खाख. **...नव.३**
पीरने फकीर जोया, निरगुणी देव,
काच कणी मणी गणी, आ तो खोटी टेव. **...नव.४**
देव देखी जूठडाने, आव्यो छुं हजुर,
*गुण आपो आपना तो, '**कांति**' भरपुर.* **...नव.५**

४९ तारा नयना रे प्याला प्रेमनां..... (७)

तारा नयना रे प्याला, प्रेमनां भर्या छे,
दयारसना भर्या छे, अमी छांटना भर्या छे. **...तारा.१**
जे कोई तारी नजरे चढी आवे, कारज तेनां ते सफळ कर्यां छे. **...तारा.२**
प्रगट थई पाताळथी प्रभु तें, जादवनां दुःख दूर कर्यां छे. **...तारा.३**
पन्नगपति पावकथी उगार्यो, जनम मरण भय तेहना हर्यां छे. **...तारा.४**
पतित पावन शरणागत वत्सल, दरिशन दीठे मारां चितडां ठर्यां छे. **...तारा.५**
श्री शंखेश्वर पार्श्व जिनेश्वर, तुज पद पंकज आजथी वर्या छे. **...तारा.६**
*जे कोई तुजने ध्यावे, '**अमृत**' सुखनां रंगथी वर्या छे.* **...तारा.७**

फोगटनी चिंता करता अटकशो तो ज जीवनमां सुखी थई शकशो.

५२ मनमोहन प्रभु पार्श्वजी..... (८)

मनमोहन प्रभु पार्श्वजी, सुणो जगत आधारजी,
शरणे आव्यो प्रभु ताहरे, मुज दुरित निवारजी. **...मन.१**
विषय कषायना पासमां, भमीयो काळ अनंतजी,
राग-द्वेष महा चोरटा, लूंट्यो धर्मनो पंथजी. **...मन.२**
पण कांई पूरव पून्यथी, मळीया श्री जिनराजजी,
भवसमुद्रमां डुबतां, आलंबन जिम जहाजजी, **...मन.३**
कमठे निज अज्ञानथी, उपसर्ग कीधा बहु जातजी,
ध्यानानल प्रगटावीने, कीधो कर्मनो घातजी. **...मन.४**
केवळज्ञानथी देखीयुं, लोकालोक स्वरुपजी,
विजय मुक्ति पद जई वर्या, सादी अनंत चिद्रुपजी. **...मन.५**
ते पद पामवा चाहतो, 'मोहन' कमलनो दासजी,
मनमोहन प्रभु माहरी, पूरजो मनडानी आशजी. **...मन.६**

५३ अंतरजामी सुण अलवेसर..... (९)

अंतरजामी सुण अलवेसर, महिमा त्रिजग तुमारो रे,
सांभळीने आव्यो हुं तीरे, जन्म-मरण दुःख वारो,
सेवक अरज करे छे राज, अमने शिवसुख आपो,
आपो आपोने महाराज, अमने मोक्ष सुख आपो. **...से.१**

'सुख' तो पुण्य हशे तेटलुं ज मळशे, पण 'शांति' तो आपणी समजणथी ज मळशे.

सहुकोना मनवांछित पूरो, चिंता सहुनी चूरो रे,
एहवुं बिरुद छे राज तमारुं, केम राखो छो दूरे ? **...से.२**
सेवकने वलवलतो देखी, मनमां महेर न धरशो रे,
करुणासागर केम कहेवाशो, जो उपकार न करशो. **...से.३**
लटपटनुं हवे काम नहीं छे, प्रत्यक्ष दरिशन दीजे रे,
धुमाडे धीजुं नहीं साहिब, पेट पड्यां पतिजे, **...से.४**
श्री शंखेश्वर मंडण साहेब, विनतडी अवधारो रे,
कहे '**जिनहर्ष**' मया करी मुजने, भवसागरथी तारो. **...से.५**

५४ कोयल टहुकी रही मधुबन में..... (१०)

कोयल टहुकी रही मधुबनमें,
पार्श्व शामळिया वसो मेरे मनमें,
वसो मेरे मनमें, वसो मेरे दिलमें
पार्श्व शामळीया वसो मेरे मनमें. **(२)...पार्श्व.१**
काशी देश वाराणसी नगरी,
जनम लीयो प्रभु क्षत्रिय कुळमें. **(२)...पार्श्व.२**
बाळपणामां प्रभु अद्‌भूत ज्ञानी,
कमठको मान हण्यो एक पलमें. **(२)...पार्श्व.३**

'माता-पितानी' विनय मर्यादा साचववी ए गृहस्थ जीवननी उत्तम 'शोभा' छे.

नाग निकाला काष्ठ चिराकर,
नागको सुरपति कीयो एक छिनमें. **(२)...पार्श्व.४**
संयम लई प्रभु विचरवा लाग्यां,
संयमें भींज गयो एक रंगमें. **(२)...पार्श्व.५**
समेतशिखर प्रभु मोक्षे सिधाव्या,
पार्श्वजीको महिमा तीन भुवनमें. **(२)...पार्श्व.६**
'**उदय**' रतनकी एही अरज है,
दिल अटक्यो तोरा चरणकमल में. **(२)...पार्श्व.७**

५५ जय ! जय ! जय ! प्रभु..... (११)

जय ! जय ! जय ! प्रभु ! पास जिणंद (२)..... !
अंतरीक्ष प्रभु त्रिभुवन तारण, भविक कमल उल्लास दिणंद. ...१
तेरे चरण शरणमें कीनो, तुम बिन कुण तोडे भव फंद,
परम पुरुष परमारथदर्शी, तुं दिये भविककुं परमानंद. ...२
तुं नायक तुं शिवसुखदायक, तुं हितचिंतक तुं सुख-कंद,
तुं जनरंजन, तुं भय-भंजन, तुं केवल-कमला गोविंद. ...३
कोडि देव मिलके कर न शके, एक अंगुष्ठ रुप प्रतिछंद,
एसो अद्‌भूत रुप तिहारो, बरसत मानुं अमृत को बुंद. ...४.
मेरे मन मधुकरके मोहन, तुम हो विमल सदल अरविंद,
नयन चकोर विलास करत है, देखत तुम मुख पूनमचंद. ...५.
दूर जावे प्रभु ! तुम दरिसनसे, दुःख दोहग दारिद्र अघदंद,
वाचक जस कहे सहस फलत तुम, जे बोले तुम गुण के वृंद. ...६.

सज्जन नयन-सुधारस-अंजन, दुरजन रवि भरनी,
तुज मूरति नीरखे सो पावे, सुख '**जस**' लील धनी. **..अ.६**

५६ पार्श्वजिणंदा वामाजी नंदा..... (१२)

पार्श्व जिणंदा वामाजी नंदा, तुम पर वारी जाउं बोल बोल रे,
हां रे ! दरवाजा तेरा खोल खोल रे.
दूर दूर से लंबी सफरसे, हम दरिसन आये दौड दौड रे, **...हां !**
पूजा करुंगा धूप धरुंगा, फुल चढाउंगा मोल मोल रे, **...हां !**
तुं मेरा ठाकर में तेरा चाकर, एक बार मुजसे बोल बोल रे, **...हां !**
श्री शंखेश्वर सुंदर मुरत, मुखडुं ते झाकम झोल झोल रे, **...हां !**
रुप विबुधनो 'मोहन' पभणे, रंग लाग्यो चित्त चोल चोल रे, **...हां !**

५७ अखियां हरखण लागी..... (१३)

अखियां हरखण लागी, हमारी अखीयां हरखण लागी.
दर्शन देखत पार्श्व जिणंद को, भाग्य दशा अब जागी. ... ॥ १ ॥
अकल अरुपी ओर अविनाशी, जगमें तुंही निरागी. ... ॥ २ ॥
सुरत सुंदर अचरिज एही, जग जनने करे रागी. ... ॥ ३ ॥
शरणागत प्रभु ! तुज पद पंकज, सेवना मुज मति जागी. ... ॥ ४ ॥
लीला लहेरे दे निज पदवी, तुम समको नहीं त्यागी. ... ॥ ५ ॥
वामानंदन चंदननी परे, शीतल तुं सौभागी. ... ॥ ६ ॥
ज्ञानविमल प्रभु ध्यान धरतां, भव भय भावठ भांगी. ... ॥ ७ ॥

'धनवान' कदाच पुण्यथी थवाय, पण 'गुणवान' तो पुरुषार्थथी ज थवाशे.

श्री महावीर स्वामी भगवानना स्तवनो ६

५८ दीन दुःखीयानो तुं छे बेली... (१)

दीन दुःखीयानो तुं छे बेली, तुं छे तारणहार,
....तारा महिमानो नहीं पार (२)
राजपाट ने वैभव छोडी, छोडी दीधो संसार,
...तारा महिमानो नहीं पार (२) १.
चंडकोशीयो डसीयो ज्यारे, दूधनी धारा पगथी नीकळे,
विषने बदले दूध जोईने, चंडकोशीयो आव्यो शरणे,
चंडकोशीयाने तें तारी, कीधो घणो उपकार.
...तारा महिमानो नहीं पार (२) २.
कानमां खीला ठोक्या ज्यारे, थई वेदना प्रभुने भारे,
तोय प्रभुजी शांत विचारे, गोवाळनो नहीं वांक लगारे,
क्षमा आपीनें तें जीवोने, तारी दीधो संसार,
...तारा महिमानो नहीं पार (२) ३.
महावीर महावीर गौतम पुकारे, आंखेथी आंसुनी धार वहावे,
क्यां गया एकला छोडी मुजने, हवे नथी कोई जगमां मारे,
पश्चाताप करतां करतां, उपन्युं केवलज्ञान.
...तारा महिमानो नहीं पार (२) ४.

मनने जीतनार योगी पासे, विश्वविजेता पण... झांखो लागे छे.

'**ज्ञानविमल**' गुरु वयणे आजे, गुण तमारा गावा काजे,
थई सुकानी तुं प्रभु आवे, भवजल नैया पार तरावे,
अरज अमारी दिलमां धारी, करीए वंदन वारंवार
...तारा महिमानो नहीं पार (२) ५.

५९ सिद्धारथना रे नंदन विनवुं..... (२)

सिद्धारथना रे नंदन विनवुं, विनतडी अवधार,
भवमंडपमां रे नाटक नाचीयो, हवे मुज दान देवराव,
हवे मुज पार उतार. **...सिद्धा.१**
त्रण रतन मुज आपो तातजी, जेम नावे रे संताप,
दान दियंता रे प्रभु कोसर कीसी ! आपो पदवी रे आप. **...सिद्धा.२**
चरण अंगुठे रे मेरु कंपावीयो, मोड्यां सुरनां रे मान,
अष्टकर्मना रे झघडा जीतवा, दीधां वरसी रे दान. **...सिद्धा.३**
शासननायक शिवसुखदायक, त्रिशला कुखे रतन,
सिद्धारथनो रे वंश दीपावीयो, प्रभुजी तमे धन्य धन्य. **...सिद्धा.४**
वाचक शेखर कीर्तिविजय गुरु, पामी तास पसाय,
धर्मतणा एह जिन चोवीसमा, '**विनयविजय**' गुण गाय. **...सिद्धा.५**

६० गिरुआ रे गुण तुम तणां..... (३)

गिरुआ रे गुण तुम तणां, श्री वर्धमान जिनराया रे,
सुणतां श्रवणे अमी झरे, म्हारी निर्मळ थाए काया रे. **...गि.१**

निंदा करनार पर क्रोध न करजो, मानजो निंदक तमारा पाप धुवे छे.

तुम गुण गण गंगाजळे, हुं झीलीने निर्मळ थाउं रे,
अवर न धंधो आदरुं, निशदिन तोरा गुण गाउं रे. **...गि.२**
झील्या जे गंगाजले, ते छिल्लर जल नवि पेसे रे,
जे मालती फूले मोहीया, ते बावळ जई नवि बेसे रे. **...गि.३**
एम अमे तुम गुण गोठशुं, रंगे राच्या ने वळी माच्या रे,
ते केम परसुर आदरे जे, परनारी वश राच्या रे. **...गि.४**
तुं गति तुं मति आशरो तुं, आलंबन मुज प्यारो रे,
वाचक '**यश**' कहे माहरे तुं, जीव जीवन आधारो रे. **...गि.५**

६१ रुडी ने रढीयाळी रें.....(४)

रुडी ने रढीयाळी रे, वीर तारी देशना रे,
ए तो भली योजनमां संभळाय,
समकित बीज आरोपण थाय. **...रुडी०..१**
षट् महिनानी रे भूख तरस शमे रे, साकर द्राक्ष ते हारी जाय,
कुमति जनना मद मोडाय. **...रुडी०..२**
चार निक्षेपे रे सात नये करी रे, मांहि भली सप्तभंगी विख्यात,
निज निज भाषाए समजाय. **...रुडी०..३**
प्रभुजीने ध्याता रे शिवपदवी लहे रे, आतम ऋद्धिनो भोक्ता थाय,
ज्ञानमां लोकालोक समाय. **...रुडी०..४**
प्रभुजी सरीखा रे देशक को नहीं रे, एम सहु जिन उत्तम गुण गाय,
प्रभुपद '**पद्म**' ने नित्य नित्य ध्याय. **...रुडी०..५**

आपणुं अशुभ मन ए 'नरक' छे अने शुभ मन ए 'स्वर्ग' छे.

६२ वीरजी सुणो एक विनंती मोरी.....(५)

वीरजी सुणो एक विनंती मोरी, वात विचारो तुमे धणी रे,
वीर मने तारो, महावीर मने तारो, भवजल पार उतारो ने. **...वीर.**
परिभ्रमण में अनंता रे कीधां, हजुए न आव्यो छेडलो रे,
तुमे तो थया प्रभु सिद्ध निरंजन, अमे तो अनंता भव पाम्या रे. **...वीर.**
तमे अमे वार अनंती वेळा, रमीआ संसारीपणे रे,
तेह प्रीत जो पुरण पाळो, तो हमने तुम सम करो रे. **...वीर.**
तुम सम हमने योग्य न जाणो, तो कांई थोडुं दीजीए रे,
भवोभव तुम चरणोनी सेवा, पामी अमे घणुं रीझीए रे. **...वीर.**
ईंद्रजाळीयो कहेतो रे आव्यो, गणधर पद तेहने दीयो रे,
अर्जुनमाळी जे घोर पापी, तेहने जिन तमे उद्धर्यो रे. **...वीर.**
चंदनबाळाए अडदना बाकुळा, पडिलाभ्या तमने प्रभु रे,
तेहने साहूणी साची रे कीधी, शिववधू साथे भेळवी रे. **...वीर.**
चरणे चंडकौशीयो डसीयो, कल्प आठमे ते गयो रे,
गुण तो तमारा प्रभु मुखथी सुणीने, आवी तुम सन्मुख रह्यो रे. **...वीर.**
निरंजन प्रभु नाम धरावो, तो सहुने सरीखा गणो रे,
भेदभाव प्रभु ! दूर करीने, मुजशुं रमो एकमेकशुं रे. **...वीर.**
मोडा वहेला तुम ही ज तारक, हवे विलंब शा कारणे रे,
'**ज्ञान**' तणां भवनां पाप मिटावो, वारी जाउं वीर तोरा वारणे रे. **...वीर.**

जेणे मनने जीत्युं, तेणे... सर्व इंद्रियोने जीती.

६३ चउमासी पारणुं आवे..... (६)

चउमासी पारणुं आवे, करी विनती निज घर जावे,
प्रिया पुत्रने वात जणावे, पटकुल जरी पथरावे रे.
महावीर प्रभु घेर आवे, जीरण शेठजी भावना भावे रे. **...महा.१**
उभी शेरीए जळ छंटकावे, जाई केतकी फूल बिछावे,
निज घर तोरण बंधावे, मेवा मिठाई थाळ भरावे रे. **...महा.२**
अरिहाने दान ज दीजे, देतां जे देखीने रीझे,
षट्मासी रोग हरीजे, सीझे दायक भव त्रीजे रे. **...महा.३**
जिनवरनी सन्मुख जाउं, मुज मंदिरीये पधरावुं,
पारणुं भली भाते करावुं, जुगते जिनपूजा रचावुं रे. **...महा.४**
पछी प्रभुने वोळावा जईशुं, कर जोडीने सन्मुख रहीशुं,
नमी वंदीने पावन थईशुं, विरति अति रंगे वरशुं रे. **...महा.५**
दया दान क्षमा शील धरशुं, उपदेश सज्जनने करशुं,
सत्य ज्ञानदशा अनुसरशुं, अनुकंपा लक्षण वरशुं रे. **...महा.६**
एम जीरण शेठ वदंता, परिणामनी धारे चढंता,
श्रावकनी सीमा ठरंता, देवदुंदुभि नाद सुणंता रे. **...महा.७**
करी आयु पूरण शुभ भावे, सुरलोक अच्युते जावे,
सातावेदनीय सुख पावे, '**शुभवीर**' वचन रस गावे रे. **...महा.८**

ईच्छाओ (कामनाओ) ओछी करो, दु:ख आपोआप ओछु थई जशे.

श्री सीमंधर स्वामी भगवानना स्तवनो ५

६४ सुणो चंदाजी..... (१)

सुणो चंदाजी, सीमंधर परमातम पासे जाजो,
मुज विनतडी, प्रेम धरीने एणी पेरे तुम संभळावजो,
जे त्रण भुवननो नायक छे, जस चोसठ ईन्द्र पायक छे,
ज्ञान दरिसण जेहने क्षायक छे. **...सुणो.१**
जेनी कंचनवरणी काया छे, जस धोरी लंछन पाया छे,
पुंडरीगिणी नगरीनो राया छे. **...सुणो.२**
बार पर्षदामांहि बिराजे छे, जस चोत्रीस अतिशय छाजे छे,
गुण पांत्रीश वाणीए गाजे छे. **...सुणो.३**
भविजनने जे पडिबोहे छे, तुम अधिक शीतल गुण सोहे छे,
रुप देखी भविजन मोहे छे. **...सुणो.४**
तुम सेवा करवा रसीयो छुं, पण भरतमां दूरे वसीयो छुं,
महामोहराय कर फसीयो छुं. **...सुणो.५**
पण साहिब चित्तमां धरीयो छे, तुम आणाखडग कर ग्रहीयो छे,
पण कांईक मुजथी डरीयो छे. **...सुणो.६**
जिन उत्तम पूंठ हवे पूरो, कहे 'पद्मविजय' थाउं शूरो,
तो वाधे मुज मन अति नूरो. **...सुणो.७**

दुनियाने तमारी बनाववा करतां, तमे ज दुनियानां बनी जाव ने !

६५ श्री सीमंधर साहिबा हुं केम आवुं..... (२)

श्री सीमंधर साहिबा, हुं केम आवुं तुम पास,
तुम वच्चे अंतर घणुं, मने मळवानी घणी होंश.
...हुं तो भरतने छेडे. १.
हुं तो भरतने छेडले कांई, प्रभुजी विदेह मोझार,
डुंगर वच्चे दरिया घणां कांई, कोशमां कोश हजार. **...हुं.२**
प्रभु देशना देता हशे कांई, सांभळे त्यांना लोक,
धन्य ते गाम-नगर पुरी जिहां, वसे छे पुण्यवंत लोक. **...हुं.३**
धन्य ते श्रावक श्राविका जे, नीरखे तुम मुख चंद,
पण ए मनोरथ अम तणां, क्यारे फळशे भाग्य अमंद. **...हुं.४**
वर्तीए वार्ता जुओ कांई, जोषीए मांड्या लगन,
क्यारे सीमंधर भेटशुं, मने लागी एह लगन. **...हुं.५**
पण कोई जोषी नहि एहवो, जे भांजे मननी भ्रान्त,
अनुभव मित्र कृपा करे, तुम चरणतणे एकांत. **...हुं.६**
वीतराग भाव सही तुमे, वर्तो छो जगनाथ
में जाण्युं तुम कहेणथी, थयो स्वामी हुं सनाथ. **...हुं.७**
पुष्कलावती विजये वसो कांई, नयरी पुंडरीगिणी सार,
सत्यकी नंदन वंदना, अवधारो गुणना धाम. **...हुं.८**

आपणे धर्मने वफादार बनीए, तो जगत आपणी वफादारी राखे.

श्रेयांस नृपकुल चंदलो कांई, रुक्मिणी राणीनो कंत,
*वाचक '**रामविजय**' कहे, तुम ध्याने मुज मन चित्त.* **...हुं.९**

६६ तारी मूरतीए मन मोह्युं रे..... (३)

तारी मूरतिए मन मोह्युं रे, मनना मोहनीया,
तारी सूरतिए जग सोह्युं रे, जगना जीवनीया
तुम जोतां सवि दूरमति विसरी, दिन रातडी नवि जाणी रे,
प्रभु गुण गण सांकळशुं बांध्युं, चंचल चित्तडुं ताणी रे. **...मन.१**
पहेला तो एक केवळ हरखे, हेजाळुं थई हळीयो रे,
गुण देखीने रुपे मीलीयो, अभ्यंतर जई भळीयो रे. **...मन.२**
वितराग ईम जस निसुणीने, रागी राग करेह रे,
आप अरुपी राग निमित्ते, दास अरुप धरेह रे. **...मन.३**
श्री सीमंधर तुं जगबंधु, सुंदर ताहरी वाणी रे,
मंदर भुधर अधिक धीरजधर, वंदे ते धन्य प्राणी रे. **...मन.४**
श्री श्रेयांस नरेसर नंदन, चंदन शीतल वाणी रे,
*सत्यकी माता वृषभ लंछन प्रभु, '**ज्ञानविमल**' गुण खाणी रे,* **...मन.५**

संसारी जीवन एटले आधि व्याधि अने उपाधिनी आगोनुं जीवन.

६७ तुमे महाविदेहे जईने..... (४)

तुमे महाविदेहे जईने, कहेजो चांदलिया (२), सीमंधर तेडां मोकले,
तुमे भरतक्षेत्रना दुःख, कहेजो चांदलिया (२), सीमंधर तेडां मोकले.
अज्ञानता अहीं छवाई गई छे, तत्त्वोनी वातो भूलाई गई छे,
हां रे ! एवा आत्मानां दुःख मारा, कहेजो चांदलिया (२) **..सी.२**
पुद्गलना मोहमां फसाई गयो छुं, कर्मोनी जाळमां जकडाई गयो छुं.
हां रे ! एवा कर्मोना दुःख मारा, कहेजो चांदलिया (२) **..सी.२**
मारुं न हतुं तेने मारुं करी जाण्युं, मारुं हतुं तेने ना रे पिछाण्युं,
हां रे ! एवा मूर्खताना दुःख मारा, कहेजो चांदलिया (२) **..सी.३**
सीमंधर-सीमंधर हृदयमां धरतो, प्रत्यक्ष दरिशननी आशा हुं करतो,
हां रे ! एवा विजोगना दुःख मारा, कहेजो चांदलिया (२) **..सी.४**
संसारी सुख मने कारमुं लागे, प्रभु तुम विण जई कहुं कोनी पासे,
*हां रे ! एवा '**वीरविजय**' ना दुःख, कहेजो चांदलिया (२)* **..सी.५**

६८ धन्य धन्य क्षेत्र..... (५)

धन्य धन्य क्षेत्र महाविदेहजी, धन्य पुंडरीकिणी गाम,
धन्य तिहांना मानवीजी, नित्य ऊठी करे रे प्रणाम,
सीमंधर स्वामी कहीए रे हुं महाविदेह आवीश,
जयवंता जिनवर ! कहीए रे हुं तमने वांदीश. **..सी.१**

गुणी उपरना 'आदर' वगरनो आपणो, गुणनो 'आदर' भ्रामक होई शके छे.

चांदलिया संदेशडोजी, कहेजो सीमंधर स्वाम,
भरतक्षेत्रना मानवीजी, नित्य ऊठी करे रे प्रणाम. **..सी.२**

समवसरण देवे रच्युं, तिहां चोसठ ईंद्र नरेश,
सोनातणे सिंहासन बेठां, चामर छत्र धरेश. **..सी.३**

ईंद्राणी काढे गहुंलीजी, मोतीना चोक पुरेश,
लळी लळी लिये लुंछणाजी, जिनवर दिये उपदेश. **..सी.४**

एहवे समे में सांभळ्युंजी, हवे करवा पच्चक्खाण,
बारे पर्षदा आगळेजी, अमृतवाणी वखाण. **..सी.५**

रायने व्हाला घोडलाजी, वेपारीने व्हाला छे दाम,
अमने व्हाला सीमंधर स्वामी, जेम सीताने श्री राम. **..सी.६**

नहीं मांगु प्रभु राजऋद्धिजी, नहीं मांगु गरथ भंडार,
हुं मांगु प्रभु एटलुंजी, तुम पासे अवतार. **..सी.७**

देवे न दीधी पांखडीजी, केम करी आवुं हजुर !
मुजरो मारो मानजोजी, प्रह उगमते सूर. **..सी.८**

'**समयसुंदर**'*नी विनतीजी, मानजो वारंवार,*
बे कर जोडी विनवुंजी, विनतडी अवधार. **..सी.९**

ज्ञान संग्रह करवा माटे नथी, पण परिणति केळववा माटे छे.

श्री सामान्य जिन स्तवन ४

६९ हो जिन तेरे चरण की...... (१)

हो जिन तेरे चरण की शरण ग्रहुं (२)
हृदयकमलमें ध्यान धरत हुं, शिर तुज आण वहुं. **...हो.१**
तुज सम खोळ्यो देव खलकमें, पेख्यो नहीं कबहुं. **...हो.२**
तेरे गुणकी जपुं जपमाला, अहर्निश पाप दहुं. **...हो.३**
मेरे मनकी तुम सब जानो, क्या मुख बहोत कहुं. **...हो.४**
कहे'**जसविजय**' *करो त्युं साहिब, ज्युं भवदुःख न लहुं.* **...हो.५**

७० अबोलडा शाना लीधा छे राज..... (२)

अबोलडा शाना लीधा छे राज, जीव जीवन प्रभु माहरा,
तमे अमारा अमे तमारा, वास निगोदमां रहेतां. **...अ.१**

काळ अनंतना स्नेही प्यारा, कदीये न अंतर करतां,
बादर-स्थावरमां बेउ आपण, काळ असंख्य निगमतां. **...अ.२**

विकलेन्द्रियमां काळ संख्यातां, विसर्या नवि विसरतां,
नरकस्थाने रह्या बेउ साथे, तिहां पण बहु दुःख सहेतां. **...अ.३**

निर्मळ चित्त ए महामूली मूडी छे, कोईपण भोगे तेनुं जतन करवुं ज रह्यु

परमाधामी सन्मुख आपण, टगमग नजरे जोतां,
देवनां भवमां एक विमाने, देवना सुख अनुभवतां. **...अ.४**

एकण पासे देव शय्यामां, थेई थेई नाटक सुणतां,
तिहांपण तमे अने अमे बेउ साथे जिनजन्म महोत्सव करतां **...अ.५**

तिर्यंचगतिमां सुखदुःख अनुभवता, तिहां पण संगे चलतां
एक दिन तमे अने अमे बेउ साथे, वेलडी वलगीने फरतां. **...अ.६**

एक दिन समवसरणमां आपण, जिनगुण अमृत पीतां,
एक दीन तमे अने अमे बेउ साथे, गेडी दडे नित्य रमतां. **...अ.७**

तमे अने अमे बेउ सिद्धस्वरुपी, एवी कथा नित्य करतां,
एक कुळ एक गोत्र एक ठेकाणे, एक ज थाळीमां जमतां. **...अ.८**

एक दिन हुं ठाकोर तमे चाकर, सेवा माहरी करतां,
आज तो आप थया जग ठाकोर, सिद्धिवधूनां पनोतां. **...अ.९**

काळ अनंतनो स्नेह विसारी, काम कीधां मनगमता,
हवे अंतर केम कीधुं प्रभुजी, चौदराज जई रहेतां. **...अ.१०**

'**दीपविजय**' *कविराज प्रभुजी, जगतारण जगनेता,*
निज सेवकने यश पद दीजे, अनंतगुणे गुणवंता. **...अ.११**

जालिम कर्म ज्यारे रुठे छे त्यारे 'चमरबंधी'नी य शरम के दया राखतां नथी.

७१ जिणंदा प्यारा, मुणिंदा प्यारा. (४)

जिणंदा प्यारा, मुणिंदा प्यारा, देखो रे जिणंदा भगवान,
देखो रे जिणंदा प्यारा. ...देखो.१
सुंदर रुप स्वरुप बिराजे, स्वरुप बिराजे,
जगनायक भगवान. **...देखो.२**
दरस सरस निरख्यो जिनजीको. निरख्यो जिनजीको,
दायक चतुर सुजाण. **...देखो.३**
शोक संताप मिट्यो अब मेरो... मिट्यो अब मेरो,
पायो अविचल भाण. **...देखो.४**
सफल भई मेरी आजकी घडीयां, आजकी घडीयां,
सफल भये नैन प्राण. **...देखो.५**
दरिसण देख मिट्यो दुःख मेरो... मिट्यो दुःख मेरो,
'**आनंदघन**' *अवतार. ...देखो.६*

७२ क्युं कर भक्ति करुं प्रभु तेरी..... (५)

क्युं कर भक्ति करुं प्रभु तेरी...... **क्युं.१**
क्रोध लोभ मद मान विषयरस, छांडत गेल न मेरी.. **क्युं.२**
कर्म नचावे तिमहि नाचत, मायावश नट चेरी.. **क्युं.३**
द्रष्टि राग द्रढ बंधन बांध्यो, नीकसन न लही सेरी.. **क्युं.४**
करत प्रशंसा सब मिल अपनी, परनिंदा अधिकेरी.. **क्युं.५**
कहत'**मान**' *जिन भाव भगति बिन, शिवगति होत न मेरी..* **क्युं.६**

क्षमा आपवी कठण छे अने अेथीय कपरुं काम छे क्षमा आपीने भूली जवुं.

७३ तमे पुण्य करो पुण्यवंत..... (पर्युषण पर्वनुं)

सुणजो साजन संत, **पजुसण आव्या रे,**
तमे पूण्य करो पुण्यवंत, भविक मन भाव्यां रे.
वीर जिणेसर अति अलवेसर, व्हाला मारा परमेश्वर एम बोले रे,
पर्वमांहे पजुसण मोटा, अवर न आवे तस तोले रे. ५
चौपदमां जेम केसरी मोटो, व्हाला मारा खगमां गरुड ते कहीए रे,
नदीमांहे जेम गंगा मोटी, नगमां मेरु लहीए रे. ५
भूपतिमां भरतेश्वर भाख्यो, व्हाला मारा देवमांहे सुर इंद्र रे,
तीरथमां शेत्रुंजो दाख्यो, ग्रह गणमां जेम चंद्र रे. ५
दशेरा दिवालीने वळी होळी, व्हाला मारा अखात्रीज दिवासो रे,
बळेव प्रमुख बहुलां छे बीजां, पण नहि मुक्तिनो वासो रे. ५
ते माटे तमे अमर पळावो, व्हाला मारा अठ्ठाई महोच्छव कीजे रे,
अठ्ठम तप अधिकाई ए करीने, नरभव लाहो लीजे रे. ५
ढोल ददामां भेरी नफेरी, व्हाला मारा कल्पसूत्रने जगावो रे,
झांझरना झमकार करीने, गोरीनी टोली मली आवो रे. ५
सोना रुपाना फूलडे वधावो, व्हाला मारा कल्पसूत्रने पूजो रे,
नव वखाण विधिए सांभळतां, पाप मेवासी ध्रुज्या रे. ५
एम अठ्ठाई महोच्छव करतां, व्हाला मारा बहु जन जग उद्धरिया रे,
विबुध'**विमल**' वर सेवक एहथी, नवनिधि रिद्धि सिद्धि वरिया रे. ५

बात बात में बम बरसता है, पानी महंगा और खून सस्ता है.

७४ श्री ज्ञानपंचमीनुं स्तवन

पंचमी तप तमे करो रे प्राणी, जेम पामो निर्मल ज्ञान रे,
पहेलुं ज्ञान ने पछी क्रिया, नहीं कोई ज्ञान समान रे. ...**पं.१**
नंदीसूत्रमां ज्ञान वखाण्युं, ज्ञानना पांच प्रकार रे,
मति श्रुत अवधि ने मन:पर्यव, केवल एक उदार रे. ...**पं.२**
मति अठ्ठावीश श्रुत चउदह वीश, अवधि छ असंख्य प्रकार रे,
दोय भेदे मन:पर्यव दाख्युं, केवल एक उदार रे. ...**पं.३**
चंद्र सूर्य ग्रह नक्षत्र तारा, एकथी एक अपार रे,
केवल ज्ञान समुं नहीं कोई, लोका लोक प्रकाश रे. ...**पं.४**
पारसनाथ प्रसादे करीने, म्हारी पुरो उमेद रे,
'**समयसुंदर**' कहे हुं पण पामुं, ज्ञाननो पांचमो भेद रे. ...**पं.५**

७५ श्री अष्टमीनुं स्तवन

श्री राजगृही शुभ ठाम, अधिक दीवाजे रे,
विचरंता वीर जिणंद, अतिशय छाजे रे,
तिहां चोत्रीस अने पांत्रीश, वाणी गुण लावे रे,
पधार्या वधामणी जाय, श्रेणिक आवे रे. ...१.
तिहां चोसठ सुरपति आवीने, त्रिगडुं बनावे रे,
तेमां बेसीने उपदेश, प्रभुजी सुणावे रे,
तिहां सुरनर नारी तिर्यंच, निज निज भाषा रे,
मन समजीने भव तीर, पामे सुख खासा रे. ...२.

खाते वक्त 'स्वाद' नहीं, खाने के बाद 'प्रमाद' नहीं, तो जीवन 'बरबाद' नहीं.

तिहां ईंद्रभूति गणधार, श्री गुरु वीरने रे,
पूछे अष्टमीनो महिमा य, कहो प्रभु अमने रे,
तव भाखे वीर जिणंद, सुणो सहु प्राणी रे,
आठम दिन जिननां कल्याण, धरो चित्त आणी रे. ...३.

(ढाळ-बीजी)

श्री ऋषभनुं जन्म कल्याण रे, वळी चारित्र लह्युं भले वान रे,
त्रीजा संभवनुं च्यवन कल्याण, **भवि तुमे अष्टमी तिथि सेवो रे,**
ए छे शिववधू वरवानो मेवो. ...**भवि.१**
श्रीअजितसुमति जिन जन्म्या रे, अभिनंदन शिवपद पाम्या रे,
जिन सातमा च्यवन पाम्या. ...**भवि.२**
वीशमां मुनिसुव्रतस्वामी रे, तेहनो जन्म होय गुणधामी रे,
बावीशमां शिव विशरामी. ...**भवि.३**
पारसजिन मोक्ष महंता रे, ईत्यादिक जिन गुणवंता रे,
कल्याणक मोक्ष कहंता. ...**भवि.४**
श्री वीरजिणंदनी वाणी रे, सुणी समज्या बहु भव्य प्राणी रे,
आठम दिन अति गुणखाणी. ...**भवि.५**
आठ कर्म ते दूरे पलाय रे, अेथी अड सिद्धि अड बुद्धि थाय रे,
तेणे कारण सेवो चित्त लाय. ...**भवि.६**
श्री उदयसागर सूरिराय रे, गुरु शिष्य विवेक ध्याया रे,
तस '**न्यायसागर**' जस गाया. ...**भवि.७**

'सादुं' जीवन जीवनारा... 'साधु' जीवन सहजताथी जीवी शके.

७६ एकादशीनुं स्तवन

पंचम सूरलोकना वासी रे, नव लोकांतिक सुविलासी रे,
करे विनति गुणनी रासी,
मल्लिजिननाथजीव्रतलीजेरे, भविजीवनेशिवसुखदीजे...मल्लि.१
तमे करुणारस भंडार रे, पाम्या छो भवजल पार रे,
सेवकनो करो उद्धार. ..**मल्लि.२**
प्रभुदान संवत्सरी आपे रे, जगतना दारिद्र दु:ख कापे रे,
भव्यत्वपणे तस थापे. ..**मल्लि.३**
सुरपति सघळा मळी आवे रे, मणि रयण सोवन वरसावे रे,
प्रभु चरणे शीश नमावे. ..**मल्लि.४**
तीर्थोदक कुंभा लावे रे, प्रभुने सिंहासन ठावे रे,
सुरपति भगते नवरावे. ..**मल्लि.५**
वस्त्राभरणे शणगारे रे, फुलमाला हृदय पर धारे रे,
दुखडा ईंद्राणी उवारे. ..**मल्लि.६**
मळ्या सुर नर कोडाकोडी रे, प्रभु आगे रह्या करजोडी रे,
करे भक्ति युक्ति मद मोडी. ..**मल्लि.७**
मृगशिर सुदिनी अजुआली रे, एकादशी गुणनी आली रे,
वर्या संयम वधू लटकाली रे. ..**मल्लि.८**
दीक्षा कल्याणक एह रे, गातां दु:ख न रहे रेह रे,
कहे '**रुपविजय**' ससनेह ..**मल्लि.९**

तुम औरों को क्या देते हो बता दो, तुम्हे क्या मिलेगा में तुम्हे बता दुंगा.

७७ नवपद धरजो ध्यान..... (श्री नवपदजीनुं स्तवन)

नवपद धरजो ध्यान, भवि तुमे नवपद धरजो ध्यान,

ए नवपदनुं ध्यान धरंता, पामे जीव विश्राम. **..भवि.१**
अरिहंत सिद्ध आचारज पाठक, साधु सफळ गुणखाण. **..भवि.२**
दर्शन ज्ञान चारित्र ए उत्तम, तप तपो बहुमान. **..भवि.३**
आसो चैत्रनी सुदी सातमथी, पूनम लगी प्रमाण. **..भवि.४**
एम एकाशी आंबिल कीजे, वरस साडा चारनुं मान. **..भवि.५**
पडिक्कमणां दोय टंकनां कीजे, पडिलेहण बे वार. **..भवि.६**
देववंदन त्रण टंकना कीजे, देव पूजो त्रिकाळ. **..भवि.७**
बार आठ छत्रीश पचवीसनो, सत्तावीश सडसठ सार. **..भवि.८**
एकावन सित्तेर पचासनो, काउस्सग्ग करो सावधान. **..भवि.९**
ईण विध जे ए तप आराधे, ते पामे भवपार. **..भवि.१०**
करजोडी सेवक गुण गाये, मोहन गुण मणिमाळ. **..भवि.११**
*तासशिष्य मुनि '**हेम**' कहे प्रभु, जन्म मरण दुःख टाळ.* **..भवि.१२**

देवतत्त्व	गुरुतत्त्व	धर्मतत्त्व
अरिहंत, सिद्ध	आचार्य, उपाध्याय, साधु	दर्शन, ज्ञान, चारित्र, तप

आयंबिलनो तप आहारसंज्ञा पर काबु मेळववा माटे छे.

७८ दीवाळीनुं स्तवन

मारे दिवाळी थई आज, जिन मुख जोवाने,
सर्या सर्या सेवकना काज, भव दुःख खोवाने,
महावीर स्वामी मुक्ते पहोतां गौतम केवळज्ञान,
धन्य अमावश्या, धन्य दिवाळी.
मारे वीर प्रभु निरवाण. **जिन मुख जोवाने..** **...१.**
चारित्र पाळ्युं निर्मळुं ने, टाळ्यां विषय कषाय रे,
एवा मुनिने वांदीए तो, उतारे भव पार. **..जिन.२.**
बाकुला वहोर्या वीरजी ए, तारी चंदनबाळा रे,
केवळ लई प्रभु मुक्ते पहोंच्या, पाम्या भवनो पार. **..जिन.३.**
एवा मुनिने वांदीए जे, पंच ज्ञानने धरतां रे,
समवसरण दई देशना रे, प्रभु तार्या नर ने नार. **..जिन.४.**
चोवीसमां जिनेसरु ने, मुक्ति तणां दातार रे,
*करजोडी '**कवि**' एम भणे प्रभु, भवनां फेरा टाळ.* **..जिन.५.**

माणस पैसाने बचावे ते जरुरी छे पण बचावेला पैसाथी, माणस माणसने बचावे ते वधारे जरुरी शुं नथी लागतुं आपने ?

लोभ ए एवी वस्तु छे, जे छते पैसे व्यक्तिने भिखारी बनावी शके छे.

थोय (स्तुति) विभाग—५५

१ श्री शत्रुंजयनी चार थोय

शत्रुंजय मंडन, ऋषभ जिणंद दयाळ,
मरुदेवा नंदन, वंदन करुं त्रण काळ,
ए तीरथ जाणी, पूर्व नव्वाणुं वार,
आदीश्वर आव्या, जाणी लाभ अपार. **...१.**
त्रेवीश तीर्थंकर, चढीया ईण गिरिराय,
ए तीरथना गुण, सुर असुरादिक गाय,
ए पावन तीरथ, त्रिभुवन नहि तस तोले,
ए तीरथना गुण, सीमंधर मुख बोले. **...२.**
पुंडरीकगिरि महिमा, आगममां प्रसिद्ध,
विमलाचल भेटी, लहीए अविचल रिद्ध,
पंचमी गति पहोंच्यां, मुनिवर क्रोडा क्रोड,
ईणे तीरथे आवी, कर्म विपाक विछोड. **...३.**
श्री शत्रुंजय केरी, अहोनिश रक्षाकारी,
श्री आदि जिनेश्वर, आण हृदयमां धारी,
श्री संघ विघ्नहर, कवडजक्ष गण भूर,
*श्री '**रविबुधसागर**', संघना संकट चूर.* **...४.**

'संत' न बनी शकीए तो कांई नहीं, जीवनमां 'शांत' तो जरुर बनीए.

२ श्री शत्रुंजयनी थोय

श्री शत्रुंजय तीरथ सार, गिरिवरमां जेम मेरु उदार,
ठाकुर राम अपार,
मंत्रमांहे नवकार ज जाणुं, तारामां जेम चंद्र वखाणुं,
जलधर जलमां जाणुं,
पंखीमांहे जेम उत्तम हंस, कुलमांहे जेम ऋषभनो वंश,
नाभितणो ए अंश,
क्षमावंतमां श्री अरिहंत, तपशुरामां महामुनिवंत,
शत्रुंजय गिरि गुणवंत.

३ श्री शत्रुंजयनी थोय

सवि मळी करी आवो, भावना भव्य भावो,
विमलगिरि वधावो, मोतीया थाळ लावो,
जो होई शिवजावो, चित्त तो वात भावो,
न होय दुश्मन दावो, आदि पूजा रचावो.

४ श्री पुंडरीक स्वामीजीनी थोय

पंच कोटी मुनि साथे सिध्या, प्रणमो पुंडरीक स्वामीजी,
तीर्थंकर ने मुनि अनंता, सिध्या केवल पामीजी,
जिन आगममां गिरिवर महिमा, हुं वंदु शिर नामीजी,
चक्रेश्वरी जिन शासन देवी, उदय करो दुःख वामीजी.
(आ स्तुति चार वार बोली शकाय छे)

जे नानी नानी वातमां खोटुं लगाडे, एने मित्र बनावतां पहेलां विचार करजो.

५ श्री पुंडरीक स्वामीजीनी थोय

पुंडरीक गणधर पाय प्रणमीजे, आदीश्वर जिनचंदाजी,
नेम विना त्रेवीश तीर्थंकर, गिरि चढीया, आणंदाजी,
आगममांहे पुंडरीक महिमा, भाख्यो ज्ञानदिणंदाजी,
चैत्री पूनमदिन देवी चक्केश्वरी, सौभाग्य द्यो सुखकंदाजी

(आ स्तुति चार वार बोली शकाय छे)

५ श्री रायण पगलांनी थोय

श्री शत्रुंजय आदिजिन आव्या, पूर्व नव्वाणुं वारजी,
अनंत लाभ ईहां जिनवर जाणी, समोसर्या निरधारजी,
विमलगिरिवर महिमा मोटो, सिद्धाचल ईणे ठामजी,
कांकरे कांकरे अनंता सिध्या, एकसो ने आठ गिरिनामजी.

७ श्री ऋषभदेव भगवाननी थोय

आदि जिनवर राया, जास सोवन्न काया,
मरुदेवी माया, धोरी लंछन पाया,
जगत स्थिति निपाया, शुद्ध चारित्र पाया,
केवल सिरि राया, मोक्ष नगरे सिधाया.

तुं मन मुकीने कर देव-गुरुनी भक्ति..... तने मळशे अपूर्व शक्ति.

८ श्री ऋषभदेव भगवाननी थोय

प्रह उठी वंदु, ऋषभदेव गुणवंत,
प्रभु बेठा सोहे, समवसरण भगवंत,
त्रण छत्र बिराजे, चामर ढाळे ईंद्र,
जिनना गुण गावे, सुरनरनारीना वृंद.

९ श्री अजितनाथ भगवाननी थोय

विजया सुत वंदो, तेजथी ज्युं दिणंदो,
शीतलताए चंदो, धीरताए गिरिंदो,
मुख जिम अरविंदो, जास सेवे सुरिंदो,
लहो परमाणंदो, सेवना सुख कंदो.

१० श्री संभवनाथ भगवाननी थोय

संभव सुखदाता, जेह जगमां विख्याता,
षट् जीवना त्राता, आपता सुखसाता,
माता ने भ्राता, केवल ज्ञान ज्ञाता,
दुःख दोहग त्राता, जास नामे पलाता.

माणस पैसाने बचावे ते जरुरी छे पण...
बचावेला पैसाथी माणसने बचावे ते वधारे जरुरी छे.

संसारी दुःखनो 'अंत' शोधे छे, ज्यारे संतो दुःखनुं 'कारण' शोधे छे.

११ अभिनंदन स्वामीनी थोय

संवर सुत साचो, जास स्याद्वाद वाचो,
थयो हीरो जाचो, मोहने देई तमाचो,
प्रभु गुण गण माचो, एहना ध्याने राचो,
जिन पद सुख साचो, भव्य प्राणी निकाचो.

१२ श्री सुमतिनाथ भगवाननी थोय

सुमति सुमति दाई, मंगला जास माई,
मेरुने वली राई, ओर एहने तुलाई,
क्षय कीधा धाई, केवलज्ञान पाई,
नहि उणिम कांई, सेवियें ए सदाई.

१३ श्री पद्मप्रभ भगवाननी थोय

अढीसें धनुष्य काया, त्यक्त मद मोहमाया,
सुसिमा जस माया, शुक्ल जे ध्यान ध्याया,
केवल वर पाया, चामरादि धराया,
सेवे सुरराया, मोक्ष नगरे सिधाया.

छद्मस्थ एवी जगतनी दरेक व्यक्तिमां 'दोष' पण पडेला छे अने 'गुण' पण पडेला छे. चेक करजो, आपणी द्रष्टि शेना पर वधु जल्दी स्थिर थाय छे.

आळस, अज्ञान अने अंधश्रद्धा आ त्रणथी हंमेशा बचवा जेवुं छे.

१४ श्री सुपार्श्वनाथ भगवाननी थोय

सुपार्श्व जिन वाणी, सांभळे जेह प्राणी,
हृदये पहेंचाणी, ते तर्या भव्य प्राणी,
पांत्रीश गुण खाणी, सूत्रमां जे गुंथाणी,
षट् द्रव्यशुं जाणी, कर्म पीले ज्युं घाणी.

१५ श्री चंद्रप्रभ भगवाननी थोय

सेवे सुरवर वृंदा, जास चरणारविंदा,
अठ्ठम जिन चंदा, चंदवर्णे सोहंदा,
महसेन नृप नंदा, कापता दुःख दंदा,
लंछन मिष चंदा, पाय मानुं सेविंदा,

१६ श्री सुविधिनाथ भगवाननी थोय

नरदेव भाव देवो, जेहनी सारे सेवो,
जेह देवाधिदेवो, सार जगमां ज्युं मेवो,
जोतां जग एहवो, देव दीठो न तेहवो,
सुविधि जिन जेहवो, मोक्ष दे तत् खेवो.

देव, गुरु, धर्मरुपी जैन शासन आपणने मळ्युं खरुं पण फळ्युं खरुं ? ..... शांतिथी विचारजो.

क्रोधीने शांत करवानो सचोट उपाय... आपणे मौन थई जवुं.

१७ श्री शीतलनाथ भगवाननी थोय

शीतल जिन स्वामी, पुण्यथी सेव पामी,
प्रभु आतमरामी, सर्व परभाव वामी,
जे शिवगति गामी, शाश्वतानंद धामी,
भवि शिवसुख कामी, प्रणमीए शिश नामी.

१८ श्री श्रेयांसनाथ भगवाननी थोय

विष्णु जस मात, जेहना विष्णु तात,
प्रभुना अवदात, तीन भुवनमें विख्यात,
सुरपति संघात, जास निकटे आयात,
करी कर्मनो घात, पामीआ मोक्ष शात.

१९ श्री वासुपूज्य स्वामीनी थोय

विश्वना उपगारी, धर्मना आदिकारी,
धर्मना दातारी, काम क्रोधादि हारी,
तार्या नर नारी, दुःख दोहग वारी,
वासुपूज्य निहारी, जाउं हुं नित्य वारी.

ज्यां पापनो पार नहीं, संतापनो सुमार नहीं, शांति क्षणवार नहीं, एवा संसारमां... कंई सार नहीं.

हे मानव ! जीवनमां शांतिथी जीववुं होय, तो मननी 'स्वछंदता' छोडी देजे.

२० श्री विमलनाथ भगवाननी थोय

विमल जिन जुहारो, पाप संताप वारो,
श्यामांब मल्हारो, विश्व कीर्ति विस्तारो,
योजन विस्तारो, जास वाणी प्रसारो,
गुणगण आधारो, पुण्यना ए प्रकारो.

२१ श्री अनंतनाथ भगवाननी थोय

अनंत अनंत नाणी, जास महिमा गवाणी,
सुरनर तिरि प्राणी, सांभळे जास वाणी,
एक वचन समजाणी, जेह स्याद्वाद जाणी,
तर्या ते गुण खाणी, पामीआ सिद्धि राणी.

२२ श्री धर्मनाथ भगवाननी थोय

धरम धरम धोरी, कर्मना पास तोरी,
केवल श्री जोरी, जेह चोरे न चोरी,
दर्शन मद छोरी, जाय भाग्या सटोरी,
नमे सुरनर कोरी, ते वरे सिद्धि गोरी.

धर्म में 'नो-टाईम' कहनेवालों को पूछना है, टी.वी, वीडीओ देखनेका टाईम कहाँ से मिलता है ? 'नो-टाईम' नहीं 'नो-ईन्टरेस्ट' कहो.

जीवनमां 'सफळ' बनवुं आसान छे, पण 'सरळ' बनवुं मुश्केल छे.

२३ श्री शांतिनाथ भगवाननी थोय

शांति सुहंकर साहिबो, संयम अवधारे,
सुमित्राने घेर पारणुं, भव पार उतारे,
विचरंता अवनी तळे, तप उग्र विहारे,
ज्ञानध्यान एक तानथी, तिर्यंचने तारे.

२४ श्री शांतिनाथ भगवाननी थोय

वंदो जिन शांति, जास सोवन्न कांति,
टाळे भव भ्रांति, मोह मिथ्यात्व शांति,
द्रव्यभाव अरि पांति, तास करता निकांति,
धरता मन खांति, शोक संताप वांति.

२५ श्री कुंथुनाथ भगवाननी थोय

कुंथु जिन नाथ, जे करे छे सनाथ,
तारे भव पाथ, जे ग्रही भव्य बाथ,
एहनो तजे साथ, बावळ दीए हाथ,
तरे सुरनर साथ, जे सुणे एक गाथ.

आबरु प्रमाणे नहीं, पण आवक प्रमाणे जीवशो तो शांति पामशो. नहीं तो आबरु साचववामां देवाना डुंगर नीचे दबाईने तमे बेआबरु बनी जशो.

जगतनो मित्र, जातनो पवित्र, उंचुं होय जेनुं चारित्र एनुं नाम भक्त.

२६ श्री अरनाथ भगवाननी थोय

अर जिनवर राया, जेहनी देवी माया,
सुदर्शन नृप ताया, जास सुवर्ण काया,
नंदावर्त पाया, देशना शुद्ध दाया,
समवसरण विरचाया, ईंद्र-ईंद्राणी गाया.

२७ श्री मल्लिनाथ भगवाननी थोय

मल्लिजिन नमीये, पुरवलां पाप गमीये,
ईंद्रिय गण दमिये, आण जिननी न क्रमीये,
भवमां नवि भमिये, सर्व परभाव वमीये,
निज गुणमां रमीये, कर्म मल सर्व दमीये.

२८ श्री मुनिसुव्रत स्वामीनी थोय

मुनिसुव्रत नामे, जे भवि चित्त कामे,
सवि संपत्ति पामे, स्वर्गनां सुख जामे,
दुर्गति दुःख वामे, नवि पडे मोह भामे,
सवि कर्म विरामे, जई वसे सिद्धि धामे.

लोकोमां आपणे सारा देखावा जेटलो प्रयत्न करीए छीए, एटलो प्रयत्न सारा बनवा माटे करीए छीए खरा ?

समय विना कहेली साची वात पण, शक्ति असर अने मुल्य गुमावे छे.

२९ श्री नमिनाथ भगवाननी थोय

नमीए नमि नेह, पुण्य थाये ज्युं देह,
अघ समुदय जेह, ते रहे नाहीं रेह,
लहे केवल तेह, सेवना कार्य एह,
लहे शिवपुर गेह, कर्मनो आणी छेह.

३० श्री नेमिनाथ भगवाननी थोय

राजुल वर नारी, रुपथी रति हारी,
तेहना परिहारी, बालथी ब्रह्मचारी,
पशुआ उगारी, हुआ चारित्रधारी,
केवल श्री सारी, पामीआ घाती वारी.

३१ श्री नेमिनाथ भगवाननी थोय

सुर असुर वंदीत पाय पंकज, मयण मल्लम् शोभितम्,
धन सुघन श्याम शरीर सुंदर, शंख लंछन शोभितम्.
शिवादेवी नंदन त्रिजगवंदन, भविक कमल दिनेश्वरम्,
गिरनार गिरिवर शिखर वंदु, श्री नेमिनाथ जिनेश्वरम्.

बीजाना दुःखे दुःखी थवानी वात पछी करजो, पहेला मनने पूछो के ए बीजाना सुखे सुखी थवा तैयार छे खरुं ? केवुं ईर्ष्याळु मन छे आपणुं ?

भावथी (मनथी) थाय ते 'भक्ति', कायाथी (तनथी) थाय ते 'क्रिया'.

३२ श्री पार्श्वनाथ भगवाननी थोय (चार थोय)

शंखेश्वर पासजी पुजीए, नरभवनो लाहो लीजीए,
मनवांछित पूरण सुरतरु, जय वामासुत अलवेसरु. ...१.
दोय राता जिनवर अति भला, दोय धोळा जिनवर गुण नीला,
दोय नीला दोय शामळ कह्या, सोळे जिन कंचन वर्ण लह्या. ...२.
आगम ते जिनवर भाखियो, गणधर ते हईडे राखियो,
तेहनो रस जेणे चाखियो, ते हुवो शिवसुख साखियो. ...३.
धरणेन्द्रराय पद्मावती, प्रभु पार्श्वतणा गुण गावती,
सहु संघना संकट चूरती, नयविमलना वांछित पूरती. ...४.

३३ श्री पार्श्वनाथ भगवाननी थोय

भीडभंजन पार्श्व प्रभु समरो, अरिहंत अनंतनुं ध्यान धरो,
जिन आगम अमृत पान करो, शासन देवी सवि विघ्न हरो.

(आ स्तुति चार वखत बोली शकाय)

३४ श्री पार्श्वनाथ भगवाननी थोय

पासजिणंदा वामानंदा, जब गरभे फळी,
सुपना देखे अर्थ विशेषे, कहे मघवा मळी,
जिनवर जाया सुर हुलराया, हुआ रमणी प्रिये,
नेमिराजी चित्त विराजी, विलोकित व्रत लीये.

जीवन नाना बाळक जेवुं शुं न बनावी शकीये आपणे ? निखालस अने निष्पाप.

३५ श्री पार्श्वनाथ भगवाननी थोय

सकल सुरासुर सेवे पाया, नयरी वाणारसी नाम सोहाया,
अश्वसेन कुल आया.
दश ने चार सुपन दिखलाया, वामादेवी माताए जाया,
लंछन नाग सोहाया.
छप्पन दिक्कुमारी हुलराया, चोसठ ईंद्रासन डोलाया,
मेरुशिखर नवराया.
नीलवरण तनुं सोहे काया, श्री विजयसेन सुरीश्वरराया,
पास जिनेश्वर गाया.

३५ श्री पार्श्वनाथ भगवाननी थोय

भीलडीपुर मंडन, सोहीये पार्श्वजिणंद,
तेने तमे पूजो, सुर नर नारीना वृंद,
ते तुठ्यो आपे, धन कन कंचन कोड,
ते शिव पद पामे, कर्म तणा भय छोड.

३७ श्री महावीर स्वामीनी थोय

महावीर जिणंदा, राय सिद्धार्थ नंदा,
लंछन मृग-इंदा, जास पाये सोहंदा,
सुर नर वर ईंदा, नित्य सेवा करंदा,
टाळे भव फंदा, सुख आपे अमंदा.

जीवनमां राखो हंमेशा, पाप प्रत्ये भीति (डर) अने प्रभु प्रत्ये प्रीति.

३८ श्री महावीर स्वामीनी थोय

जय जय भवि हितकर, वीर जिनेश्वर देव,
सुरनरना नायक, जेहनी सारे सेव,
करुणारस कंदो, वंदो आनंद आणी,
त्रिशला सुत सुंदर, गुणमणी केरो खाणी.

३९ श्री सीमंधर स्वामीनी थोय

श्री सीमंधर जिनवर, सुखकर साहिब देव,
अरिहंत सकलनी, भाव धरी करुं सेव,
सकलागम पारग, गणधरभाषित वाणी,
जयवंती आणा, ज्ञानविमल गुणखाणी.

(आ स्तुति चार वखत बोली शकाय)

४० श्री सीमंधर स्वामीनी थोय

महाविदेह क्षेत्रमां सीमंधरस्वामी, सोनानुं सिंहासनजी,
रुपाना त्यां छत्र बिराजे, रत्नमणीना दीवा दीपेजी,
कुमकुम वरणी त्यां गहुंली बिराजे, मोतीना अक्षतः सारजी,
त्यां बेठा सीमंधरस्वामी, बोले मधुरी वाणीजी,
केसर चंदन भर्या कचोळा, कस्तुरी बरासेजी,
पहेली रे पूजा अमारी होजो, उगमते प्रभातेजी.

बधी वस्तु माटे आगाही करी शको पण, माणस माटे आगाही न करी शको.

४१ श्री सीमंधरस्वामीनी थोय

सो क्रोड साधु, सो क्रोड साध्वी जाण,
ऐसे परिवारे, श्री सीमंधर भगवान,
दश लाख कह्या केवळी, प्रभुजीनो परिवार,
वाचक यश वंदे, नित वंदु वारं वार.

४२ श्री सीमंधरस्वामीनी थोय

अजुवाली ते बीज सोहावे रे, चंदा रुप अनुपम लावे रे,
चंदा विनतडी चित्त धरजो रे, श्री सीमंधरने वंदना कहेजो रे.

४३ श्री शाश्वता जिननी थोय

ऋषभ चंद्रानन वंदन कीजे, वारीषेण दु:ख वारेजी,
वर्धमान जिनवर वळी प्रणमो, शाश्वता नाम ए चारेजी.
भरतादिक क्षेत्रे मळी होवे, चार नाम चित्त धारेजी,
तिणे चारे ए शाश्वत जिनवर, नमिए नित्य सवारेजी.

४४ कल्लाणकंदंनी थोय

कल्लाणकंदं पढमं जिणिंदं, संतिं तओ नेमिजिणं मुणिंदं,
पासं पयासं सुगुणिक्कठाणं, भत्तीई वंदे सिरिवद्धमाणं.

जिनाज्ञा पालन ए मोक्षे जवानो... श्रेष्ठ राजमार्ग छे.

४५ संसारदावानी थोय

संसार दावानल दाहनीरं, संमोहधूली हरणे समीरं,
माया रसा दारण सारसीरं, नमामि वीरं गिरि सार धीरं.

४६ स्नातस्यानी थोय

स्नातस्या प्रतिमस्य मेरु शिखरे, शच्या विभो: शैशवे,
रुपा लोकन विस्मया हृतरस, भ्रान्त्या भ्रमच्चक्षुषा,
उन्मुष्टं नयन प्रभाधवलितं, क्षीरोदकाशङ्कया,
वक्त्रं यस्य पुन: पुन: स जयति, श्री वर्द्धमानो जिन:

४७ पर्युषण पर्वनी थोय

पुन्यनुं पोषण पापनुं शोषण, पर्व पजुषण पामीजी,
कल्प घरे पधरावो स्वामी, नारी कहे शिरनामीजी,
कुंवर गयवर खंध चढावी, ढोल निशान वजडावोजी,
सद्गुरु संगे चढते रंगे, वीर चरित्र सुणावोजी.

४८ श्री बीजनी थोय

दिन सकल मनोहर, बीज दिवस सुविशेष,
राय राणा प्रणमे, चंद्र तणी जिहां रेख,
तिहां चंद्र विमाने, शाश्वत जिनवर जेह,
हुं बीज तणे दिन, प्रणमुं आणी नेह.

संसार भावथी विराम पामवानुं चणतर... एनुं ज नाम साचुं भणतर.

४९ श्री पंचमीनी थोय

श्रावण सुदि दिन पंचमी ए, जनम्या नेम जिणंद तो,
श्याम वरण तनु शोभतुं ए, मुख शारदको चंद तो,
सहस वरस प्रभु आउखुं ए, ब्रह्मचारी भगवंत तो,
अष्ट करम हेला हणीए, पहोंता मुक्ति महंत तो.

५० श्री आठमनी थोय

मंगल आठ करी जस आगळ, भाव धरी सुर राजजी,
आठ जातिना कळशा भरीने, नवरावे जिनराजजी,
वीर जिनेश्वर जन्म महोत्सव, करता शिवसुख साधेजी,
आठमनुं तप करता अमघर, मंगल कमला वाधेजी.

५१ श्री एकादशीनी थोय

एकादशी अति रुडी, गोविंद पूछे नेम,
किण कारण ए पर्व मोटुं, कहोने मुजशुं तेम,
जिनवर कल्याणक अति घणां, एकसो ने पचास
तेणे कारण ए पर्व मोटुं, करो ने मौन उपवास.

'धर्म' तो जीवनमां घणो कर्यो छे, परंतु 'अधर्म' ओछो कर्यो नथी, माटे ज आपणुं भवभ्रमण अनादि काळथी चालु ने चालु ज छे.

साचो श्रावक साचा धन तरीके धर्मने गणे, धननी पोटलीने नहीं.

५२ श्री नवपदजीनी थोय

अरिहंत नमो, वळी सिद्ध नमो, आचारज वाचक साहु नमो,
दर्शन, ज्ञान, चारित्र नमो, तप ए सिद्धचक्र सदा प्रणमो

५३ श्री नवपदजीनी थोय

प्रह उठी वंदु, सिद्धचक्र सदाय,
जपीए नवपदनो, जाप सदा सुखदाय,
विधिपूर्वक ए तप, जे करे थई उझमाळ,
ते सवि सुख पामे, जेम मयणा श्रीपाळ.

५४ श्री वीश स्थानकनी थोय

वीश स्थानक तप विश्वमां मोटो, श्रीजिनवर कहे आपजी,
बांधे जिनपद त्रीजा भवमां, करीने स्थानक जापजी,
थया थशे सवि जिनवर अरिहा, ए तपने आराधीजी,
केवलज्ञान दर्शन सुख पाम्या, सर्वे टाली उपाधिजी.

५५ श्री दीवाळीनी थोय

मनोहर मूर्ति महावीर तणी, जिणे सोळ पहोर देशना पभणी,
नवमल्ली नवलच्छी नृपति सुणी, कहे शिव पाम्या त्रिभुवन धणी.

सुकृतना साधनथी दुष्कृतो सेवे ए दिवानो.

छंद विभाग—२

१ श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ भगवानno छंद

पास शंखेश्वरा सार कर सेवका, देव ! कां एवडी वार लागे,
कोडी कर जोडी दरबार आगे खडा, ठाकुरा चाकुरा मान मांगे.
...पास शंखेश्वरा...१
प्रगट था पासजी मेली पडदो परो, मोड असुराणने आप छोडो,
मुज महीराण मंजुषमां पेसीने, खलकना नाथजी बंध खोलो.
...पास शंखेश्वरा...२
जगतमां देव ! जगदीश ! तुं जागतो, एम शुं आज जिनराज उंघे ?
मोटा दानेश्वरी तेहने दाखीए, दान दे जेह जग काळ मोंघे.
...पास शंखेश्वरा...३
भीड पडी जादवा जोर लागी जरा, तत् क्षणे त्रिकमे तुजने संभार्यो,
प्रगट पातालथी पलकमां ते प्रभु, भक्तजन तेहनो भय निवार्यो.
...पास शंखेश्वरा...४
आदि अनादि अरिहंत तुं एक छे, दीन दयाळ छे कोण दुजो ?
'उदयरत्न' *कहे प्रगट प्रभु पासजी, पामी भय भंजनो एह पूजो.*
...पास शंखेश्वरा...५

गुमावेली 'तक' अने 'पळ' कदी पाछी आवती नथी, माटे प्रमाद न करो.

२ श्री गौतम स्वामीनो छंद

वीर जिनेश्वर केरो शिष्य, गौतम नाम जपो निशदिश,
जो कीजे गौतमनुं ध्यान, तो घर विलसे नवे निधान......१
गौतम नामे गयवर चढे, मनवांछित हेला संपजे.
गौतम नामे नावे रोग, गौतम नामे सर्व संयोग......२
जे वैरी विरुआ वंकडा, तस नामे नावे ढुंकडा,
भूत प्रेत नवि छंडे प्राण, ते गौतमना करुं वखाण......३
गौतम नामे निर्मळ काय, गौतम नामे वाधे आय,
गौतम जिनशासन शणगार, गौतम नामे जयजयकार......४
साल दाल सुरहा धृत गोळ, मनवांछित कापड तंबोल,
घरे सुधरणी निर्मळ चित्त, गौतम नामे पुत्र विनीत......५
गौतम उदयो अविचळ भाण, गौतम नाम जपो जग जाण,
म्होटां मंदिर मेरु समान, गौतम नामे सफळ विहाण......६
घर मयगल घोडानी जोड, वारु पहोंचे वंछित कोड,
महियल माने मोटा राय, जो तूठे गौतमना पाय......७
गौतम प्रणम्या पातिक टळे, उत्तम नरनी संगत मळे,
गौतम नामे निर्मळ ज्ञान, गौतम नामे वाधे वान......८
पुण्यवंत अवधारो सहु, गुरु गौतमनां गुण छे बहु,
कहे **'लावण्य'** *समय कर जोड, गौतम तूठे संपत्ति कोड......९*

विद्या विनयथी शोभे छे. विनय सर्व गुणोनुं मूळ छे.

भक्तिगीत विभाग—५

(१) देव मारा आजथी तारो बनीने जाउं छुं,
दीलडाना देव मारुं दिल दईने जाउं छुं,
मनडानी भक्तिनी आ म्हेंक मुकतो जाउं छुं,
अंतरना आपेल आशिष अंतरमां लई जाउं छुं......१
卐 *फरी फरी मळवानो दादा कोल दईने जाउं छुं,*
निभाववानो भार तारे माथे मुक्तो जाउं छुं,
श्वासे श्वासे समरीश तमने एवी भावना भावुं छुं,
जुग जुग जीवो झाझी खम्मा चरणे नमतो जाउं छुं......२
(२) आव्यो दादाने दरबार, करो भवोदधि पार,
खरो तुं छे आधार, मोहे तार तार तार.....१
卐 *आत्म गुणोनो भंडार, तारा महिमानो नहीं पार,*
देख्यो सुंदर देदार, करो पार पार पार.....२
卐 *तारी मूर्ति मनोहार, हरे मनना विकार,*
खरो हैयानो हार, वंदु वार वार वार......३
卐 *आव्यो देरासर मोझार, कर्यो जिनवर जुहार,*
प्रभु चरण आधार, खरो सार सार सार......४
卐 **'आत्मकमल'** *सुधार, तारी लब्धि छे अपार,*
एनी खुबीनो नहीं पार, विनंती धार धार धार......५

काळ बगड्यो छे तेनां करतां पण वधु आपणुं काळजुं बगड्युं छे.

(३)

卐 *आ भव मळीया ने परभव मळजो,*
सेवा तमारी भवोभव मळजो......१
卐 *डगमग डोले आ नैया अमारी,*
सुकानी थईने तारजो स्वामी......२
卐 *श्रद्धा धरी नथी अन्य कने में,*
आशा करी नथी अन्य कने में......३
卐 *कुम कुम पगले आप पधारो,*
हृदयमंदिरमां नाथ बीराजो......४
卐 *हुं छुं अनाथ ने, तमे मारा नाथ,*
हाथ झालोने ओ दीनानाथ......५
卐 *हुं छुं रागी ने तमे वितरागी,*
सेवकनां ल्यो काज सुधारी......६
卐 *सफळ थयो नर जन्म अमारो,*
अंतरथी गुण गाया तमारा......७

आ भव मळीयाने परभव मळजो......
शासन तमारुं भवोभव मळजो......
शरणुं तमारुं भवोभव मळजो......
संघ तमारो भवोभव मळजो......
सेवा तमारी भवोभव मळजो......

मनुष्य "जन्म" से नहीं "कर्म" से महान बनता है.

(४)

(राग... तमे देरासर एवा रे गजावजो...)

प्रभुजी मांगु तारी पास, मारी पूरी करजो आश.
मांगी मांगी मांगु छुं बस अेटलुं
मने आवतो भव एवो आपजो..... ॥१॥
जन्म महाविदेहमां होय, वळी तीर्थंकर कुळ होय.
पारणामां नवकार संभळाय जो. **मने** ॥२॥
वर्ष आठमुं ज होय, प्रभु समोसर्या होय.
उमंगे व्याख्यान जवाय जो. **मने** ॥३॥
सुणतां वैराग्य ज थाय, वळी अनुज्ञा मळी जाय.
कोई आवे नहीं अंतराय जो. **मने** ॥४॥
प्रभु हाथे दीक्षा थाय, हजारो साथे लेवाय.
अने चौद पूरव भणाय जो. **मने** ॥५॥
जिनकल्पीपणुं होय, उग्र अभिग्रह होय.
मास-मासक्षमण कराय जो. **मने** ॥६॥
क्षपकश्रेणीअे चढाय, घाती कर्म खपाय.
केवळज्ञान उत्पन्न थई जाय जो. **मने** ॥७॥
मानव जन्म मळी जाय, एवी करणी कराय.
अने मुक्तिपुरीमां जवाय जो. **मने** ॥८॥

परभावमां जाओ एटले आत्मानो पराभव.

(५)

हे शंखेश्वर स्वामी, प्रभु जग अंतर्यामी,
तमने वंदन करीए, शिव सुखना स्वामी... हे शंखे.१
मारो निश्चय एकज स्वामी, बनुं तमारो दास (२)
तारा नामे चाले, मारा श्वासोच्छवास... हे शंखे.२
दु:ख संकटने कापो स्वामी, वांछितने आपो (२),
पाप अमारा हरजो, शिवसुखने देजो... हे शंखे.३
निशदिन हुं मांगु छुं स्वामी, तुम चरणे रहेवा (२),
ध्यान तमारुं ध्यावुं, स्वीकारजो सेवा... हे शंखे.४
रात दिवस झंखु छुं स्वामी, तमने मळवाने (२),
आतम अनुभव मांगु, भवदु:ख टळवाने... हे. शंखे.५
करुणाना छो सागर स्वामी, कृपातणा भंडार (२),
त्रिभुवनना छो नायक, जगना तारणहार... हे शंखे.६

आजना मानवी पासे सुख संपत्तिना साधनो मर्यादीत के ओछा छे, माटे ते दु:खी नथी, परंतु पोताना करता बीजा पासे सुख संपत्तिना साधनो घणा अने वधारे छे, तेवी विचारधारा अने मान्यताना कारणे ज आजनो मानवी दु:खी दु:खी छे.

बीजाना दोषो जोवाथी, आपणां ज गुणोनी हानि थाय छे. (केवो खोटनो धंधो)

पच्चक्खाण विभाग

(पच्चक्खाण करनारे 'पच्चक्खामि' अने 'वोसिरामि' शब्द बोलवो.)

नमुक्कारसहिअं मुट्ठिसहिअं

उग्गअे सूरे, नमुक्कारसहिअं मुट्ठिसहिअं पच्चक्खाई (पच्चक्खामि) चउव्विहंपि आहारं, असणं, पाणं, खाईमं, साईमं, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं, वोसिरई (वोसिरामि).

पोरिसि-साड्ढपोरिसि-पुरिमड्ढ-अवड्ढ

उग्गए सूरे, नमुक्कारसहिअं, पोरिसिं, साड्ढपोरिसिं सूरे उग्गए पुरिमड्ढ, अवड्ढ मुट्ठिसहिअं, पच्चक्खाई (पच्चक्खामि), चउव्विहंपि आहारं असणं, पाणं, खाईमं, साईमं, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, पच्छन्नकालेणं, दिसामोहेणं, साहुवयणेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं, वोसिरई (वोसिरामि).

चउविहार उपवास

सूरे उग्गए अब्भत्तट्ठं पच्चक्खाईं (पच्चक्खामि) चउव्विहंपि आहारं, असणं, पाणं, खाईमं, साईमं, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, पारिट्ठावणियागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं, वोसिरई (वोसिरामि)

मनमां रोज मनन करो— अंतर्मुखी सदा सुखी, बहिर्मुखी सदा दु:खी

आयंबिल-निवि-एकासणुं-बियासणुं

(सूचना : जो बियासणानुं पच्चक्खाण करवुं होय तो बियासणं अने एकासणानुं पच्चक्खाण करवुं होय तो एकासणं नो पाठ कहेवो.)

उग्गए सूरे, नमुक्कारसहिअं, पोरिसिं, साड्ढपोरिसिं सूरे उग्गए, पुरिमड्ढ, अवड्ढमुट्ठिसहिअं, पच्चक्खाईं (पच्चक्खामि), चउव्विहंपि आहारं, असणं, पाणं, खाईमं, साईमं, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, पच्छन्नकालेणं, दिसामोहेणं, साहुवयणेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं, आयंबिलं निव्विगईअं विगईओ पच्चक्खाईं (पच्चक्खामि) अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, लेवालेवेणं, गिहत्थसंसट्ठेणं, उक्खित्तविवेगेणं, पडुच्चमक्खिएणं पारिट्ठावणियागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं, एकासणं, 'बियासणं' पच्चक्खाईं, (पच्चक्खामि) तिविहंपि आहारं, असणं, खाईमं, साईमं, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, सागारियागारेणं, आउंटणपसारेणं, गुरुअब्भुट्ठाणेणं, पारिट्ठावणियागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं, पाणस्स लेवेण वा, अलेवेण वा, अच्छेण वा, बहुलेवेण वा, ससित्थेण वा, असित्थेण वा, वोसिरई (वोसिरामि).

तिविहार उपवास

सूचना : बे उपवास माटे अब्भत्तट्ठं ने बदले छट्ठभत्तं, त्रण माटे अट्ठमभत्तं, आ रीते पाठ बोलवो... एक थी वधु उपवासनुं पच्चक्खाण साथे लेनारे बीजा दिवसथीं '**पाणहार**' नुं पच्चक्खाण लेवुं '**पाणहार**' नु पच्चक्खाण लेवा '**पाणहार पोरिसि**' थीं '**वोसिरई**' सुधीनो पाठ बोलवो.)

नाना पण पच्चक्खाण वगरनो मानवी शुं पशु समान न कही शकाय ?

सूरे-उग्गए, अब्भत्तट्ठं, पच्चक्खाईं, (पच्चक्खामि) तिविहंपि आहारं, असणं, खाईमं, साईमं, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, पारिट्ठावणियागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं, पाणहार पोरिसि, साड्ढपोरिसि, सूरे उग्गए पुरिमड्ढ, अवड्ढ मुट्ठिसहिअं पच्चक्खाईं (पच्चक्खामि), अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, पच्छन्नकालेणं, दिसामोहेणं, साहुवयणेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं, पाणस्स लेवेणवा, अलेवेणवा, अच्छेणवा, बहुलेवेणवा, ससित्थेणवा, असित्थेण वा, वोसिरई (वोसिरामि).

देशावगासिक (चौद नियमनी धारणा करनार माटे)

देशावगासियं, उवभोगं, परिभोगं, पच्चक्खाईं (पच्चक्खामि) अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं, वोसिरई (वोसिरामि).

सांजना पच्चक्खाणो

पाणहार

पाणहार दिवसचरिमं पच्चक्खाईं (पच्चक्खामि) अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं, वोसिरई (वोसिरामि).

चउविहार/तिविहार

दिवसचरिमं पच्चक्खाईं (पच्चक्खामि) चउव्विहंपि आहारं, तिविहंपि आहारं, असणं, पाणं, खाईमं, साईमं, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरई (वोसिरामि).

पशु पंखी न बोली शकवाना कारणे दुःख वेठे छे, अने घणां मानवी बोलवाना कारणे.

卐 पच्चक्खाणनो समय 卐
आ समय मुंबईना स्टा. टाईम प्रमाणे छे.

मास	सुर्योदय क.मि.	सूर्यास्त क.मि.	नवकारशी क.मि.	पोरसी क.मि.	साढपोरसी क.मि.	पुरिमड्ढ क.मि.	अवड्ढ क.मि.
जान्यु. १	७.१३	६.११	८.०१	९.५७	११.२०	१२.४२	३.२६
१६	७.१६	६.२०	८.०४	१०.०२	११.२५	१२.४८	३.३४
फेब्रु. १	७.१५	६.३०	८.०३	१०.०३	११.२८	१२.५२	३.४१
१६	७.०८	६.३८	७.५६	१०.००	११.२६	१२.५३	३.४५
मार्च १	७.००	६.४३	७.४८	९.५६	११.२४	१२.५१	३.४७
१६	६.४८	६.४७	७.३६	९.४८	११.१८	१२.४८	३.४७
एप्रिल १	६.३५	६.५१	७.२३	९.३९	११.११	१२.४३	३.४६
१६	६.२३	६.५४	७.११	९.३१	११.०५	१२.३९	३.४७
मे १	६.१३	६.५९	७.०१	९.२४	११.००	१२.३६	३.४७
१६	६.०६	७.०४	६.५४	९.२०	१०.५८	१२.३५	३.४९
जून १	६.०३	७.१०	६.५१	९.१८	१०.५८	१३.३९	३.५७
१६	६.१३	७.१५	६.५१	९.२१	११.००	१२.४५	३.५९
जूलाई १	६.०६	७.१८	६.५४	९.२४	११.०३	१२.४२	४.००
१६	६.२१	७.०५	७.०९	९.३२	११.०८	१२.४३	३.५४
ओग. १	६.१७	७.१३	७.०५	९.३१	११.०८	१२.४५	३.५९
१६	६.२१	७.०५	७.०९	९.३२	११.०८	१२.४३	३.५४
सप्टे. १	६.२५	६.५३	७.१३	९.३२	११.०५	१२.३९	३.४६
१६	६.२७	६.४०	७.१५	९.३०	११.०२	१२.३४	३.३७
ओक्टो १	६.३०	६.२७	७.१८	९.२९	१०.५९	१२.२९	३.२८
१६	६.३४	६.१५	७.२२	९.२९	१०.५७	१२.२४	३.२०
नवे १	६.४०	६.०५	७.२८	९.३१	१०.५७	१२.२२	३.१३
१६	६.४७	५.५९	७.३५	९.३५	१०.५९	१२.२३	३.११
डीसे. १	६.५७	५.५९	७.४५	९.४२	१०.०५	१२.२८	३.१३
१६	७.०६	६.०२	७.५४	९.५०	११.१२	१२.३४	३.१७

बीजा गामोमां जे स्टान्डर्ड टाईम थतो होय ते प्रमाणे पच्चक्खाण करवुं ।

भौतिक पदार्थोनी प्रीत आ भवमां रोवडाववे, परभवमां रखडावे.

卐 पच्चक्खाणनो समय 卐
आ समय अमदावादना स्टा. टाईम प्रमाणे छे.

मास	सुर्योदय क.मि.	सूर्यास्त क.मि.	नवकारशी क.मि.	पोरसी क.मि.	साढपोरसी क.मि.	पुरिमड्ढ क.मि.	अवड्ढ क.मि.
जान्यु. १	७.२२	६.०५	८.१०	१०.०३	११.२४	१२.४४	३.२५
१६	७.२५	६.१५	८.१३	१०.०८	११.२९	१२.५०	३.३३
फेब्रु. १	७.२१	६.२७	८.०९	१०.०८	११.३१	१२.५४	३.४१
१६	७.१३	६.३६	८.०१	१०.०४	११.३०	१२.५४	३.४६
मार्च १	७.०४	६.४२	७.५२	९.५९	११.२६	१२.५३	३.४८
१६	६.५०	६.४८	७.३८	९.५०	११.२०	१२.४९	३.४९
एप्रिल १	६.३२	६.५४	७.२२	९.३९	११.१२	१२.४४	३.४९
१६	६.२०	७.००	७.०८	९.३०	११.०५	१२.४०	३.५०
मे १	६.०८	७.०६	६.५६	९.२३	११.००	१२.३७	३.५२
१६	६.००	७.१३	६.४८	९.१९	१०.५८	१२.३७	३.५५
जून १	५.५५	७.२०	६.४३	९.१७	१०.५८	१२.३८	३.५९
१६	५.५४	७.२६	६.४२	९.१७	१०.५९	१२.४०	४.०३
जूलाई १	५.५८	७.२९	६.४६	९.२१	११.०३	१२.४४	४.०७
१६	६.०४	७.२८	६.५२	९.२५	११.०६	१२.४६	४.०७
ओग. १	६.११	७.२१	६.५९	९.२९	११.०८	१२.१६	४.०४
१६	६.१७	७.११	७.०५	९.३१	११.०८	१२.४४	३.५८
सप्टे. १	६.२३	६.५७	७.११	९.३२	११.०६	१२.४०	३.४९
१६	६.२७	६.४२	७.१५	९.३१	११.०३	१२.३५	३.३९
ओक्टो १	६.३३	६.२७	७.२१	९.३२	११.०१	१२.३०	३.२९
१६	६.३८	६.१३	७.२६	९.३२	१०.५९	१२.२६	३.२०
नवे १	६.४६	६.०१	७.३४	९.३५	११.००	१२.२४	३.१३
१६	६.५५	५.५४	७.४३	९.४०	११.०३	१२.२५	३.१०
डीसे. १	७.०५	५.५२	७.५३	९.४७	११.०८	१२.२९	३.११
१६	७.१५	५.५६	८.०३	९.५६	११.१६	१२.३६	३.१६

बीजा गामोमां जे स्टान्डर्ड टाईम थतो होय ते प्रमाणे पच्चक्खाण करवुं ।

संसार उपरथी मन उठी जाय एनुं मोक्ष माटे बुकींग थाय.

करवा जेवुं चिंतन.....
(दिवसमां एक वार..... पछी वारंवार)

हे परमात्मा...!

हुं हिंसक छुं .... मने अहिंसक बनावो.
हुं जुठ्ठो छुं.................. मने सत्यनिष्ठ बनावो.
हुं कृपण छुं .... मने उदार बनावो.
हुं कामी छुं................. मने ब्रह्मचारी बनावो.
हुं क्रोधी छुं .... मने क्षमाशील बनावो.
हुं मानी छुं................. मने विनयी बनावो.
हुं लोभी छुं................. मने संतोषी बनावो.
हुं रागी छुं .... मने वीतरागी बनावो.
हुं प्रमादी छुं................ मने अप्रमत्त बनावो.
हुं निष्ठुर छुं................ मने दयाळु बनावो.
हुं भोगी छुं .... मने त्यागी बनावो.
हुं संसारी छुं .... मने सिद्ध बनावो.
हुं मायावी छुं .... मने सरळ बनावो.
हुं परनिदंक छुं............. मने स्वनिंदक बनावो.
हुं कर्मथी युक्त छुं......... मने कर्मथी मुक्त बनावो.

अधिक नहि पण, अनियमित / अव्यवस्थित काम मानवीने निराश करी दे छे.

ગદ્ય પ્રાર્થના

व्हाला साथे व्हाली वातो.....

हे त्रण भुवनना नाथ ! हे मारा जीवनना आधार !

हे करुणारसना भंडार !

मारी उपर करुणा वरसावो, हुं दीन छुं, हीन छुं, कंगाल छुं, चार गतिमां रखडतो अने रझळतो प्रचंड पुण्यनां उदयथी आ मनुष्यनो अवतार हुं पाम्यो छुं. मनुष्यभवमां पण परमतारक एवुं तारुं शासन अमने मळवाथी हुं धन्यातिधन्य बनी गयो छुं.

वीतराग अने सर्वज्ञ एवा '**देव**' *मने मळ्या !*

कंचन अने कामिनीना त्यागी एवा '**गुरु**' *मने मळ्या !*

वीतरागदेवे *फरमावेलो तरणतारणहार* '**धर्म**' *मने मळ्यो ! मारा भाग्यनी हवे कोई अवधि नथी, मारा जेवो बडभागी आ जगतमां बीजो कोई नथी.*

हे देवाधिदेव ! *आ जगतमां बीजुं कोई मारे शरण नथी, आप ज मारा शरण छो.*

हुं दुःखोथी घेरायेलो छुं, हुं पापोथी घेरायेलो छुं.

ईच्छा जेवुं कोई दुःख नथी अने संतोष जेवुं कोई सुख नथी.

हुं दोषोथी घेरायेलो छुं,
आप वीतरागी छो, हुं क्रोधने आधीन छुं,
आप अनंत ज्ञानना धणी छो,
हुं अज्ञानना अंधारामां अथडाउं छुं,
आप वीतरागी छो, हुं विषयरसमां आसक्त छुं,
आप सुखनी टोचे बेठेला छो, हुं संसारना कूवामां पडेलो छुं,
आपना मार्गथी हुं लाखो योजन दूर छुं,

हे देवाधिदेव,

आपनी '**कृपानो**' *वरसाद वरसावी मारा आ बधा मेलने आप धोई नांखो,*

आपना '**प्रभावनी**' *चिनगारी फेंकीने मारा आ बधा कचराने आप बाळी नांखो,*

हे प्रभु ! *मने पूर्ण श्रद्धा छे के आपना चरणनुं शरण ज मने उगारशे माटे,*

मारी एक ज प्रार्थना छे के...

भवोभव मने आपनुं शरण मळो.

भवोभव तुम चरणोनी सेवा... हुं तो मांगु छुं देवाधिदेवा.

रोग घटाडे ते दवा अने दोष घटाडे ते धर्म.

जिन दर्शन-पूजन विधि अभीयान

संघना अग्रणी-कार्यकरो तथा आराधको जोग.....

वर्षोथी देरासरमां आराधना करवा आवता भाग्यशाळीओने ''जिन दर्शन पूजन विधि'' तथा ''देरासरमां ध्यान राखवा लायक सूचनो''नो संपूर्ण ख्याल तथा जाणकारी न होवाथी घणी बधी अविधि-अशातना जोवा मळे छे.

ते अविधि-अशातना दूर करवा माटे आ पुस्तकमां आपेल ''जिन दर्शन पूजन विधि'' (पानु नं.५) तथा ''देरासर संबंधी सुचनो'' (पानु नं.११)

संघना Black-Board पर क्रमसर थोडा-थोडा लखवा माटे संघना अग्रणी-कार्यकरो/आराधकोने नम्रभर्युं सुचन छे. श्रद्धा छे के आपनुं आ कार्य आपनी आ महेनत संघना आराधकोने अवश्य उपयोगी थशे..... ज !

धन्यवाद्

(मुखपृष्ठ नं.2 थी आगळ.....) पुस्तकमां आपेल

(1) जिन दर्शन पूजन विधि (पाना नं.५)

(2) जिनालयनी सूचनाओ (पाना नं.११) अने

(३) परमात्मानी पूजा करतां समये भाववा जेवी भावना वि. (पाना नं.४४)

एकचित्ते शांतिथी वांची... विचारी... समजीने... गईकाल सुधी क्रिया करवामां... क्यां क्यां अविधि अने भुलो थती हती माराथी ? तेनुं आत्मनिरीक्षण करी... अविधि... भुलोने सुधारवानो प्रयत्न करशुं तो, परमात्मानी आज्ञा अने बहुमानपूर्वकनी दरेक विधि आपणां मनने प्रसन्नता... स्वस्थता के स्थिरतां आपवामां उपयोगी बनशे ज, आ वातमां शंकाने स्थान नथी...!

आ पुस्तकनी प्रभावना आप क्यां क्यां करी शकशो ?

श्री संघ... मंडळ तथा व्यक्ति द्वारा...

1. *उपधान तप... वर्षीतप... नवपदजीनी ओळी... पर्युषण पर्वनी विविध तपश्चर्या तथा सांजी निमित्ते...*
2. *छ'रिपालीत संघ... नव्वाणुयात्रा...यात्रा प्रवास... तथा चतुर्मासनी आराधना निमित्ते...*
3. *संघना दरेक घरोमां... सामायिक मंडळमां... शिबीरमां... तथा पाठशाळानां बाळकोने प्रभावना करवा निमित्ते...*
4. *स्नेही...स्वजननी पुण्यतिथी...निमित्ते...*

卐 卐 卐

॥ श्री सिद्धगिरिमंडण श्री आदिनाथाय नमः ॥

चालो चैत्यवंदन करीए

चैत्यवंदन, स्तवन अने स्तुत्यादिनो
भक्तिसभर संग्रह

: प्रकाशक :
जयन्तीभाई गांधी (U.S.A)

: निमित्त :
प्रेमलत्ताबेन, टीनाकुमारी, ममताकुमारीए करेल
विविध तपश्चर्या निमित्ते

सं. २०६० वैशाख सुद-३ (अक्षयतृतीया)
ता. २२-४-२००४, गुरुवार

रातनां सूतां आटलुं बोलो

सोनानुं कोडीयुं, रूपानी वाट
आदीश्वरनुं नाम लेता, सुखे जाय रात

नवकार, नवकार तुं मारो भाई
तारे मारे घणी सगाई
अंत समये याद आवशोजी
मारी भावना शुद्ध राखशोजी.

काने मारा-कुंथुनाथ, आंखे मारा-अरनाथ
नाके मारा-नेमनाथ, मुखे मारा-मल्लिनाथ
सहाय करे शांतिनाथ, परचो पुरे पार्श्वनाथ

ज्ञान मारा ओशीके, शीयण मारा संथारे
भरनिद्रामां काळ करूं तो, वोसिरे वोसिरे वोसिरे.

Printed At : BHARAT GRAPHICS
New Market, Panjarapole, Relief Road,
Ahmedabad-1(India). Ph. : 22134176, 22124723

प्रा...सं...गि...क

अनंत उपकारी परमात्मा श्री ऋषभदेव प्रभुए दीक्षा लीधा पछी शुद्ध आहार न मळवाना कारणे सतत 13 महीनाथी पण अधिक दिवसोना उपवास कर्या. आत्मामां बंधायेलां कर्मो तोडवामां ''तपश्चर्या'' ए अमोघ साधन छे. पूज्य वीरविजयजी म. साहेबे नवपदनी पूजामां कह्युं छे के ''ते तप कर्म निकाचित तपवे, क्षमा सहित जे मुनि राया रे''

वर्तमानकाळमां जैन समाजमां अनेक प्रकारना तप थाय छे तेमां ऋषभदेव प्रभुए करेला वर्षीतपने अनुसारे घणा भाई बहेनो वर्षीतप करे छे. फक्त तेओए सतत उपवास कर्यो अने अत्यारे तेवा प्रकारनुं शारीरिक अने मानसिक बळ न होवाथी वच्चे वच्चे बेसणुं करीने वर्षीतप कराय छे. तेर महीना सुधी आवी उग्र तपश्चर्या करवी ए एक महान, कठीन अने दुष्कर कार्य छे.

अमेरिका जेवो देश के ज्यां साधु संतोनो योग नथी, केवल भोगभूमि ज छे. स्वच्छंदता घणी छे. आर्यसंस्कृतिनो अभाव छे तेथी ज संयुक्त कुटुंब प्रथा नथी छतां आवा देशमां आजीविका माटे वसता धर्मप्रिय भाई बहेनो अनेक प्रकारनी धर्म आराधना करे छे.

अमेरिकाना एरीझोना राज्यमां ''फीनीक्ष'' गाममां रहेतुं ''श्री जयंतीभाई गांधी''नुं एक कुटुंब बहु ज धर्मप्रिय अने संस्कारना रंगोथी रंगाएलुं छे. तेमना धर्मपत्नी ''श्री प्रेमलताबेन गांधी'' ए आ वर्षे ''वर्षीतप''नी धर्माराधना करेल छे. तथा राजस्थानमां रहेतां तेमनी बहेन ''श्री टीनाकुमारी गांधी''ए पण वर्षीतप करेल छे. ते बन्ने बहेनोनां पारणां वैशाख सुद-३ ता २२-एप्रील-२००४ हस्तिनापुरमां थशे. आ प्रसंगे सर्वे आत्माओ धर्ममार्गमां वधारे जोडाय एवा पवित्र आशयथी परमात्मानी भक्ति-भावना रुप स्तवन- स्तुति आदिनी आ एक नानी पुस्तिका प्रकाशित करीने वर्षीतपना मंगलमय पारणा प्रसंगे भेट आपवामां आवे छे.

पुस्तक भेट करनार परिवारनो परिचय

१. श्री जयंतीलाल गांधी, सुपुत्र केसरीमलजी एवं तुलसीबेन गांधी जन्मस्थान-तलवाडा(बांसवाडा) राजस्थान.

२. प्रेमलताबेन गांधी, सुपुत्री धनराजजी एवं लक्ष्मीदेवी शेठ । जन्मस्थान बोडीगामा बडा (डुंगरपूर) राजस्थान.

३. प्रयासकुमार गांधी सुपुत्र जयंतीलाल गांधी एवं प्रेमलताबेन गांधी जेनो जन्म अमेरिकामां फीनीक्ष (एरीझोनामां) थयेल छे.

प्रेमलता बहेने छेल्लां दश वर्षोथी पोताना जीवनने धर्मनी आराधनामय बनाव्युं छे. विशेष तपश्चर्या पण सारी करी छे.

१. सने १९९४मां अठ्ठाई, १९९६मां सोलभत्तुं

२. सने १९९८मां ४५ उपवास, (पूज्य आचार्यदेव श्री अशोकसागरसूरिजी म. साहेबनी निश्रामां, पालीताणामां

३. सने २०००मां मासक्षमण.

४. सने २००३-२००४मां वर्षीतप

तेमनी बहेन टीनाकुमारी ए मासक्षमण तथा वर्षीतप करेल छे. बीजी बहेन ममताकुमारीए पण २०००मां मासक्षमण करेल छे. आ समस्त परिवार दान-शीयळ-तप अने भाव एम चार प्रकारना धर्मना रंगमां खुब ज रंगाएलो छे. शासनदेव तेओने धर्मनां घणां कार्यो करवानी तथा शासननी प्रभावना थाय तेवां मोटां कामो करवानी शक्ति आपे एज प्रार्थना—

७०२, रामसा टावर,
गंगा-जमना एपार्टमेन्ट पासे,
अडाजण पाटीया, सुरत
(ईन्डिया).

लि.
धीरजलाल डी. महेता
Ph. : (0261)2688943

चालो चैत्यवंदन करीए
अ-नु-क्र-म-णि-का

विभाग-१ : आराधना फळ विभाग....(पृष्ठ १-४)

नवकार मंत्र जापनुं फळ-१, जिनालये जवानुं फळ-२, पच्चक्खाणनुं फळ-३, रात्रिभोजनना पापनुं फळ-४

विभाग-२ : विधि तथा सुचना विभाग (पृष्ठ ५-२०)

जिनदर्शन-पूजन विधि-५, जिनालय सबंधी सूचना-११

विभाग-३ : दुहा विभाग.....(पृष्ठ २१-२३)

श्री सिद्धाचलजी तीर्थना दुहा-२१, श्री सीमंधरस्वामीजीना दुहा-२२, त्रण प्रदक्षिणाना दुहा-२३

विभाग-४ : स्तुति विभाग.....(पृष्ठ २४-३०)

भाववाही सुंदर स्तुतिओ-२४, अरिहंत वंदनावलीनी स्तुतिओ-२८, रत्नाकर पच्चीसीनी स्तुतिओ-२९, प्रभु पासे हृदयनी एक व्यथा (दया सिन्धु)-३०

विभाग - ५ : पूजाना दुहा विभाग..... (पृष्ठ ३१-४६)

पूजात्रि-३१, अष्टप्रकारी पुजाना दुहा फोटा साथे-३२, नवांगी पुजा दुहा चिंतन साथे-४३, पूजा करता समये भाववानी भावना-४४

विभाग - ६ : चैत्यवंदन विधि विभाग (पृष्ठ ४९-६०)

मुद्रा त्रिक फोटा साथे-४७, चैत्यवंदननां सूत्रो भावार्थ साथे-४९

विभाग - ७ : चैत्यवंदन विभाग (पृष्ठ ६१-८३)

विभाग - ८ : स्तवन विभाग (पृष्ठ ८४-१५०)

श्री शत्रुंजय तीर्थना स्तवनो (८४-९५), श्री ऋषभदेव भगवानना स्तवनो (९५-१२२), श्री पार्श्वनाथ भगवानना स्तवनो (१२३-१३१), श्री महावीर स्वामी भगवानना स्तवनो (१३२-१३६), श्री सीमंधर स्वामीना स्तवनो (१३७-१४१), श्री सामान्य जिन स्तवनो (१४२-१५०)

विभाग - ९ थोय (स्तुति) विभाग (पृष्ठ १५१-१६८)

विभाग - १० : छंद विभाग..... (पृष्ठ १६९-१७०)

पास शंखेश्वरा सार (श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ स्वामी)-१६९, वीर जीनेश्वर केरो शिष्य (श्री गौतम स्वामीजी)-१७०

विभाग-११ : भक्तिगीत विभाग...(पृष्ठ १७१-१७४)

देव मारा आजथी तारो-१७१, आव्यो दादाने दरबार-१७१, आ भव मळीयाने-१७२, मांगी मांगी मांगु छुं बस एटलुं रे-१७३, हे शंखेश्वर स्वामी-१७४

विभाग-१२ : पच्चक्खाण विभाग (पृष्ठ १७५-१८२)

ऽ ऽ ऽ

देव गुरु पछी आपणां पर उपकार कोनो

- हयात माता-पितानी छत्र-छायामां बेसी पेटभरी प्रेमथी तेमने नीरखी लेजो.
- साचा हृदयथी एक क्षण माटे पण तेमने भेटी लेजो.
- काळनी कारमी थपाट लाग्या पछी पस्ताशो....
- आंसु सारी संभारशो तो पण ए वात्सल्यनो प्रेमाण हाथ तमारा मस्तक पर नही फरे.
- अमृतना अखूट खजाना समा माता-पितानी शीतल छायामां वरसो सुधी रहेवानुं सद्भाग्य भाग्यशाळी संतानोना नसीबमां ज होय छे.
- आवा 'तीर्थ' स्वरूप माता-पिताने नित्य वंदन करी तेमना अंतरना आशीर्वादथी पावन थईए.

गळ्युं गळ्युं खाता शीखेलो आजनो मानवी....
जो गळ्युं बोलता अने को'कना कहेलां कडवा वचन गळी जतां शीखी जाय तो तेनुं जीवन सुंदर नंदनवन जेवुं बनी जाय

// मंगल प्रार्थना //

अरिहा शरणं, सिद्धा शरणं, साहु शरणं वरीए,
धम्मो शरणं पामी विनये, जिन आज्ञा शिर धरीए.

अरिहा शरणं मुजने होजो, आतम शुद्धि करवा,
सिद्धा शरणं मुजने होजो, राग-द्वेषने हणवा;

साहू शरणं मुजने होजो, संयमे शुरा बनवा,
धम्मो शरणं मुजने होजो, भवोदधिथी तरवा.

मंगलमय चारेनुं शरणुं, सघणी आपदा टाळे,
चिद्घन केरी डूबती नैया, शाश्वत नगरे वाळे.

भवोभवना पापोने मारा, अंतरथी हुं नींदुं छुं;
सर्व जीवोना सुकृतोने, अंतरथी अनुमोदुं छुं.

जगमां जे जे दुर्जन जन छे, ते सघणा सज्जन थाओ,
सज्जन जनने मनसुखदायी, शांतिनो अनुभव थाओ;

शांत जीवो आधि-व्याधिने, उपाधिथी मुक्त बनो,
मुक्त बनेला पुरूषोत्तम आ, सकल विश्वने मुक्त करो.

k ......अरिहा शरणं

१

२

३

४